KHULAFA E RASHIDIN (HINDI)

जामिअ़तुल मदीना के निसाब में शामिल

सीरते ख़ुलफ़ाए राशिदीन पर मुश्तमिल मुख़्तसर किताब

ख़ुलफ़ाए राशिदीन

तस्नीफ़े लतीफ़ :-

फ़क़ीहे मिल्लत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती

जलालुद्दीन अहमद अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئُ	॒ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

जामिआ़तुल मदीना के निसाब में शामिल सीरते ख़ुलफ़ाए राशिदीन पर मुश्तमिल मुख़्तसर किताब

ख़ुलफ़ाए राशिदीन

1 :-: ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

2 :-: ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

3 :-: ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

4 :-: ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

तस्नीफ़े लत़ीफ़ :-

फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती

जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

पेशकश :-

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) शो'बए दर्सी कुतुब

ٱلصَّلٰوةُ وَٱلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ ٱللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ ٱللّٰه

नाम किताब : खुलफ़ाए राशिदीन

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए दर्सी कुतुब)

सिने तृबाअत : जुल क़ा'दतिल ह़राम, 1440 हि. / जूलाई 2019 ई.

ता'दाद : 2100 (पहली बार)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दा'वते इस्लामी (हिन्द)

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें :-

- ...... अजमेर : **मक्तबतुल मदीना,** 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- ...... बरेली : **मक्तबतुल मदीना,** दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- ...... गुलबर्गा : **मक्तबतुल मदीना,** फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- ...... बनारस : **मक्तबतुल मदीना,** अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- ...... कानपुर : **मक्तबतुल मदीना,** मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- ...... कलकत्ता : **मक्तबतुल मदीना,** 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- ...... नागपुर : **मक्तबतुल मदीना,** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- ...... सुरत : **मक्तबतुल मदीना,** वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- ...... इन्दोर : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नम्बर 13, बोम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- ...... बेंग्लोर : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नं. 13, जामिआ ह़ज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783
- ...... हुबली : **मक्तबतुल मदीना,** ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" के 19 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "19 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ
या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। (8) किताब को पढ़ कर कलामुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और कलामे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सह़ीह़ मा'नों में समझ कर अवामिर का इम्तिसाल और नवाही से इजतिनाब करूंगा (9) दरजे में इस किताब पर उस्ताद की बयान कर्दा तौज़ीह़ तवज्जोह से सुनूंगा (10) उस्ताद की तौज़ीह़ को लिख कर "اِسْتَعِنْ بِیَمِیْنِکَ عَلٰی حِفْظِکَ" पर अ़मल करूंगा (11) त़लबा के साथ मिल कर इस किताब के अस्बाक़ की तकरार

करूंगा (12) अगर किसी त़ालिबे इल्म ने कोई ना मुनासिब सुवाल किया तो उस पर हंस कर उस की दिल आज़ारी का सबब नहीं बनूंगा (13) दरजे में किताब, उस्ताद और दर्स की ता'ज़ीम की ख़ात़िर ग़ुस्ल कर के, साफ़ मदनी लिबास में, ख़ुश्बू लगा कर ह़ाज़िरी दूंगा (14) अगर किसी त़ालिबे इल्म को इ़बारत या मस्अला समझने में दुश्वारी हुई तो ह़त्तल इम्कान समझाने की कोशिश करूंगा (15) सबक़ समझ में आ जाने की सूरत में ह़म्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाऊंगा (16) और समझ में न आने की सूरत में दुआ़ करूंगा और बार बार समझने की कोशिश करूंगा (17) सबक़ समझ में न आने की सूरत में उस्ताद पर बद गुमानी के बजाए इसे अपना क़ुसूर तसव्वुर करूंगा (18) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता) (19) किताब की ता'ज़ीम करते हुए इस पर कोई चीज़ क़लम वग़ैरा नहीं रखूंगा। इस पर टेक नहीं लगाऊंगा।

फ़ेहरिस्त

......हलाकत में डालने वाले आ'माल.....

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

"हलाकत में डालने वाले सात गुनाहों से बचते रहो, वोह येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा जान को नाह़क़ क़त्ल करना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद खाना (6) जिहाद के दिन मैदान से फ़रार होना और (7) सीधी सादी, पाक दामन, मोमिन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाना।"

(صحیح البخاری،الحدیث:۲۷۶۶،ص۲۲۲)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह्याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह्क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है।

इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब[1]

---

1 .....ता दमे तहरीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने हदीस (9) फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सहाबियात व सालिहात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत مُدَّ ظِلُّہٗ (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**)

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पेश लफ़्ज़

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ...﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** का बड़ा एह़सान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है **और उन्हें पाक करता है।**

(سورۂ اٰل عمران، الاية ۱٦۴، پ ۴)

अल्लाह तआ़ला ने इस आयते मुबारका में ख़बर दी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुलूब को पाक करने वाले हैं तो मानना पड़ेगा कि **आप** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने सह़ाबए किराम का कामिल तज़कियए नफ़्स फ़रमाया लिहाज़ा वोह नेकूकार, सालेह़, बुलन्द अख़्लाक़ और औसाफ़े ह़मीदा वाले हैं। उन की निय्यतें सह़ीह़ और उन का अ़मल हमारे लिये मश्अ़ले राह है।**

येही वज्ह है कि रब तआ़ला ने ईमान का मे'यार सह़ाबए किराम को ठहराया है। चुनान्चे,

इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर वोह भी यूंही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह निरी ज़िद में हैं। (سورۃ البقرۃ، الاية ۱۳۷)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मज़्कूरा आयत के तहत "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" में फ़रमाते हैं "**इस से मा'लूम हुवा कि मोमिन वोह है जिस का ईमान सहाबए किराम की तरह हो, जो उन के ख़िलाफ़ हो काफ़िर है, वोह हज़रात ईमान की कसोटी हैं ।**" (نورالعرفان، البقرة، الآية ۱۳۷)

नीज़ तज़्कियए नुफ़ूस फ़रमाने वाले और सहाबए किराम को अख़्लाक़ की बुलन्दियों पर पहुंचाने वाले आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ، فَبِاَيِّهِمُ اقْتَدَيْتُمُ اهْتَدَيْتُمْ**"

या'नी मेरे सहाबा सितारों की मानिन्द हैं, इन में से जिस किसी की तुम पैरवी करोगे, हिदायत पा जाओगे ।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب المناقب، الفصل الثالث، الحدیث: ۶۰۱۸، ۳/۳۳۵)

यूं तो तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ही हिदायत के दरख़्शन्दा सितारे हैं लेकिन **ख़ुलफ़ाए राशिदीन** इस मुआमले में तमाम से मुमताज़ व यगाना हैं, चुनान्चे, हदीसे पाक में भी इन्हें "**ख़ुलफ़ाए राशिदीन**" फ़रमाया गया या'नी "हिदायत याफ़्ता ख़ुलफ़ा" नीज़ हमें इन की इत्तिबाअ़ की ख़ुसूसी ताकीद की गई, चुनान्चे,

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है

"**عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِیْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْن**"

या'नी मेरी और ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को इख़्तियार करो ।

(مؤطا امام مالک، ابواب الحدود فی الزنا، باب الحد فی الشرب، تحت الحدیث: ۷۰۹، ۳/۱۰۸)

जो क़ौमें अस्लाफ़ की सीरत को अपने लिये मश्अ़ले राह नहीं बनाती, वोह ज़िल्लत व पस्ती के अ़मीक़ गढ़े में गिर जाती हैं, बयाबानों की तारीक राहें उन का मुक़द्दर बन जाती हैं, शाहराए दस्तूर के बजाए गुमराहियों की अन्धेर वादियों में भटकती फिरती हैं।

आज मुसलमान क़ौम ने सहाबए किराम और बिल ख़ुसूस ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सीरत को पसे पुश्त डाल दिया, शायद येही वज्ह है कि वोह इन्तिहाई तेज़ी के साथ बे अ़मली के सैलाब में बहती चली जा रही है।

इस्लाहे़ उम्मत के लिये कुढ़ने वाले उ़लमाए रब्बानिय्यीन "सहाबए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम" की सीरत पर किताबें लिखते आए हैं ताकि उम्मत का रिश्ता अस्लाफ़ से जोड़ कर उसे बे अ़मली, ज़िल्लत व रुस्वाई की अन्धेर वादियों से निकाला जा सके।

इन्हीं में फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى भी हैं जिन्हों ने मुस्तनद रिवायात पर मुश्तमिल किताब "ख़ुलफ़ाए राशिदीन" लिख कर उम्मत पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" की "**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के "**शो'बए दर्सी कुतुब**" ने किताब "**ख़ुलफ़ाए राशिदीन**" पर बेहतर अन्दाज़ में काम करने की सई की है जिस की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

इस किताब में हमारे काम का उस्लूब

(1)......इस से पहले मुख़्तलिफ़ इदारों से छपने वाली "ख़ुलफ़ाए राशिदीन" में किताबत और प्रूफ़ रीडिंग की अग़्लात़ थी, हम ने अव्वल ता आख़िर कई बार इस का मुत़ालआ़ कर के ह़त्तल वस्अ़ अग़्लात़ को दूर कर दिया है,

(2)......अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े औक़ाफ़) का भी ह़त्तल मक़्दूर ख़याल रखा गया है।

(3)......क़ुरआनी आयात की राइजुल वक़्त ख़ूब सूरत रस्मुल ख़त़ में पेस्टिंग की तरकीब की गई है।

(4)......आयाते मुबारका के ह़वाले का भी एहतिमाम किया गया है नीज़ अह़ादीसे मुबारका और ह़िकायात वग़ैरा की तख़रीज भी की गई है।

(5)......मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة के ज़िक्र कर्दा ह़वाला जात से इम्तियाज़ के लिये अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से की गई तख़रीज को नीचे ह़ाशिये में डाला गया है।

(6)......क़ारिईन के ज़ौक़ को मज़ीद बढ़ाने के लिये मौक़अ़ मुनासबत के पेशे नज़र मेन हेडिंग, सब हेडिंग और अश्आ़र का इज़ाफ़ा किया गया है नीज़ शहनशाहे सुख़न उस्ताज़े ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की "**ज़ौक़े ना'त**" से मनाक़िबे ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मुन्तख़ब अश्आ़र को भी शामिल किया गया है।

(7)......येह किताब चूंकि तन्ज़ीमुल मदारिस के निसाब में शामिल है लिहाज़ा त़ालिबात की आसानी के पेशे नज़र अबवाब के आख़िर में "मश्क़" का इज़ाफ़ा किया गया है।

(8)......अह़ादीस और अ़रबी इबारात को अ़लाह़दा फ़ोन्ट के साथ नुमायां किया गया है।

(9)......तरद्दी, तस्लिया और तरह़्ह़ुम का ख़ास एहतिमाम किया गया है।

(10)......जिस मक़ाम पर ज़रूरत मह़सूस की गई वहां ह़ाशिये में वज़ाह़त पेश की गई है।

(11)......फ़ोरमेटिंग के एहतिमाम के साथ साथ अहम इबारात को बोल्ड भी किया गया है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वोह बानिये दा'वते इस्लामी **ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه व तमाम उ़लमाए अह्ले सुन्नत دَامَتْ فُيُوضُهم का सायए आ़तिफ़त हमारे सरों पर तादेर क़ाइम फ़रमाए और हमें इन के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन पच्चीसवीं, रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

آمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बए दर्सी कुतुब

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अमीरुल मोमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

एक बा कमाल उस्ताद कि जो बहुत सी ख़ूबियों का जामेअ़ होता है अपने जिस शागिर्द में जिस ख़ूबी की मुमताज़ सलाहिय्यत पाता है उसी ख़ूबी में उस को बा कमाल बनाता है जिस में फ़क़ीह बनने की ज़ियादा सलाहिय्यत पाता है उसे फ़क़ीह बनाता है जिस में मुक़र्रिर बनने की सलाहिय्यत वाज़ेह होती है उसे कामयाब मुक़र्रिर बनाता है और जिस में मुसन्निफ़ बनने की सलाहिय्यत ग़ालिब होती है उसे बा कमाल मुसन्निफ़ ही बनाता है।

तो हमारे आक़ा व मौला जनाबे अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने जिस सह़ाबी में जिस ख़ूबी की मुमताज़ सलाहिय्यत पाई उसी वस्फ़े ख़ास में उसे कामिल बनाया लिहाज़ा अपने प्यारे सह़ाबी **हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ में **सिद्दीक़** बनने की सलाहिय्यत को वाज़ेह त़ौर पर मह़सूस फ़रमाया तो इसी वस्फ़ में उन को मुमताज़ व कामिल बनाया और सिद्दीक़ होना ऐसा वस्फ़ है जो बहुत सी ख़ूबियों का जामेअ़ है और इस वस्फ़े ख़ास के सब से ज़ियादा मुस्तह़िक़ सिर्फ़ **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते गिरामी थी इसी लिये वोह इस से सरफ़राज़ फ़रमाए गए।

अस्दक़ुस्सादिक़ीं सय्यिदुल मुत्तक़ीं
चश्मो गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम

आप की ख़िलाफ़त

ख़लीफ़ा कैसे मुक़र्रर हुए

आक़ाए दो आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द येह सुवाल पैदा हुवा कि इन का नाइब और ख़लीफ़ा किस को मुक़र्रर किया जाए....?

ह़दीस शरीफ़ की मश्हूर किताब **सुनने बैहक़ी** में ह़ज़रते **अबू सईद ख़ुदरी** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ख़िलाफ़त के मुआ़मले को ह़ल करने के लिये सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ह़ज़रते **सा'द बिन उ़बादा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मकान में जम्अ़ हुए। जिन में ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़**, ह़ज़रते **उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और दूसरे बहुत से अजिल्ला सह़ाबा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن मौजूद थे।

सब से पहले एक अन्सारी खड़े हुए और उन्हों ने लोगों से इस त़रह़ ख़ित़ाब किया कि **ऐ मुहाजिरीन** ! आप लोगों को मा'लूम है कि जब **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप ह़ज़रात में से किसी शख़्स को कहीं का आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाते थे तो अन्सार में से भी एक शख़्स को उस के साथ कर दिया करते थे लिहाज़ा इसी त़रह़ हम चाहते हैं कि **ख़िलाफ़त** के मुआ़मले में भी एक शख़्स मुहाजिरीन में

से हो और एक अन्सार में से हो फिर एक दूसरे अन्सारी खड़े हुए और उन्हों ने भी इसी क़िस्म की तक़रीर फ़रमाई।

इन लोगों की तक़रीरों के बा'द हज़रते **ज़ैद बिन साबित** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुए और उन्हों ने फ़रमाया : **हज़रात** ! क्या आप लोगों को मा'लूम नहीं है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुहाजिरीन में से थे लिहाज़ा इन का नाइब और ख़लीफ़ा भी मुहाजिरीन ही में से होगा और जिस तरह हम लोग पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुआविन व मददगार रहे अब इसी तरह **ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह** के मददगार रहेंगे।

येह फ़रमाने के बा'द उन्हों ने हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ा और कहा कि अब येह तुम्हारे वाली हैं और फिर हज़रते **ज़ैद बिन साबित** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से **बैअ़त** की इस के बा'द हज़रते **उ़मर फ़ारूक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने और फिर तमाम अन्सार व मुहाजिरीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से **बैअ़त** की।

हज़रते ज़ुबैर का बैअ़त करना

इस के बा'द हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और एक निगाह डाली तो उस मजमअ़ में

हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नहीं पाया, फ़रमाया कि उन को बुलाया जाए।

जब **हज़रते ज़ुबैर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए तो हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया कि आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी के साहिबज़ादे और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ास सहाबियों में से हैं, मुझे उम्मीद है कि आप मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ नहीं पैदा होने देंगे।

येह सुन कर उन्हों ने कहा कि ऐ **ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह** ! आप कोई फ़िक्र न करें ! येह कहने के बा'द खड़े हुए और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से **बैअ़त** कर ली।[1]

हज़रते अ़ली का बैअ़त करना

फिर हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मजमअ़ पर एक नज़र डाली तो उस में **हज़रते अ़ली** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मौजूद न थे फ़रमाया कि **अ़ली** भी नहीं हैं उन को भी बुलाया जाए। जब **हज़रते अ़ली** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ लाए तो आप ने फ़रमाया कि ऐ अबू त़ालिब के साहिबज़ादे ! आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

١ ... (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، مبایعتہ، ص ۵۲)(السنن الکبری، کتاب قتال اہل البغی، باب الائمۃ من قریش، الحدیث: ۱۶۵۳۸، ۸/۲۴۶)

के **चचाज़ाद भाई** और उन के **दामाद** हैं मुझे उम्मीद है कि आप इस्लाम को कमज़ोर होने से बचाने में हमारी मदद करेंगे ।

उन्हों ने भी **हज़रते ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ कहा कि **ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह !** आप कुछ फ़िक्र न करें येह कह कर उन्हों ने भी **बैअ़त** कर ली ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

......'**मदारिजुन्नुबुव्वह**' में है कि **हज़रते अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

"قَدَّمَکَ رَسُوْلُ اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ و آلہ و سلم فَمَنِ الَّذِیْ یُؤَخِّرُکَ"

या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को आगे बढ़ाया तो फिर कौन शख़्स आप को पीछे कर सकता है ।[2]

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस फ़रमान में उस वाक़िए की जानिब इशारा है जो सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी अ़लालत के ज़माने में ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आगे बढ़ाया और आप ही को तमाम सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का **इमाम** बनाया ।

---

۱ ... (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، مبایعته، ص ۵۲)(السنن الکبری، کتاب قتال اہل البغی، باب الائمة من قریش، الحدیث: ۱۶۵۳۸، ۲۴۶/۸)

۲ ... (مدارج النبوة، باب دوم، ۴۲۳/۲، فارسی، برکات رضا)

.......यहां तक कि **इब्ने ज़म्अ़ा** की ह़दीस में है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को हुक्म फ़रमाया कि वोह अबू बक्र के पीछे **नमाज़** पढ़ें मगर इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मौजूद न थे तो **ह़ज़रते उ़मर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ आगे बढ़े ताकि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं लेकिन हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

”لَا لَا لَا یَاْبَی اللّٰہُ وَالْمُسْلِمُوْنَ اِلَّا اَبَا بَکْرٍ یُصَلِّی بِالنَّاسِ اَبُوْبَکْر“

या'नी **नहीं, नहीं, अल्लाह** और मुसलमान अबू बक्र ही से राज़ी हैं, वोही लोगों को **नमाज़** पढ़ाएंगे ।[1] (तारीखुल खुलफ़ा, स. 43)

बहर ह़ाल इस त़रह़ ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुत्तफ़िक़ा तौ़र पर ख़लीफ़ा तस्लीम कर लिया गया और किसी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया और **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ख़फ़ाया व ग़ुयूब जनाब अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सह़ीह़ हुवा कि मेरे बा'द **ख़िलाफ़त** के बारे में ख़ुदाए तआ़ला और मोमिनीन **अबू बक्र** के इ़लावा किसी को क़बूल न करेंगे ।

और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान क्यूं न सह़ीह़ हो कि वोह **अल्लाह** के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं **नदी** का

---

1 . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، مبایعتہ، ص ۴۳)(سنن ابی داؤد، کتاب السنۃ، باب استخلاف، الحدیث: ۴۶۶۰، ۴/۲۸۴)

बहता हुवा धारा रुक सकता है, **दरख़्त** अपनी जगह से खिसक सकता है बल्कि **पहाड़** भी अपनी जगह से टल सकता है मगर **अल्लाह** के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **फ़रमान** नहीं टल सकता।

आप की ख़िलाफ़त पर आयाते क़ुरआनी

पहली आयते मुबारका

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िलाफ़त का इस्तिदलाल उ़लमाए किराम की एक जमाअ़त ने इस आयते करीमा से किया है :

﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَنۡ يَّرۡتَدَّ مِنۡكُمۡ عَنۡ دِيۡنِهٖ فَسَوۡفَ يَاۡتِى اللّٰهُ بِقَوۡمٍ يُّحِبُّهُمۡ وَيُحِبُّوۡنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ يُجَاهِدُوۡنَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوۡنَ لَوۡمَةَ لَاۤئِمٍ ؕ ﴿

या'नी **ऐ ईमान वालो !** तुम में से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो अ़न क़रीब **अल्लाह** तआ़ला ऐसे लोगों को लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे हैं और **अल्लाह** उन का प्यारा है वोह लोग मुसलमानों पर नर्म होंगे और काफ़िरों पर सख़्त

अल्लाह की राह में वोह लोग जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे ।[1] (پ٦،ع١٢)

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस आयते करीमा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि क़ौम से मुराद हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन के **अस्हाब** हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द जब कुछ अ़रब इस्लाम से बरगश्ता हो गए तो हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन के **अस्हाब** ही ने मुर्तदों से जिहाद किया और फिर उन को मुसलमान बनाया ।

......और **हज़रते अबू क़तादा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल फ़रमाने के बा'द जब अ़रब के कुछ लोग मुर्तद हुए और **हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से **क़िताल** फ़रमाया तो उस ज़माने में हम लोग आपस में कहा करते थे कि आयते करीमा

﴿فَسَوْفَ يَأْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ﴾

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन के **अस्हाब** ही की शान में नाज़िल हुई है ।[2]

---

١ . . . (سورة المائدہ، آیت نمبر ۵۴، پ ۶)

٢ . . . (الدرالمنثور فی التفسیر الماثور، المائدة، تحت الآیة ۵۴، ۳/۱۰۲)

दूसरी आयते मुबारका

और पारह 26, रुकूअ़ 10 में है

﴿ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِیْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ
سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ یُسْلِمُوْنَ ۚ ﴾

या'नी उन गंवारों से फ़रमाओ जो कि पीछे रह गए कि अ़न क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली **क़ौम** की त़रफ़ बुलाए जाओगे कि उन से लड़ो या वोह मुसलमान हो जाएं ।[1]

हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद **नईमुद्दीन** साहिब मुरादाबादी علیہ الرحمۃ والرضوان इस आयते करीमा की तफ़्सीर में तह़रीर फ़रमाते हैं कि जिन से **हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़** رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जंग फ़रमाई ।"[2]

और ऐसा ही **त़बरानी** में ज़ोहरी से मरवी है।

.......इसी लिये ह़ज़रते **इब्ने अबी ह़ातिम** और **इब्ने क़ुतैबा** رحمۃ اللہ تعالٰی علیہما फ़रमाते हैं कि येह आयते करीमा ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त पर ह़ुज्जत और वाज़ेह़ दलील है इस लिये कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ही ने मुर्तदों से क़िताल की त़रफ़ दा'वत दी।

---

١ . . . (سورۃ الفتح،آیت ١٦ ،پ ٢٦)

٢ . . . (خزائن العرفان، سورۃ الفتح، الایۃ ١٦ ، پ ٢٦)

......और हज़रते **शैख़ अबुल हसन अश्अ़री** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मैं ने **अबू अ़ब्बास बिन शरह़** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह फ़रमाते हुए सुना है कि हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त क़ुरआने करीम की इस आयत से साबित है इस लिये कि तमाम उ़लमाए किराम का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बा'द जिन लोगों ने कि ज़कात अदा करने से इन्कार कर दिया या'नी इस की फ़र्ज़िय्यत के मुन्किर हो गए थे और जो लोग कि मुर्तद हो गए थे सिर्फ़ **हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को उन से क़िताल की दा'वत दी और उन से जंग की।

लिहाज़ा येह आयते करीमा आप की **ख़िलाफ़त** पर दलालत करती है और आप की इत़ाअ़त को लोगों पर फ़र्ज़ करती है इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने आयते मुबारका के आख़िर में वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ के साथ फ़रमा दिया है कि जो कोई इस को नहीं मानेगा वोह दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला होगा।[1]

क़स्रे पाके ख़िलाफ़त के रुक्ने रकीं शाहे कौसैन के नाइबे अव्वलीं
यारे ग़ार शहनशाहे दुन्या व दीं अस्दक़ुस्सादिक़ीं सय्यिदुल मुत्तक़ीं
चश्मो गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

---

1 ...(الصواعق المحرقة، الباب الاول، الفصل الثالث، ص ١٨)

मश्क़

(1) **सुवाल :** सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कैसे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुए, तफ़्सील से ज़िक्र कीजिये...?

(2) **सुवाल :** हज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तआ़रुफ़ और बैअ़त का ह़ाल बयान कीजिये...?

(3) **सुवाल :** ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ख़िलाफ़त के इस्तिह़्क़ाक़ पर कौन सी रिवायत पेश फ़रमाई...?

(4) **सुवाल :** मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के ह़क़ होने पर कौन सी क़ुरआनी आयात बतौ़रे दलील पेश की हैं...?

....रूह़ानी इलाज....

......هُوَاللّٰهُ الرَّحِيم : जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।

......يَامَلِكُ 90 : बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ग़ुरबत से नजात पा कर मालदार हो। (**हर विर्द के अव्वलो आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये**)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 168 ता 170 मुल्तक़त़न)

आप अफ़्ज़लुल बशर बा'दल अम्बिया हैं

उ़लमाए अहले सुन्नत व जमाअ़त का इस बात पर इजमाअ़ व इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम लोगों में सब से **अफ़्ज़ल** हैं ।

तमाम लोगों से अफ़्ज़ल

ह़दीस शरीफ़ में है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

”مَاطَلَعَتِ الشَّمسُ وَلاغربَتْ عَلٰی اَحَدٍ اَفْضَلَ مِنْ اَبِی بَکْرٍ اِلَّا اَنْ یَّکُوْنَ نَبِیًّا“

या'नी सिवाए **नबी** के और कोई शख़्स ऐसा नहीं कि जिस पर आफ़्ताब तुलूअ़ और गुरूब हुवा हो और वोह ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से **अफ़्ज़ल** हो ।[1]

मत़लब येह है कि दुन्या में नबी के बा'द इन से **अफ़्ज़ल** कोई पैदा नहीं हुवा ।

......और एक **दूसरी ह़दीस** में आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं इरशाद फ़रमाया :

”اَبُوْبَکر الصّدیقُ خَیْرُ النَّاس اِلّا اَنْ یّکُون نَبِیًّا“

---

١ . . . (حلیۃ الاولیاء، ذکر من تابعی المدینۃ الخ، باب عطاء بن ابی رباح، الحدیث: ۴۳۱۵، ۳/۳۷۳)

या'नी "हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में सब से **बेहतर** हैं इलावा इस के कि वोह **नबी** नहीं हैं।"(1)

हज़रते उ़मर के नज़दीक मक़ाम

एक बार **हज़रते उ़मर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और फ़रमाया : हुज़ूरे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ "اَفْضَلُ النَّاس" या'नी लोगों में सब से **अफ़्ज़ल** हैं अगर किसी ने इस के ख़िलाफ़ कहा तो वोह **मुफ़्तरी** और **कज़्ज़ाब** है उस को वोह सज़ा दी जाएगी जो इफ़्तरा परदाज़ों के लिये शरीअ़त ने मुक़र्रर की है।(2)

हज़रते अ़ली के नज़दीक मक़ामे शैख़ैन

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

"خَیْرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ بَعْدَ نَبِیِّهَا اَبُوْبَكْرٍ وَّعُمَرُ"

या'नी इस उम्मत में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से **बेहतर** हज़रते अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं। अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह

---

١ ...(کنزالعمال، کتاب الفضائل، ابوبکر صدیق، الحدیث: ٣٢٥٤٥، ٢/٢٤٨، الجزء ١١)

٢ ...(کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ٣٥٦٢٢، ٦/٢٢٣، الجزء ١٢)(جمع الجوامع، مسند عمر بن خطاب، الحدیث: ١٠٥٨، ١١/٢١٩)

क़ौल उन से तवातुर के साथ मरवी है।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 31)

अफ़्ज़लिय्यत में हज़रते अ़ली का मौक़िफ़

और **बुख़ारी शरीफ़** में है कि हज़रते मुहम्मद बिन हनफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे गिरामी हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द लोगों में कौन सब से **अफ़्ज़ल** है ? "**قال ابوبکر**" फ़रमाया कि हज़रते अबू बक्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) **सब से अफ़्ज़ल** हैं। मैं ने अ़र्ज़ किया कि फिर इन के बा'द....? "**قال عمر**" फ़रमाया कि इन के बा'द हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **सब से अफ़्ज़ल** हैं।

हज़रते मुहम्मद बिन हनफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं :

"**خَشِیْتُ اَنْ یَّقُوْلَ عُثْمَان**"

या'नी मैं डरा कि अब इस के बा'द आप हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम लेंगे तो मैं ने कहा कि इस के बा'द आप सब से **अफ़्ज़ल** हैं।

---

[1] ...(تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی انہ افضل الصحابۃ وخیرھم، ص ۴۵)

"قَالَ مَااَنَااِلَّا رَجُلٌ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ" हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं तो मुसलमानों में से एक आदमी हूं ।[1]

(मिश्कात शरीफ़, स. 555)

या'नी अज़ राहे इन्किसारी फ़रमाया कि मैं एक मा'मूली मुसलमान हूं ।

सहाबए किराम के नज़्दीक मक़ाम

और **बुख़ारी शरीफ़** में है कि हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात में हम लोग ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बराबर किसी को नहीं समझते थे । या'नी वोही सब से **अफ़्ज़ल व बेहतर** क़रार दिये जाते थे फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को और इन के बा'द ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फिर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द हम सहाबए किराम को इन के ह़ाल पर छोड़ देते थे और इन के दरमियान किसी को फ़ज़ीलत नहीं देते थे ।[2]

(मिश्कात शरीफ़, स. 555)

---

١ . . . (مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب ابی بكر رضی الله عنه، الفصل، الاول، الحديث ٦٠٢٤، ٢/٤١٥)

٢ . . . (صحيح البخاری، كتاب فضائل اصحاب النبی صلی الله علیه واٰله وسلم، باب مناقب عثمان، الحديث: ٣٦٩٧، ٢/٥٣٠)

मस्अलए अफ़्ज़लिय्यत में अइम्मा का मौक़िफ़

और हज़रते अबू मन्सूर बग़दादी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इस बात पर उम्मते मुस्लिमा का इजमाअ़ और इत्तिफ़ाक़ है कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द हज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के बा'द हज़रते **उ़मर फ़ारूक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर हज़रते **उ़स्मान** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के बा'द हज़रते **अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और फिर **अ़शरए मुबश्शरा** رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के बाक़ी हज़रात सब से अफ़्ज़ल हैं इन के बा'द बाक़ी **अस्हाबे बद्र** फिर बाक़ी **अस्हाबे उहुद** और इन के बा'द **बैअ़तुर्रिज़्वान** के सहाबा फिर दीगर **अस्हाबे रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम लोगों से **अफ़्ज़ल** हैं ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

अमीरुल मोमिनीं हैं आप, इमामुल मुस्लिमीं हैं आप
नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीक़े अक्बर हैं
सभी अस्हाब से बढ़ कर मुक़र्रब ज़ात है उन की
रफ़ीक़े सरवरे अर्ज़ो समा सिद्दीक़े अक्बर हैं
उ़मर से भी वोह अफ़्ज़ल हैं वोह उ़स्मान से भी आ'ला हैं
यक़ीनन पेश्वाए मुर्तज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی افضل الصحابۃ الخ، ص ۴۴)

﴾ मश्क़ ﴿

(1) **सुवाल :** सिद्दीके़ अक्बर के अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के बा'द **अफ़्ज़लुल बशर** होने पर कौन सी अहादीस दलालत करती हैं....?

(2) **सुवाल :** हज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म व अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के नज़्दीक **मक़ामे सिद्दीके़ अक्बर** क्या है...?

(3) **सुवाल :** सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم अपने दरमियान किस को **अफ़्ज़ल** समझते थे....?

(4) **सुवाल :** मस्अलए अफ़्ज़लिय्यत में हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मौक़िफ़ मअ़ हवाला बयान कीजिये नीज़ अइम्मए किबार رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام का इस के मुतअ़ल्लिक़ क्या नज़रिया है...?

﴾....ता'रीफ़ और सआ़दत....﴿

हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیر البیضاوی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۷۱، ج۴، ص ۳۸۸)

सिद्दीक़े अक्बर और क़ुरआनी आयात

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ में क़ुरआने मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं यहां तक कि बहुत से बुज़ुर्गों ने इस मौज़ूअ़ पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं । हम इन में से चन्द आयाते करीमा आप लोगों के सामने पेश करते हैं ।

(पहली आयत) सब से पहले मुत्तक़ी

ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿ وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَ صَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴾

येह आयते मुबारका चौबीसवें पारे के पहले रुकूअ़ की है । इस आयते करीमा का मत्लब येह है कि जो **सच्चाई** लाया या'नी सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और जिन्हों ने इन की **तस्दीक़** की या'नी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येही लोग मुत्तक़ी हैं । (1)

इस आयते करीमा की तफ़्सीर में हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ऐसे ही मरवी है ।

---

١ . . . (الزمر، آیۃ ٣٣، پ ٢٤)

या'नी ﴿الَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ﴾ से मुराद रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं और ﴿صَدَّقَ﴾ से मुराद हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जिन्हों ने सब से पहले हुज़ूर की **तस्दीक़** की ।(1)

ऐसा ही **तफ़्सीरे मदारिक** में भी है । और इसी को हज़रते **इमाम राज़ी** عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان ने तरजीह़ दी है और **तफ़्सीरे रूहुल बयान** ने भी ।

लिहाज़ा इन **मुफ़स्सिरीने किराम** के बयान से साबित हुवा कि **ख़ुदाए** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयते मुबारका में रह़मते आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी **मुत्तक़ी** फ़रमाया है ।

मा'लूम हुवा कि वोह इस उम्मत के सब से पहले **मुत्तक़ी** हैं और क़ियामत तक पैदा होने वाले सारे मुत्तक़ियों के **सरदार** हैं । इसी लिये आ'ला हज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان फ़रमाते हैं :

अस्दक़ुस्सादिक़ीं सय्यिदुल मुत्तक़ीं

चश्मो गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

1...(تفسیر النسفی، ص۱۰۳۸، الزمر، تحت الایۃ ۳۳، التفسیر الکبیر، الزمر، تحت الایۃ ۳۳، ۹/۴۵۲)

(दूसरी आयत) ग़ार में जां निसारी

और पारह 10, रुकूअ़ 11 में है :

﴿ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِى الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِىَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴾ (۱)

तमाम **मुफ़स्सिरीने किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि येह आयते करीमा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शान में नाज़िल हुई है। अब इस आयते करीमा का मत़लब मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِى الْغَارِ ﴾

या'नी **ऐ मुसलमानो !** अगर तुम लोग मेरे रसूल की मदद न करो तो बेशक **अल्लाह** ने उन की **मदद** फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा सिर्फ़ दो जान से जब

۱...(سورۃالتوبہ، پ۱۰، آیت نمبر ۴۰)

वोह दोनों या'नी हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ार में थे।

﴿اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ﴾

जब रसूल अपने **यारे ग़ार** हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाते थे कि ग़म न कर बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है।

﴿فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلَیْهِ وَاَیَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا﴾

तो **अल्लाह** ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर अपना **सकीना** उतारा। या'नी उन के दिल को इत्मीनान अ़ता फ़रमाया और ऐसी **फ़ौजों** से उन की मदद फ़रमाई जिन को तुम लोगों ने नहीं देखा। और वोह **मलाइका** थे जिन्हों ने कुफ़्फ़ार के रुख़ फेर दिये यहां तक कि वोह लोग आप को देख ही न सके।

﴿وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِیْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ﴾

और काफ़िरों की बात नीचे कर दी। या'नी उन की दा'वते कुफ़्रो शिर्क को पस्त कर दिया।

﴿وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِیَ الْعُلْیَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ﴾

और **अल्लाह** ही का बोलबाला है और **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है।

या'नी उस अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ बा'दर्रुसुल

सानियस्नैने हिजरत पे लाखों सलाम

ग़ार में जां इस पे दे चुके

इस आयते करीमा में जो आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह क़ौल नक़्ल किया गया है कि आप ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : ﴿لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ﴾ या'नी ग़म मत करो कि **अल्लाह** हमारे साथ है तो इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को **अपना ग़म** नहीं था बल्कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **ग़म** था।

आप फ़रमाते थे :

"اِنْ اُقْتَلْ فَاَنَا رَجُلٌ وَّاحِدٌ وَاِنْ قُتِلْتَ هَلَكَتِ الْاُمَّةُ"

या'नी अगर मैं **क़त्ल** कर दिया गया तो सिर्फ़ एक फ़र्द हलाक होगा और ऐ **अल्लाह** के रसूल ! अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़त्ल कर दिये गए तो **पूरी उम्मत** हलाक हो जाएगी।(1)

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये
तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समझूं
येही तो एक सहारा है ज़िन्दगी के लिये

---

١ . . . (اللباب فی علوم الکتاب، التوبۃ، تحت الآیۃ ۴۰، ۱۰/۹۵)

आप की सहाबियत का इन्कार कुफ़्र है

बहर हाल येह आयते करीमा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ो तौसीफ़ में बिल्कुल वाज़ेह है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सहाबी होने पर नस्से क़त़ई है कि ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ ने ﴿اِذْ یَقُوْلُ لِصٰحِبِہٖ﴾ फ़रमाया....

इसी लिये हज़रते **हुसैन बिन फ़ज़्ल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि

"مَنْ قَالَ اِنَّ اَبَابَکْرٍ لَمْ یَکُنْ صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم فَھُوَ کَافِرٌ لِاِنْکَارِہٖ نَصَّ الْقُرآن"

या'नी जो शख़्स कहे कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी नहीं थे वोह "नस्से क़ुरआनी" का इन्कार करने के सबब काफ़िर है ।[1]

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जां उस पे दे चुके
और ह़िफ़्ज़े जां तो जान फ़ुरूज़े ग़ुरर की है
हां ! तू ने उन को जान उन्हें फेर दी नमाज़
पर वोह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है

---

۱ . . . (اللباب فی علوم الکتاب، التوبۃ، تحت الآیۃ ۴۰، ۱۰/۹۵)

साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं

अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

(तीसरी आयत) सब से ज़ियादा मुकर्रम

और तीसवें पारे सूरए वल्लैल की आयते करीमा है

﴿وَ سَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿۱۷﴾ الَّذِیْ یُؤْتِیْ مَالَهٗ یَتَزَكّٰى ﴿۱۸﴾﴾

या'नी और जहन्नम से बहुत दूर रखा जाएगा वोह शख़्स जो सब से बड़ा परहेज़गार है जो कि अपना माल देता है ख़ुदाए तआ़ला के नज़्दीक **सुथरा** होने के लिये, न कि **दिखाने** और **सुनाने** या इन के इलावा किसी दूसरे मक़्सद के लिये **ख़र्च** करता है।[1]

येह आयते मुबारका भी ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई है।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद **नईमुद्दीन** साहिब मुरादाबादी عَلَیْہِ الرَّحمَۃُ وَالرِّضْوَان तह़रीर फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर **आज़ाद** कर दिया तो कुफ़्फ़ार को हैरत हुई और उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने ऐसा क्यूं किया.....? शायद **बिलाल**

١...(سورۃالیل،آیۃ ١٧، ١٨، پ ٣٠)

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन पर कोई एह़सान होगा जो इन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत दे कर ख़रीदा और आज़ाद किया । इस पर येह आयत नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़े'ल मह़ज़ **अल्लाह तआ़ला** की **रिज़ा** के लिये है किसी के एह़सान का बदला नहीं और न ही इन पर ह़ज़रते **बिलाल** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा का कोई एह़सान है ।[1]

इस आयते करीमा में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ﴿اَتْقٰی﴾ या'नी सब से **बड़ा परहेज़गार** फ़रमाया गया....

और पारह 26, रुकूअ़ 14 की आयते मुबारका है :

﴿ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْؕ ﴾

या'नी बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में सब से ज़ियादा **मुकर्रम** और **इ़ज़्ज़त वाला** वोह है जो सब से **बड़ा परहेज़गार** है ।[2]

तो इन दोनों आयाते करीमा के मिलाने से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा **मुकर्रम** और **इ़ज़्ज़त वाले** हैं ।

---

[1] ... (خزائن العرفان، سورۃ الیل، تحت الآیۃ ۱۹، پ ۳۰)
[2] ... (پ ۲۶، سورۃ الحجرات، الآیۃ ۱۳)

मश्क़

(1) **सुवाल :** इस उम्मत के सब से **पहले मुत्तक़ी** सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने इसे किस आयते मुबारका से साबित किया है....?

(2) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सह़ाबियत का इन्कार **कुफ़्र** है, दलील से साबित कीजिये...?

(3) **सुवाल :** ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आज़ाद करने पर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में कौन सी आयते मुबारका नाज़िल हुई....?

(4) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में ज़ियादा **मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम** होना किस त़रह़ साबित होता है...?

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

और अहादीसे करीमा

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत और इन की अज़्मत के इज़्हार में बहुत सी ह़दीसें वारिद हैं। चुनान्चे,

(1) सब से ज़ियादा नफ़्अ़

तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"مَانَفَعَنِیْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَانَفَعَنِیْ مَالُ اَبِیْ بَکْرٍ" **या'नी किसी शख़्स के माल ने मुझ को इतना फ़ाएदा नहीं पहुंचाया जितना फ़ाएदा कि अबू बक्र के माल ने पहुंचाया है।**[1] (मिश्कात शरीफ़, 555)

(2) यारे ग़ार भी तो....!

और येह ह़दीस शरीफ़ भी **तिरमिज़ी** में है कि आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया :

---

١ . . . (مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، الفصل الثانی، الحدیث: ۶۰۲۶، ۲/۴۱۲)

"اَنْتَ صَاحِبِیْ فِی الْغَارِ وَصَاحِبِیْ عَلَی الْحَوْضِ"

या'नी ग़ारे सौर में तुम मेरे साथ रहे और हौज़े कौसर पर भी तुम मेरे साथ रहोगे ।[1]

(3) जहन्नम से आज़ादी का परवाना

और **तिरमिज़ी शरीफ़** में हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि मेरे वालिदे गिरामी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اَنْتَ عَتِیْقُ اللّٰہِ مِنَ النَّارِ" **या'नी तुझे अल्लाह ने जहन्नम की आग से आज़ाद कर दिया है ।** हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि इसी रोज़ से मेरे वालिदे मोहतरम का नाम अ़तीक़ पड़ गया ।[2] (मिश्कात शरीफ़, 555)

तू है आज़ाद सक़र से तेरे बन्दे आज़ाद
है येह सालिक भी तेरा बन्दए बे ज़र सिद्दीक़

---

١ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، فی مناقب ابی بکر وعمر کلیہما، الحدیث: ۳۶۹۰، ۵/۳۷۸)

٢ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، فی مناقب ابی بکر وعمر کلیہما، الحدیث: ۳۶۹۹، ۵/۳۸۲)

(4) सब से पहले दाख़िले जन्नत

और **अबू दावूद शरीफ़** की ह़दीस है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुख़ात़ब करते हुए फ़रमाया : "اَمَا اِنَّکَ یَا اَبَا بَکْرٍ اَوَّلُ مَنْ یَّدْخُلُ الْجَنَّۃَ مِنْ اُمَّتِیْ" **या'नी ऐ अबू बक्र सुन लो मेरी उम्मत में सब से पहले तुम जन्नत में दाख़िल होगे ।**[1]

(5) आप की नेकियां

और ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि एक चांदनी रात में जब कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे मुबारक मेरी गोद में था मैं ने अ़र्ज़ किया : या **रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! किसी शख़्स की **नेकियां** इतनी भी हैं जितनी कि आस्मान पर सितारे हैं...? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां, उ़मर की नेकियां इतनी हैं । ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि फिर मैं ने पूछा : और अबू बक्र की **नेकियों** का क्या हाल है...? हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उ़मर की सारी उ़म्र की नेकियां अबू बक्र की **एक नेकी** के बराबर हैं । رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (मिश्कात शरीफ़, स. 560)[2]

---

١ . . . (سنن ابی داود، کتاب السنة، باب فی الخلفاء، الحدیث: ۴۶۵۲، ۴/۲۸۰)

٢ . . . (مشکوٰۃ المصابیح، کتاب المناقب، الباب ۵، الفصل الثالث، الحدیث: ۶۰۶۸، ۳/۳۴۹)

(6) आप की महब्बत वाजिब

और हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"حُبُّ اَبِیْ بَکْرٍ وَّ شُکْرُہٗ وَاجِبٌ عَلٰی کُلِّ اُمَّتِیْ"

या'नी अबू बक्र से महब्बत करना और उन का शुक्र अदा करना मेरी पूरी उम्मत पर वाजिब है । (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 40)[1]

(7) क्या मेरे दोस्त को छोड़ दोगे ?

और **हज़रते अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर था कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए और सलाम के बा'द इन्हों ने अ़र्ज़ किया कि **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे और उ़मर बिन ख़त्ताब के दरमियान कुछ बातें हो गईं, फिर मैं ने नादिम हो कर उन से मा'ज़िरत त़लब की लेकिन उन्हों ने मा'ज़िरत क़बूल करने से इन्कार कर दिया । येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन बार इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** तआ़ला तुम को **मुआ़फ़** फ़रमाए ।

---

١ ...(الریاض النضرة، ١/١٢٩)(تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، الاحادیث الواردة فی فضله، ص ٤٤)

थोड़ी देर के बा'द हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में आ गए। उन को देखते ही हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस का रंग बदल गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रन्जीदा देख कर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दो ज़ानू बैठे और अ़र्ज़ किया कि ऐ **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इन से ज़ियादा क़ुसूर वार हूं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اِنَّ اللّٰہ بَعَثَنِیۡ اِلَیۡکُمۡ فَقُلۡتُمۡ کَذَبۡتَ وَقَالَ اَبُوۡبَکۡرٍ صَدَقۡتَ وَوَاسَانِیۡ بِنَفۡسِہٖ وَمَالِہٖ فَھَلۡ اَنۡتُمۡ تَارِکُوۡنَ لِیۡ صَاحِبِیۡ"

या'नी जब **अल्लाह** ने मुझे तुम्हारी जानिब मबऊ़स फ़रमाया तो तुम लोगों ने मुझे झुटलाया मगर अबू बक्र ने मेरी **तस्दीक़** की और अपनी जानो माल से मेरी **ग़मख़्वारी व मदद** की तो क्या आज तुम लोग मेरे ऐसे दोस्त को छोड़ दोगे...? और इस जुम्ले को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो बार फ़रमाया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 37)[(1)]

(8) मेरे यार का मर्तबा तुम क्या जानो....?

और हज़रते मिक़्दाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हज़रते अ़क़ील बिन अबी त़ालिब

---

١ ... (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت متخذا خلیلا، الحدیث: ٣٦٦١، ٢/٥١٩) (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، الاحادیث الواردۃ فی فضلہ، ص ٤١)

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ सख़्त कलामी की मगर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबतदारी का ख़याल करते हुए हज़रते अक़ील رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुछ नहीं कहा और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पूरा वाक़िआ़ बयान किया। हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूरा माजरा सुन कर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मजलिस में खड़े हुए और फ़रमाया :

”اَلَا تَدْعُوْنَ لِیْ صَاحِبِیْ

مَاشَانُکُمْ وَشَانُہٗ فَوَاللہِ مَامِنْکُمْ رَجُلٌ اِلَّا عَلٰی بَابِ بَیْتِہٖ ظُلْمَۃٌ اِلَّا بَابَ اَبِیْ بَکْرٍ فَاِنَّ عَلٰی بَابِہٖ النُّوْرَ فَوَاللہِ لَقَدْ قُلْتُمْ کَذَبْتَ وَقَالَ اَبُوْبَکْرٍ صَدَقْتَ وَاَمْسَکْتُمُ الْاَمْوَالَ وَجَادَلِیْ بِمَالِہٖ وَخَذَلْتُمُوْنِیْ وَوَاسَانِیْ وَاتَّبَعَنِیْ“

या'नी **ऐ लोगो....!** सुन लो ! मेरे **दोस्त** को मेरे लिये छोड़ दो, तुम्हारी हैसिय्यत क्या है ? और इन की हैसिय्यत क्या है ? तुम्हें कुछ मा'लूम है ? ख़ुदा की क़सम ! तुम लोगों के दरवाज़ों पर अन्धेरा है मगर अबू बक्र के दरवाज़े पर **नूर की बारिश** हो रही है। ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! तुम लोगों ने मुझे झुटलाया और अबू बक्र ने मेरी **तस्दीक़** की, तुम लोगों ने **माल** ख़र्च करने में बुख़्ल से काम लिया अबू बक्र ने मेरे लिये अपना **माल** ख़र्च किया और

तुम लोगों ने मेरी **मदद** नहीं की मगर अबू बक्र ने मेरी **ग़मख़्वारी** की और मेरी **इत्तिबाअ़** की । (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 37)[1]

(9) एक दिन और रात की नेकी

और मिश्कात शरीफ़, स. 556 में है कि एक रोज़ हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ज़िक्र किया गया तो वोह **रोने** लगे और फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी ज़माने में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक दिन रात में जो अ़मल और बेहतरीन काम किये हैं काश कि मेरी पूरी ज़िन्दगी का **अ़मल** उन की एक रात दिन के **अ़मल** के बराबर होता ।

उन की एक **रात का अ़मल** तो येह है कि जब वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत की रात ग़ारे सौर पर पहुंचे (जो तक़रीबन ढाई किलो मीटर बुलन्द है) तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : **"وَاللّٰہِ لَا تَدْخُلُہٗ حَتّٰی اَدْخُلَ قَبْلَکَ"** या'नी क़सम ख़ुदा की ! आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ार में दाख़िल नहीं होंगे जब तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले मैं न दाख़िल हो जाऊं ताकि अगर कोई मूज़ी चीज़ सांप वग़ैरा हो तो उस से तक्लीफ़ मुझी को पहुंचे और आप **महफ़ूज़** रहें ।

---

١ . . . (تاریخ مدینۃ دمشق، حرف العین، ۳۰/۱۱۰) (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، الاحادیث الواردۃ فی فضلہ، ص ۴۱)

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ार के अन्दर दाख़िल हुए और उस को ख़ूब साफ़ किया और जब ग़ार के अन्दर उन को कुछ सूराख़ नज़र आए तो उन को उन्हों ने अपनी लुंगी में से कपड़ा फाड़ कर भर दिया और दो सूराख़ों पर उन्हों ने अपनी **एड़ियां** लगा दीं इस के बा'द रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि अब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्दर तशरीफ़ लाइये।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ार के अन्दर तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में सर रख कर सो गए।

अभी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम ही फ़रमा रहे थे कि इसी ह़ालत में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाउं में सूराख़ के अन्दर से सांप ने काट लिया मगर आप ने ह़रकत नहीं की और इसी त़रह़ बैठे रहे इस लिये कि कहीं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंख न खुल जाए लेकिन सांप के ज़हर की इन्तिहाई तक्लीफ़ के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों से आंसू निकल पड़े जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस पर गिरे।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंख खुल गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त फ़रमाया : **अबू बक्र ! क्या हुवा...?**" "قَالَ لُدِغْتُ فِدَاکَ اَبِیْ وَاُمِّیْ" अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** के रसूल ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान हों मुझ को सांप ने काट लिया है।

हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने उन के ज़ख़्म पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया तो फ़ौरन उन की तक्लीफ़ जाती रही** मगर अ़र्सए दराज़ के बा'द सांप का वोही ज़हर फिर लौट आया जो कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के विसाल का सबब बना या'नी उसी ज़हर की वज्ह से आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात हुई।

और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **के एक दिन का बेहतरीन अ़मल** येह है कि जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द अ़रब के कुछ लोग मुर्तद हो गए और उन्हों ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे या'नी इस की फ़रज़िय्यत के मुन्किर हो गए तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि अगर मुझ को ऊंट की रस्सी जो लोगों पर वाजिब होगी उस के देने से भी इन्कार करेंगे तो मैं उन से जिहाद करूंगा।

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि उस वक़्त मैं ने उन से अ़र्ज़ किया : "يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ تَاَلَّفِ النَّاسَ وَارْفُقْ بِهِمْ" या'नी लोगों के साथ उल्फ़त से पेश आएं और नर्मी से काम लीजिये तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि तुम अय्यामे जाहिलिय्यत में तो बड़े सख़्त और ग़ज़बनाक थे क्या इस्लाम में दाख़िल हो कर कमज़ोर और पस्त हिम्मत हो गए ? "اِنَّه قَدِ انْقَطَعَ الْوَحْیُ وَتَمَّ الدِّيْنُ اَيَنْقُصُ وَاَنَا حَیٌّ" या'नी वह़ी का आना बन्द हो गया है और दीने इस्लाम कामिल हो चुका है तो क्या मेरी

ज़िन्दगी में वोह कमज़ोर व नाक़िस हो जाएगा....? **मत़लब येह है कि मैं दीने इस्लाम को अपनी ज़िन्दगी में कमज़ोर व नाक़िस हरगिज़ नहीं होने दूंगा और जो लोग ज़कात देने से इन्कार कर रहे हैं मैं उन से जिहाद ज़रूर करूंगा ।**[1]

यार के नाम पे मरने वाला सब कुछ सदक़ा करने वाला
एड़ी तो रख दी सांप के बिल पर ज़हर का असर सह लिया दिल पर
मन्ज़िले सिद्क़ो इश्क़ का रहबर येह सब कुछ है ख़ातिरे दिलबर

येह चन्द ह़दीसें हम ने आप के सामने **अफ़्ज़लुल बशर बा'दल अम्बिया ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में पेश की हैं । इन के इ़लावा और भी बहुत सी ह़दीसें इसी क़िस्म के मज़मून की ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ में वारिद हुई हैं । जिन से साफ़ ज़ाहिर होता है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक सारे सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में सब से ज़ियादा मुक़र्रब, सब से ज़ियादा प्यारे और सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत व अ़ज़मत वाले ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं और हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जा नशीनी के सब से पहले मुस्तह़िक़ वोही हैं ।

رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ و ارضاہ عنا وعن سائر المسلمین

1... (جامع الاصول فی احادیث الرسول، کتاب الفضائل، الباب الرابع، الفرع الثانی فی فضائل الرجال علی الانفراد، الحدیث: ۶۴۲۶، ۴۵۸/۸)

मश्क़

(1) **सुवाल :** इब्तिदाई दो अहादीसे मुबारका में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के किन औसाफ़ का बयान है...?

(2) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "**अ़तीक़**" कब और कैसे मश्हूर हुवा...?

(3) **सुवाल :** "**ऐ अबू बक्र ! सुन लो मेरी उम्मत में सब से पहले तुम जन्नत में दाख़िल होगे**" इस ह़दीस के अस्ल अल्फ़ाज़ मअ़ ह़वाला बयान कीजिये...?

(4) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **नेकियों की शान** बयान कीजिये नीज़ उम्मत को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ किस क़िस्म का बरताव रखने की ता'लीम दी गई है...?

(5) **सुवाल :** सातवीं और आठवीं ह़दीसे मुबारका में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के किन औसाफ़ का ज़िक्र है...?

(6) **सुवाल :** सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **एक दिन और रात की नेकी** की अ़ज़मत ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बानी बयान कीजिये....?

आप का नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **नाम अ़ब्दुल्लाह है** और **अबू बक्र** से जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मश्हूर हैं तो येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **कुन्यत** है और **सिद्दीक़** व **अ़तीक़** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **लक़ब** है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के **वालिद का नाम** उ़स्मान और कुन्यत अबू क़ुहाफ़ा है। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **वालिदए मोह़तरमा का नाम** सलमा है जिन की कुन्यत उम्मुल ख़ैर है।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **सिलसिलए नसब** सातवीं पुश्त में मुर्रह बिन का'ब पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शजरए नसब से मिल जाता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाक़िअ़ए फ़ील के तक़रीबन ढाई बरस बा'द मक्का शरीफ़ में पैदा हुए।[2]

सभी उ़लमाए उम्मत के, इमामो पेश्वा हैं आप

बिला शक पेश्वाए अस्फ़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

ख़ुदाए पाक की रह़मत से इन्सानों में हर इक से

फ़ुज़ूं तर बा'द अज़ कुल अम्बिया सिद्दीक़े अक्बर हैं

---

١ . . . (اسد الغابۃ، باب العین، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر الصدیق، ۳/۳۱۵)(سیرت حلبیۃ، ۱/۳۹۰)

٢ . . . (الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الباء، فصل الصحابۃ، ص۵۸۷)(الاصابۃ، حرف العین المھملۃ، ۴/۱۴۵)

अ़हदे तिफ़्ली में बुत शिकनी

ज़मानए जाहिलिय्यत में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी बुत परस्ती नहीं की है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा इस के ख़िलाफ़ रहे यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र शरीफ़ जब चन्द बरस की हुई तो उसी ज़माने में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बुत शिकनी फ़रमाई जैसा कि **आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत फ़ाज़िले बरेल्वी** عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان अपने रिसालए मुबारका **"تنزیۃ المکانۃ الحیدریہ"** स. 13 में तह़रीर फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे माजिद ह़ज़रते अबू क़ुह़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कि वोह भी बा'द में सह़ाबी हुए) ज़मानए जाहिलिय्यत में इन्हें बुत ख़ाने ले गए और बुतों को दिखा कर इन से कहा : **"ھٰذِہٖ اٰلِھَتُکَ الشُّمُّ الْعُلٰی فَاسْجُدْ لَھَا"** या'नी येह तुम्हारे बुलन्दो बाला ख़ुदा हैं इन्हें सजदा करा।

वोह तो येह कह कर बाहर चले गए। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ज़ाए मुबरम की त़रह़ बुत के सामने तशरीफ़ लाए और **बुतों और बुत परस्तों का इज्ज़ ज़ाहिर करने के लिये इरशाद फ़रमाया :** **"اِنِّیْ جَائِعٌ فَاَطْعِمْنِیْ"** मैं भूका हूं मुझे खाने दे। वोह कुछ न बोला। फ़रमाया : **"اِنِّیْ عَارٍ فَاکْسِنِیْ"** या'नी मैं नंगा हूं मुझे कपड़ा पहना, वोह कुछ न बोला। सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक पथ्थर हाथ में ले कर फ़रमाया : मैं

तुझ पर पथ्थर मारता हूं "فَـاِنْ كُنْتَ اِلٰـهـاً فَـامنـع نَفْـسَـكَ" अगर तू ख़ुदा है तो अपने आप को बचा, वोह अब भी निरा बुत बना रहा। **आख़िर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब कुव्वते सिद्दीक़ी उस को पथ्थर मारा तो वोह ख़ुदाए गुमराहां मुंह के बल गिर पड़ा।** उसी वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे माजिद वापस आ रहे थे, येह माजरा देख कर फ़रमाया कि "ऐ मेरे बच्चे ! तुम ने येह क्या किया...? फ़रमाया कि : "वोही किया जो आप देख रहे हैं" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद इन्हें इन की वालिदा माजिदा हज़रते उम्मुल ख़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास (कि वोह भी सहाबिया हुईं) ले कर आए और सारा वाक़िआ़ उन से बयान किया। उन्हों ने फ़रमाया इस बच्चे से कुछ न कहो, जिस रात येह पैदा हुए मेरे पास कोई न था मैं ने सुना कि हातिफ़ कह रहा है :

"يَا اَمَةَ اللّٰهِ عَلَى التَّحْقِيْقِ اَبْشِرِىْ بِالْوَلَدِ الْعَتِيْقِ اِسْمُهُ فِى السَّمَاءِ الصِّدِيْقِ لِمُحَمَّدٍ صَاحِبٌ وَّرَفِيْقٌ"

या'नी ऐ अल्लाह की सच्ची बांदी ! तुझे ख़ुश ख़बरी हो इस आज़ाद बच्चे की जिस का नाम आस्मानों में सिद्दीक़ है और जो मुहम्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यार व रफ़ीक़ है।

رواه القاضى ابو الحسين احمد بن محمد الزبيدى بسنده

فى معالى القرش الى عوالى العرش

आप अ़ह्दे जाहिलिय्यत में

ज़मानए जाहिलिय्यत में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी बरादरी में सब से ज़ियादा मालदार थे, **मुरुव्वत व एह़सान का मुजस्समा थे, क़ौम में बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ समझे जाते थे,** गुमशुदा की तलाश आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शेवा रहा और मेहमानों की आप ख़ूब मेज़बानी फ़रमाते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार रूअसाए कु़रैश में होता था वोह लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मश्वरा लिया करते थे और आप से बे इन्तिहा मह़ब्बत करते थे, **आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कु़रैश के उन ग्यारह लोगों में से हैं जिन को अय्यामे जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी ह़ासिल रही** कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़ह्दे जाहिलिय्यत में "ख़ून बहा" और जुर्माने के मुक़द्दमात का फ़ैसला किया करते थे जो उस ज़माने का बहुत बड़ा ए'ज़ाज़ समझा जाता था ।[(1)] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

कभी शराब न पी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़ह्दे जाहिलिय्यत में कभी शराब नहीं पी । एक बार सह़ाबए किराम के मजमअ़ में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی مولدہ الخ، ص ٣١) (تاریخ مدینہ دمشق، حرف العین، الرقم: ٣٣٩٨، ٣٠/٣٣٥)

ज़मानए जाहिलिय्यत में शराब पी है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने फ़रमाया : ख़ुदा की पनाह ! मैं ने कभी शराब नहीं पी ।** लोगों ने कहा : क्यूं ? फ़रमाया "**كُنْتُ اَصُوْنُ عِرْضِی وَاَحْفَظُ مُرُوَّتِی**" या'नी मैं अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू को बचाता था और मुरुव्वत की ह़िफ़ाज़त करता था इस लिये । **जो शख़्स शराब पीता है उस की इ़ज़्ज़त व नामूस और मुरुव्वत जाती रहती है** । जब इस बात की ख़बर हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो बार फ़रमाया : अबू बक्र ने सच कहा, अबू बक्र ने सच कहा ।[1] رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप का हुल्या

एक शख़्स ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ किया कि आप हम से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सरापा और हुल्या बयान फ़रमाएं तो ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि आप का रंग सफ़ेद था, बदन अकहरा था, दोनों रुख़्सार अन्दर को दबे हुए थे, पेट इतना बड़ा था कि आप की लुंगी अक्सर नीचे खिसक जाया करती थी । पेशानी पर हमेशा पसीना रहता था, चेहरे

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، فصل فی مولدہ، ص ٣٠) (کنزالعمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، فضل الصدیق، الحدیث: ٣٥٥٩٣، ٢/٢٢٠، الجزء ١٢)

पर ज़ियादा गोश्त नहीं था, **हमेशा नज़रें नीचे रखते थे,** पेशानी बुलन्द थी, उंगलियों की जड़ें गोश्त से ख़ाली थीं या'नी घाइयां खुली रहती थीं, हिना और कतम का ख़िज़ाब लगाते थे ।

......हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए तृय्यिबा में तशरीफ़ लाए तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इलावा किसी के बाल सियाह व सफ़ेद मिले हुए खिचड़ी नहीं थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन खिचड़ी बालों पर हिना या'नी मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब लगाया करते थे ।[1]

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में येह जो बयान किया गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कतम का ख़िज़ाब लगाते थे । इस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ सियाह ख़िज़ाब का गुमान करना या इस से नील और हिना मिले हुए को मुत़लक़न जाइज़ समझ लेना महज़ ग़लती है । तफ़्सील के लिये आ'ला हज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان के रिसालए मुबारका "حک العیب فی حرمۃ تسوید الشیب" का मुतालआ करें ।

۱...(تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی صفتہ، ص ۲۵)(الطبقات الکبری، ومن بنی تمیم۔۔الخ، ذکر صفۃ ابی بکر، ۳/۱۴۰)(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ہجرۃ النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، الحدیث: ۳۹۱۹، ۲/۵۹۹)

मश्क़

(1) **सुवाल :** सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम, कुन्यत, लक़ब और ह़सबो नसब बयान कीजिये, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नसब कितने वासित़ों से सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से शरफ़ पाता है...?

(2) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पैदाइश कब हुई नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिदैन का नाम बयान कीजिये...?

(3) **सुवाल :** अ़ह्दे तिफ़ली में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बुत शिकनी का वाक़िआ़ मुफ़स्सल बयान कीजिये नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ने इसे सुन कर क्या कहा...?

(4) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कभी शराब न पी, पूछने पर इस का सबब क्या बयान किया...?

(5) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का हुल्या तफ़्सीली बयान कीजिये नीज़ सियाह ख़िज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ का मौक़िफ़ क्या है...?

आप का क़बूले इस्लाम

सब से पहले क़बूले इस्लाम

बहुत से सहाबए किराम व ताबेईने इज़ाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं कि **सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं।**

इमाम शा'बी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला कौन है...? तो इन्हों ने फ़रमाया : हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ और सुबूत में हज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वोह अश्आ़र पढ़े जो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ में हैं और इन में सब से पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस्लाम लाने का ज़िक्र है।[1]

......और इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि इन्हों ने फ़रमाया : "اَوَّلُ مَنْ اَسْلَمَ مِنَ الرِّجَالِ اَبُوْبَكر" या'नी सब से पहले मर्दों में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस्लाम लाए।[2]

۱...(العجم الكبير، الحديث: ۱۲۵۶۲، ۱۲/۷۱)

۲...(تاريخ الخلفاء، ابوبكر الصديق، فصل فى اسلامه، ص ۳۳)

......और इब्ने सा'द رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सहाबिये रसूल हज़रते अबू अरवा दोसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है इन्हों ने फ़रमाया : "اَوَّلُ مَنْ اَسْلَمَ اَبُو بَکْرٍ" या'नी **सब से पहले जो इस्लाम लाए वोह हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।**[1]

यहां तक कि हज़रते मैमून बिन मेहरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से जब दरयाफ़्त किया गया कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले मुसलमान हुए या हज़रते अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ? तो इन्हों ने जवाब में फ़रमाया :

"وَاللّٰہ لَقَدْ اٰمَنَ اَبُوبَکْرٍ بِالنَّبِی صلی اللّٰہ علیہ وسلم زمانَ بَحِیْرا ءِ الرَّاھِبِ"

या'नी क़सम है ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ की ! कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बुहैरा राहिब ही के ज़माने में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ला चुके थे जब कि हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा भी नहीं हुए थे ।[2] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 23)

बिला तरद्दुद इस्लाम क़बूल करना

और मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझ से मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बयान किया कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया कि जब मैं ने किसी को भी

۱...(الطبقات الکبریٰ، ومن بنی تمیم۔۔۔الخ، ذکر صفۃ ابی بکر، ۳/۱۲۸)

۲...(تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی اسلامہ، ص ۲۶)(حلیۃ الاولیاء، ۴۸۷۷، میمون بن مہران، ۴/۹۵)

इस्लाम की दा'वत दी तो उस को तरद्दुद हुवा **इलावा अबू बक्र कि जब मैं ने उन पर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने बिग़ैर तरद्दुद के इस्लाम क़बूल कर लिया ।**[1]

......इमाम बैहक़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि **हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साबिक़ुल इस्लाम होने का सबब येह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नबुव्वत व रिसालत की निशानियां क़ब्ल अज़ इस्लाम ही मा'लूम कर चुके थे इस लिये जब इन को इस्लाम की दा'वत दी गई तो इन्हों ने फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लिया ।**[2]

.....बा'ज़ मुहद्दिसीन यूं फ़रमाते हैं कि **ए'लाने नबुव्वत के क़ब्ल ही से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त थे** और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ की उ़म्दगी, आ़दात की पाकीज़गी और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्चाई व दियानत दारी पर यक़ीने कामिल रखते थे तो जब सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन पर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने फ़ौरन क़बूल कर लिया । इस लिये कि जो शख़्स ज़िन्दगी के आ़म हालात में झूट नहीं बोलता और न ग़लत़

---

١ . . . (تاریخ مدینۃ دمشق، عبداللہ ویقال عتیق، ۳۰/۴۴)
٢ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی اسلامہ، ص ۲۷)

बात कहता है तो भला वोह ख़ुदाए ज़ुल जलाल के बारे में कैसे झूट बोल सकता है कि उस ने मुझे रसूल बना कर मबऊ़स फ़रमाया है इसी बुन्याद पर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन बिला तअम्मुल मुसलमान हो गए।[1]

इन तमाम शवाहिद से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम सह़ाबा رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया है **इसी लिये बा'ज़ ह़ज़रात ने यहां तक दा'वा किया है कि आप** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **के सब से पहले मुसलमान होने पर इजमाअ़ है** लेकिन बा'ज़ लोग कहते हैं कि सब से पहले ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ईमान लाए और बा'ज़ लोगों का ख़याल है कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सब से पहले इस्लाम क़बूल किया।

ततबीक़े अक़्वाल

इन तमाम अक़्वाल में **हमारे इमामे आ'ज़म ह़ज़रते अबू ह़नीफ़ा** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **ने इस त़रह़ ततबीक़ फ़रमाई है** कि मर्दों में सब से पहले **ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ औरतों में सब से पहले **ह़ज़रते ख़दीजा** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا और लड़कों

---

[1] ...(البدایۃ والنہایۃ، ذکر اول من اسلم، ۲/۳۶۵)

में सब से पहले **हज़रते अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ईमान लाए ।[1]

आप का कमाले ईमान

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ईमान सारे सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में सब से ज़ियादा कामिल था, जिस का सुबूत बहुत से वाक़िआ़त से मिलता है ।

.......**हुदैबिया में जिन शर्तों पर सुल्ह़ हुई** उन में एक शर्त़ येह भी थी कि मक्के के मुसलमानों या काफ़िरों में से अगर कोई शख़्स मदीने चला जाए तो वोह वापस कर दिया जाएगा लेकिन अगर कोई मुसलमान मदीने से मक्के चला आए तो उसे वापस नहीं किया जाएगा । अभी सुल्ह़नामे पर त़रफ़ैन के दस्त्ख़त़ नहीं हुए थे कि अबू जुन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो मुसलमान हो चुके थे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से गिरते पड़ते और अपनी बेड़ियां घसीटते हुए हुदैबिया के मक़ाम पर मुसलमानों के दरमियान आ गए ।

सुहैल बिन अ़मर जो अबू जुन्दल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बाप था और कुफ़्फ़ारे मक्का की त़रफ़ से सुल्ह़ की गुफ़्त्गू करने के लिये हुदैबिया आया हुवा था जब उस ने अपने बेटे को देखा तो कहा कि अबू जुन्दल को आप मेरी त़रफ़ वापस कर दें । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अभी तो सुल्ह़नामे पर फ़रीक़ैन के दस्त्ख़त़ ही नहीं

---

1 . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی اسلامہ، ص ۲۶) (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۴۱۱)

हुए हैं लिहाज़ा येह मुआहदा तुम्हारे और हमारे दस्तख़त हो जाने के बा'द ही नाफ़िज़ होगा। उस ने कहा : तो जाएं हम आप से सुल्ह नहीं करेंगे। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ सुहैल ! अबू जुन्दल को मेरे पास रहने की तुम अपनी तरफ़ से इजाज़त दे दो उस ने कहा मैं इस बात की हरगिज़ इजाज़त नहीं दे सकता।

जब हज़रते अबू जुन्दल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने देखा कि अब मैं फिर मक्का लौटा दिया जाऊंगा तो उन्हों ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से फ़रियाद की और कहा : ऐ मुसलमानो ! देखो मैं काफ़िरों की तरफ़ लौटाया जा रहा हूं हालांकि मैं मुसलमान हो चुका हूं और आप लोगों के पास आ गया हूं और हज़रते अबू जुन्दल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बदन पर काफ़िरों की मार के जो निशानात थे, आप मुसलमानों को वोह निशानात दिखा दिखा कर रोने लगे तो मुसलमानों को बड़ा जोश पैदा हुवा यहां तक कि हज़रते उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **अल्लाह** के महबूब दानाए ख़फ़ाया व ग़ुयूब जनाबे अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंच गए और अ़र्ज़ किया : "क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के सच्चे रसूल नहीं हैं ?"

इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं ?" या'नी हां मैं **अल्लाह** का सच्चा रसूल हूं। फिर हज़रते उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया :

“क्या हम ह़क़ पर और कुफ़्फ़ार बात़िल पर नहीं हैं ?” हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्यूं नहीं ? या'नी बेशक हम ह़क़ पर हैं और कुफ़्फ़ार बात़िल पर हैं। इस जवाब पर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : तो फिर हम दीन के मुआ़मले में दब कर क्यूं सुल्ह़ करें ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! बेशक मैं **अल्लाह** का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हूं, मैं उस की ना फ़रमानी कभी नहीं कर सकता और मेरा मददगार वोही है।

फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : क्या आप येह नहीं फ़रमाया करते थे कि हम **बैतुल्लाह** शरीफ़ का त़वाफ़ करेंगे ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “ठीक है मगर हम ने येह कब कहा था कि इसी साल त़वाफ़ करेंगे” ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि “हां येह सह़ीह़ है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी साल के लिये नहीं फ़रमाया था।”

फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास गए और उन से भी इसी क़िस्म की गुफ़्त्गू की तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : “اِلْزَمْ غَرْزَه” या'नी उन की रिकाब थामे रहो और उन के दामन से लगे रहो बेशक वोह **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और **अल्लाह** उन का मुआ़विन और मददगार है। **ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इस जवाब से ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का जोश ठन्डा हो गया।**

हुदैबिया में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस त़रह़ सुल्ह़ फ़रमाई इस से मुसलमानों की ना गवारी और रन्जो ग़म का येह आ़लम रहा कि तक्मीले मुआ़हदा के बा'द तीन बार हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उठो क़ुरबानी करो और सर मुन्डा कर एह़राम खोल दो मगर कोई उठने को तय्यार न होता था यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जोश में आ कर हुज़ूर सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ऐसी गुफ़्तगू की, कि जिस पर वोह ज़िन्दगी भर अफ़्सोस करते रहे और मुआ़फ़ी के लिये बहुत सी नेकियां करते रहे मगर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को जो जवाब दिया वोह ईमान अफ़रोज़ जवाब बता रहा है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी जगह पर बिल्कुल मुत़्मइन थे कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं वोह जो कुछ कर रहे हैं सब ह़क़ है । हर ह़ाल में **अल्लाह** तआ़ला उन की मदद फ़रमाएगा ।[1]

इस वाक़िए से साफ़ ज़ाहिर है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत व नबुव्वत पर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ईमान सारे सह़ाबा में सब से ज़ियादा कामिल व अक्मल था जिस ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के जोश को भी ठन्डा कर दिया ।

---

١ . . . (صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجہاد، الحدیث: ۲۷۳۱، ۲/۲۲۶)

मे'राज की बिला तअम्मुल तस्दीक़

शबे मे'राज की सुब्ह बहुत से मुशरिकीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और कहा कि आप को कुछ ख़बर है ? आप के दोस्त मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कह रहे हैं कि उन्हें रात को बैतुल मुक़द्दस और आस्मान वग़ैरा की सैर कराई गई है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा क्या वाक़ेई वोह ऐसा फ़रमा रहे हैं...? उन लोगों ने कहा हां वोह ऐसा ही कह रहे हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "اِنِّی لَاُصَدِّقُہٗ بِاَبْعَدَ مِنْ ذٰلِکَ" या'नी अगर वोह इस से भी ज़ियादा बईद अज़ क़ियास और हैरत अंगेज़ ख़बर देंगे तो बेशक मैं उस की भी तस्दीक़ करूंगा ।[1]

मैं क़त्ल कर देता

ग़ज़वए बद्र में आप के साहिबज़ादे हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ थे। इस्लाम क़बूल करने के बा'द उन्हों ने अपने वालिद हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि आप जंगे बद्र में कई बार मेरी ज़द में आए लेकिन मैं ने आप से सर्फ़े नज़र की और आप को क़त्ल नहीं किया । इस के जवाब में सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "لَوْ اَهْدَفْتَ لِیْ لَمْ اَنْصَرِفْ عَنْکَ" या'नी ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! कान खोल

---

1 ... (المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر الاختلاف فی امر الخلافۃ، الحدیث: ۴۵۱۵، ۴/۲۵)

कर सुन लो कि अगर तुम मेरी ज़द में आ जाते तो मैं सर्फ़े नज़र न करता बल्कि तुम को क़त्ल कर के मौत के घाट उतार देता।[1]

इन वाक़िआत से भी वाज़ेह तौर पर मा'लूम हुवा कि हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़ियादा कामिल था बल्कि दरजए कमाल की इन्तिहा को पहुंचा हुवा था।[2]

सब से कामिल ईमान

यहां तक कि इमाम बैहक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **"शुअ़बुल ईमान"** में हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह क़ौल नक़्ल किया है कि **पूरी ज़मीन के मुसलमानों का ईमान और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ का ईमान अगर वज़्न किया जाए तो हज़रते सिद्दीक़े अक्बर के ईमान का पल्ला भारी होगा।** (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 40)[3]

١...(المصنف لابن ابی شیبة، کتاب المغازی، باب ھذا ما حفظ ابوبکر۔۔، الحدیث: ۵۴، ۴۹۴/۸)

2....**नोट :** मज़कूरा वाक़िआ़ हमें कुतुबे अह़ादीस में ग़ज़्वए बद्र के मुतअ़ल्लिक़ नहीं मिला बल्कि इब्ने अबी शैबा, कन्ज़ुल उ़म्माल, जामेउ़ल अह़ादीस वग़ैरा में येह वाक़िआ़ ग़ज़्वए उहुद के मुतअ़ल्लिक़ नक़्ल है।

٣...(تاریخ الخلفاء ص ۴۰) (کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۶۰۹، ۲۲۲/۶، الجزء ۱۲)

मश्क़

(1) **सुवाल :** अव्वलन इस्लाम कौन लाया....? इस के मुतअ़ल्लिक़ किस का क्या मौक़िफ़ है, तफ़्सील के साथ ज़िक्र फ़रमाएं....?

(2) **सुवाल :** सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब इस्लाम पेश किया गया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बिला तरद्दुद ईमान ले आए, इस का सबब बयान कीजिये....?

(3) **सुवाल :** अव्वलन इस्लाम लाने के मुतअ़ल्लिक़ जो मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, हमारे इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم से इन के दरमियान किस त़रह़ की तत़बीक़ मन्क़ूल है....?

(4) **सुवाल :** सुल्ह़े हुदैबिया का वाक़िआ़ तफ़्सील से ज़िक्र कीजिये नीज़ येह ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कमाले ईमान पर किस त़रह़ दलालत करता है...?

(5) **सुवाल :** वाक़िअ़ए मे'राज सुनने पर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क्या जवाब दिया....?

(6) **सुवाल :** सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे से किस मौक़अ़ पर कहा कि मैं तुम्हें क़त्ल कर देता....?

(7) **सुवाल :** सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ईमान की शान बयान कीजिये....?

आप की शुजाअ़त

सब से ज़ियादा बहादुर कौन

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सारे सहाबा में सब से ज़ियादा शुजाअ़ और बहादुर भी थे ।

अ़ल्लामा बज़्ज़ार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी मुस्नद में तह़रीर फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से दरयाफ़्त किया कि बताओ सब से ज़ियादा बहादुर कौन है...? उन लोगों ने कहा कि सब से ज़ियादा बहादुर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं तो हमेशा अपने जोड़ से लड़ता हूं फिर कैसे मैं सब से बहादुर हुवा ? तुम लोग येह बताओ कि सब से ज़ियादा बहादुर कौन है ? लोगों ने अ़र्ज़ किया : ह़ज़रत हम को नहीं मा'लूम है, आप ही बताएं । **आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि सब से ज़ियादा शुजाअ़ और बहादुर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं** । सुनो ! जंगे बद्र में हम लोगों ने ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये एक अ़रीश या'नी झोंपड़ा बनाया था ताकि गर्दो गुबार और सूरज की धूप से ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मह़फ़ूज़ रहें तो हम लोगों ने कहा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कौन रहेगा ? कहीं ऐसा न हो कि उन पर कोई ह़म्ला कर दे

“فَوَاللّٰہِ مَادَنَا مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا اَبُوْبَکر” या'नी तो ख़ुदा की क़सम ! इस काम के लिये सिवाए हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कोई आगे नहीं बढ़ा । आप शमशीर बरह्ना हाथ में ले कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास खड़े हो गए फिर किसी दुश्मन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आने की जुरअत नहीं हो सकी और अगर किसी ने जुरअत भी की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस पर टूट पड़े इस लिये हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही सब से ज़ियादा शुजाअ़ और बहादुर थे ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 25)

हज़रते अ़ली के नज़दीक बहादुर

और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार का वाक़िआ़ है कि काफ़िरों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पकड़ लिया और कहने लगे कि तुम ही हो जो कहते हो कि ख़ुदा एक है ।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तो क़सम ख़ुदा की ! उस मौक़अ़ पर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इलावा कोई हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब नहीं गया । आप

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، شجاعتہ، ص ۲۸) (کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۶۸۵، ۲/۲۳۴، الجزء: ۱۲)

आगे बढ़े और काफ़िरों को मारा और उन्हें धक्के दे दे कर हटाया और फ़रमाया : तुम पर अफ़्सोस है कि तुम लोग ऐसी ज़ात को तक्लीफ़ पहुंचा रहे हो जो येह कहता है कि मेरा परवर दगार सिर्फ़ **अल्लाह** है और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि लोग अपने ईमान को छुपाते थे मगर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ईमान को अ़लल ए'लान ज़ाहिर फ़रमाते थे इस लिये आप सब से ज़ियादा बहादुर थे ।(1) (तारीखुल ख़ुलफ़ा, स. 25)

जान दी, दी हुई उसी की थी

हक़ तो येह है कि हक़ अदा न हुवा

ग़ज़्वए उहुद में शुजाअ़त

और **अ़ल्लामा हैशम** अपनी मुस्नद में तह़रीर फ़रमाते हैं कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद फ़रमाया कि

"لَمَّا كَانَ يَوْمُ اُحدٍ اِنْصَرَفَ النَّاسُ كُلُّهُمْ عَنْ
رَسُوْلِ اللّٰه صلى الله عليه وآله وسلم فَكُنْتُ اَوَّلَ مَنْ فَاءَ"

या'नी जंगे उहुद के दिन सब लोग **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तन्हा छोड़ कर इधर उधर हो गए तो सब से

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، شجاعته، ص ٢٨) (کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ٣٥٦٨٥، ٢/٢٣٤، الجزء: ١٢)

पहले मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंच कर उन की हिफ़ाज़त की।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

इन शवाहिद से रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गया कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सारे सहाबा رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में सब से ज़ियादा शुजाअ़ और बहादुर भी थे।

आप की सख़ावत

हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** के रास्ते में ख़र्च करने और सख़ावत करने के बारे में भी सारे सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم पर फ़ौक़िय्यत रखते थे।

ह़दीस शरीफ़ की दो मशहूर किताबों **तिरमिज़ी और अबू दावूद** में है : हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक रोज़ हम लोगों को **अल्लाह** की राह में सदक़ा और ख़ैरात करने का हुक्म दिया और हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से उस मौक़अ़ पर मेरे पास काफ़ी माल था मैं ने अपने दिल में कहा कि अगर हज़रते अबू बक्र से आगे बढ़ जाना किसी दिन मेरे लिये मुमकिन होगा तो वोह आज का दिन होगा, मैं काफ़ी माल ख़र्च कर के आज उन से सबक़त ले जाऊंगा।

---

[1] ...(تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، شجاعته، ص ۲۸) (مسند البزار، مسند ابی بکر، ماروت عائشه عن ابی بکر، الحدیث: ۶۳، ۱/۱۳۲)

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : तो मैं आधा माल ले कर ख़िदमत में हाज़िर हुवा। तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : "مَا اَبْقَیْتَ لِاَھْلِکَ" या'नी अपने घर वालों के लिये तुम ने कितना छोड़ा...? हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया कि आधा माल उन के लिये छोड़ दिया है।

फिर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो कुछ उन के पास था सब ले आए। रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा : "مَا اَبْقَیْتَ لِاَھْلِکَ" या'नी ऐ अबू बक्र ! अपने अह्लो अ़याल के लिये क्या छोड़ आए हो ? "فَقَالَ اَبْقَیْتُ لَھُمُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہ" या'नी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि उन के लिये **अल्लाह** व रसूल को छोड़ आया हूं मत़लब येह है कि मेरे और मेरे अह्लो अ़याल के लिये **अल्लाह** और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काफ़ी हैं।

परवाने को चराग़ है बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

"قُلْتُ لَا اَسْبِقُہ اِلٰی شَیْءٍ اَبَدًا" या'नी मैं ने अपने दिल में कहा कि किसी चीज़ में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर मैं कभी सबक़त नहीं ले जा सकूंगा।[1] (मिश्कात शरीफ़, स. 556)

[1] ... (مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر، الحدیث: ۶۰۳۰، ۲/۴۱۲)(سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، فی مناقب ابی بکر وعمر کلیھما، الحدیث: ۳۶۹۵، ۵/۳۸۰)

सारा माल राहे ख़ुदा में

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है कि जिस रोज़ मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए, उस रोज़ आप के पास चालीस हज़ार दीनार मौजूद थे और एक रिवायत में है कि चालीस हज़ार दिरहम थे । **आप ने येह सारा माल रसूलुल्लाह** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم **के हुक्म पर ख़र्च कर दिया ।**[1]

......हज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि जिस रोज़ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ईमान लाए तो उन के पास चालीस हज़ार दिरहम थे और जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ मदीनए त़य्यिबा हिजरत कर के आए तो उस माल में से आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास सिर्फ़ पांच हज़ार बाक़ी रह गए थे । **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आप** رضی اللہ تعالٰی عنہ **ने 35 हज़ार दिरहम मुसलमान ग़ुलामों के आज़ाद कराने और इस्लाम की मदद में ख़र्च कर डाला था ।**[2]

١...(فیض القدیر شرح جامع صغیر، حرف الراء، الحدیث: ۴۴۱۲، ۴/۲۴)

٢...(تاریخ مدینۃ دمشق، عبداللہ ویقال عتیق، ۳۰/۶۸)

ख़र्च करने पर क़ुरआन की बिशारत

हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیہ الرحمۃ والرضوان तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये दस हज़ार रात में, दस हज़ार दिन में, दस हज़ार छुपा कर और दस हज़ार अ़लानिया तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के हक़ में येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

﴿اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ﴾

या'नी जो लोग अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपा कर और अ़लानिया तो उन के लिये उन के रब के पास उन का अज्र है और न उन को कुछ ख़ौफ़ होगा और न वोह लोग ग़मगीन होगे । (پ۳،٢٧٤)[1]

अबू बक्र के एहसान का बदला

तिरमिज़ी शरीफ़ में है रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस किसी ने भी मेरे साथ एहसान किया था मैं ने हर

[1]... (خزائن العرفان، سورۃ البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۷۴، پ ۳)

एक का एह़सान उतार दिया इलावा अबू बक्र के एह़सान के, **उन्हों ने मेरे साथ ऐसा एह़सान किया है जिस का बदला क़ियामत के दिन उन को ख़ुदाए तआ़ला ही अ़ता फ़रमाएगा ।**

"وَمَانَفَعَنِیْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَانَفَعَنِی مَالُ اَبِیْ بَکر"

या'नी और हरगिज़ किसी के माल ने मुझे इतना फ़ाएदा नहीं पहुंचाया है जितना फ़ाएदा कि अबू बक्र के माल ने पहुंचाया है ।[1] (मिश्कात शरीफ़, स. 555)

शाइर ने इस जज़्बए जां निसारी को यूं नज़्म किया है :

इतने में वोह रफ़ीक़े नबुव्वत भी आ गया — जिस से बिनाए इ़श्क़ो मह़ब्बत है उस्तुवार

ले आया अपने साथ वोह मर्दे वफ़ा सिरिश्त — हर चीज़ जिस से चश्मे जहां में हो एतबार

बोले हुज़ूर, चाहिये फ़िक्रे अ़याल भी — कहने लगा वोह इ़श्क़ो मह़ब्बत का राज़दार

ऐ तुझ से दीदए मह व अन्जुम फ़रोग़ गीर — ऐ तेरी ज़ात बाइ़से तक्वीने रूज़गार

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस

सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

---

١ . . . (مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، مناقب ابی بکر، الحدیث:۶۰۲۶، ۲/۴۱۲)

﴾ मश्क़ ﴿

(1) **सुवाल :** हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक सब से ज़ियादा शुजाअ़ कौन था, तफ़्सील के साथ ज़िक्र कीजिये....?

(2) **सुवाल :** 'عتیقٌ مِّنَ النَّار' की ख़ुश ख़बरी पाने वाले सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे उहुद में किस त़रह़ शुजाअ़त के जौहर दिखाए....?

(3) **सुवाल :** "मैं सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कभी सबक़त नहीं ले जा सकता" येह किस का क़ौल है नीज़ उन्हों ने येह कब फ़रमाया.....?

(4) **सुवाल :** ईमान लाने के वक़्त से हिजरत के वक़्त तक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कितने रुपै राहे ख़ुदा में ख़र्च किये नीज़ इस मौक़अ़ पर कौन सी आयते मुबारका नाज़िल हुई....?

﴾...रूहानी इलाज...﴿

۞....هُوَاللّٰهُ الرَّحِیۡم : जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।

۞....یَامَلِکُ 90 : बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ग़ुर्बत से नजात पा कर मालदार हो। (हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 168 ता 170 मुल्तक़त़न)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत

येह इक जान क्या है.....

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत चाहते थे और उन से बे इन्तिहा महब्बत फ़रमाते थे। शुरूअ़ ज़मानए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता था वोह ह़त्तल इम्कान अपने इस्लाम को छुपाए रखता था और सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी छुपाने की तल्क़ीन फ़रमाते थे ताकि काफ़िरों से अज़िय्यत न पहुंचे।

जब मुसलमानों की ता'दाद तक़रीबन चालीस हुई तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि अब इस्लाम की तब्लीग़ खुल्लम खुल्ला और अ़लल ए'लान की जाए। पहले तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्कार फ़रमाया लेकिन जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत इसरार किया तो आप ने क़बूल फ़रमा लिया और सब लोगों को साथ ले कर मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ ले गए। **ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़बा शुरूअ़ फ़रमाया और येह सब से पहला ख़ुत़बा है जो इस्लाम में पढ़ा गया।** हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसी रोज़ इस्लाम लाए। ख़ुत़बे का शुरूअ़ होना था कि चारों त़रफ़ से मुशरिकीन मुसलमानों पर टूट पड़े।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अज़मतो शराफ़त मक्कए मुअज़्ज़मा में मुसल्लम थी इस के बा वुजूद आप को इस क़दर मारा कि पूरा चेहरा और कान व नाक सब लहू लुहान हो गए और ख़ून से भर गए और हर त़रह़ से आप को बहुत मारा यहां तक कि बेहोश हो गए ।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के क़बीलए बनू तमीम के लोगों को ख़बर हुई तो वोह आप को वहां से उठा कर लाए और किसी को भी येह उम्मीद नहीं थी कि मुशरिकीन की इस मार के बा'द आप ज़िन्दा बच सकेंगे । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के क़बीले के लोग मस्जिदे का'बा में आए और ए'लान किया कि अगर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस ह़ादिसे में इन्तिक़ाल कर गए तो हम उन के बदले में उ़त्बा बिन रबीआ़ को क़त्ल करेंगे कि उस ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मारने में बहुत ज़ियादा ह़िस्सा लिया था ।

शाम तक आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बे होश रहे और जब होश में आए तो सब से पहला लफ़्ज़ येह था कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है....? लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बहुत मलामत की, कि उन्ही के साथ रहने की वज्ह से येह मुसीबत पेश आई और दिन भर बे होश रहने के बा'द बात की तो सब से पहले उन्ही का नाम लिया । और सब से पहले उन का नाम क्यूं न लें कि उन के ख़ून के एक एक क़त़रे में सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत मोजज़न थी । कुछ लोग बद दिली के सबब और बा'ज़ लोग इस

ख़याल से उठ कर चले गए कि जब बोलने लगे हैं तो अब आप की जान बच जाएगी । जाते हुए लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए मोहतरमा हज़रते उम्मुल ख़ैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا (कि बा'द में वोह भी मुसलमान हुईं) उन से कह गए कि हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के खाने पीने के लिये किसी चीज़ का इन्तिज़ाम कर दें । वोह कुछ तय्यार कर के लाईं और खाने के लिये बहुत कहा मगर आशिक़े सादिक़ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वोही एक सदा थी कि मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या हाल है और उन पर क्या गुज़री ? आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा ने फ़रमाया कि मुझे कुछ नहीं मा'लूम कि उन का क्या हाल है ?

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि हज़रते उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन उम्मे जमील رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास जा कर दरयाफ़्त करो कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या हाल है ? वोह अपने साहिबज़ादे की इस बे ताबाना दरख़्वास्त को पूरी करने के लिये दौड़ी हुई उम्मे जमील رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गईं और सय्यिदुना मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाल दरयाफ़्त किया । वोह भी उस वक़्त तक अपने इस्लाम को छुपाए हुए थीं । उन्हों ने टाल दिया, कोई वाज़ेह जवाब नहीं दिया और कहा : अगर तुम कहो तो मैं चल कर तुम्हारे बेटे हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखूं कि उन का क्या हाल है ! उन्हों ने कहा कि हां चलो । हज़रते उम्मे जमील رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन के घर गईं और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की हालत देख कर बरदाश्त न कर सकीं बे तहाशा रोने लगीं ।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या हाल है ? हज़रते उम्मे जमील رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप की वालिदा की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि वोह सुन रही है । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि उन से न डरो । तो उम्मे जमील رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब ख़ैरो आफ़िय्यत हैं । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि इस वक़्त कहां हैं...? उन्हों ने कहा कि हज़रते अरक़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर तशरीफ़ रखते हैं ।

फ़रमाया : क़सम है ख़ुदाए ज़ुल जलाल की, कि मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं खाऊंगा जब तक कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की ज़ियारत नहीं कर लूंगा ।**

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए मोह़तरमा तो बहुत ज़ियादा बे क़रार थीं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ खा पी लें मगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम खा ली कि जब तक हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नहीं कर लूंगा कुछ नहीं खाऊंगा । तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा ने लोगों की आमदो रफ़्त के बन्द हो जाने का इन्तिज़ार किया ताकि ऐसा न हो कोई आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर फिर अज़िय्यत पहुंचा दे ।

जब रात का बहुत सा ह़िस्सा गुज़र गया और लोगों की आमदो रफ़्त बन्द हो गई तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को

उन की वालिदए मोह्तरमा ले कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ज़रते अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर पहुंचीं।

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लिपट गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी अपने आ़शिक़े सादिक़ से लिपट कर रोए और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालत देख कर सब रोने लगे।[1]

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, वग़ैरा)

इस वाक़िए से साफ़ ज़ाहिर है कि आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ायत दरजा मह़ब्बत थी और क्यूं न हो।

मुह़म्मद है मताए आ़लम ईजाद से प्यारा   पिदर मादर बरादर जानो माल औलाद से प्यारा

मुह़म्मद की मह़ब्बत दीने ह़क़ की शर्ते अव्वल है   इसी में हो गर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है

लश्करे उसामा को नहीं लौटा सकता

और ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीर फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैशे उसामा की तन्फ़ीज़ की जिस को हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अ़ह्दे मुबारक के आख़िर में शाम की त़रफ़ रवाना फ़रमाया था।

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق، فصل فی شجاعته الخ، ص ٣٨)

अभी येह लश्कर थोड़ी ही दूर पहुंचा था और मदीनए तय्यिबा के क़रीब मक़ामे ज़ी ख़शब ही में था कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस आलम से पर्दा फ़रमाया। येह ख़बर सुन कर अतराफ़े मदीना के अ़रब इस्लाम से फिर गए और मुर्तद हो गए। सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने मुज्तमअ़ हो कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه पर ज़ोर दिया कि आप उस लश्कर को वापस बुला लें इस वक़्त उस लश्कर का रवाना करना किसी तरह मस्लहत नहीं। मदीने के गिर्द तो अ़रब के तवाइफ़े कसीरा मुर्तद हो गए और लश्कर शाम को भेज दिया जाए ? इस्लाम के लिये येह नाज़ुक तरीन वक़्त था। हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात से कुफ़्फ़ार के हौसले बढ़ गए थे और उन की मुर्दा हिम्मतों में जान पड़ गई थी। मुनाफ़िक़ीन समझते थे कि अब खेल खेलने का वक़्त आ गया है। ज़ईफ़ुल ईमान दीन से फिर गए। मुसलमान एक ऐसे सदमे में शिकस्ता दिल और बे ताबो तवां हो रहे हैं जिस का मिस्ल दुन्या की आंख ने कभी नहीं देखा। उन के दिल घाइल हैं और आंखों से अश्क जारी हैं। खाना पीना बुरा मा'लूम होता है। ज़िन्दगी एक ना गवार मुसीबत नज़र आती है। उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जां नशीन को नज़्म क़ाइम करना, दीन का संभालना, मुसलमानों की हिफ़ाज़त करना, इरतिदाद के सैलाब को रोकना किस क़दर दुश्वार था। बा वुजूद इस के रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रवाना किये हुए लश्कर को वापस करना और मरज़ी मुबारक के ख़िलाफ़ जुरअत करना सिद्दीक़ सरापा सिद्क़

का राबित़ए नियाज़ मन्दी गवारा न करता था और इस को वोह हर मुश्किल से सख़्त तर समझते थे । इस पर सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم का इसरार कि लश्कर वापस बुला लिया जाए और ख़ुद ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का लौट कर आना और ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ करना कि क़बाइले अ़रब आमादए जंग और दरपए तख़्रीबे इस्लाम हैं और कार आज़्मा बहादुर मेरे लश्कर में हैं । उन्हें इस वक़्त रूम भेजना और मुल्क को ऐसे दिलावर मर्दाने जंग से ख़ाली कर देना किसी त़रह़ मुनासिब नहीं मा'लूम होता । येह ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये और मुश्किलात थीं ।

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने ए'तिराफ़ किया है कि उस वक़्त अगर ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह दूसरा होता तो हरगिज़ मुस्तक़िल न रहता और मसाइब व अफ़्कार का येह हुजूम और अपनी जमाअ़त की परेशान ह़ालत उसे मब्हूत कर डालती । मगर اَللہُ اَکْبَر ! ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाए सबात को ज़र्रा भर लग़्ज़िश न हुई और उन के इस्तिक़्लाल में बिल्कुल फ़र्क़ न आया ।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि अगर परंद मेरी बोटियां नोच कर खाएं तो मुझे येह गवारा है मगर हुज़ूरे अन्वर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मरज़िये मुबारक में अपनी राए को दख़्ल देना और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रवाना किये हुए लश्कर को वापस करना गवारा नहीं येह मुझ से नहीं हो सकता । चुनान्चे, ऐसी ह़ालत में आप ने लश्कर को रवाना फ़रमा दिया ।

इस से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हैरत अंगेज़ शुजाअ़त व लियाक़त और कमाले दिलेरी व जवां मर्दी के इलावा उन के तवक्कुले सादिक़ का भी पता चलता है। और दुश्मन भी इन्साफ़न येह कहने पर मजबूर होता है कि ख़ुदाए तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ख़िलाफ़त व जा नशीनी की आ'ला क़ाबिलिय्यत व अहलिय्यत हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाई थी।

अब येह लश्कर रवाना हुवा और जो क़बाइल मुर्तद होने के लिये तय्यार थे और येह समझ चुके थे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इस्लाम का शीराज़ा ज़रूर दरहम बरहम हो जाएगा और इस की सत्वत व शौकत बाक़ी न रहेगी। उन्हों ने देखा कि लश्करे इस्लाम रूमियों की सरकोबी के लिये रवाना हो गया। उसी वक़्त उन के ख़याली मन्सूबे ग़लत़ हो गए और उन्हों ने समझ लिया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अ़हदे मुबारक में इस्लाम के लिये ऐसा ज़बरदस्त नज़्म फ़रमा दिया है जिस से मुसलमानों का शीराज़ा दरहम बरहम नहीं हो सकता और वोह ऐसे ग़म व अन्दोह के वक़्त में भी इस्लाम की तब्लीग़ो इशाअ़त और इस के सामने अक़्वामे आ़लम को सरनिगूं करने के लिये एक मश्हूर व ज़बरदस्त क़ौम पर फ़ौजकशी करते हैं। लिहाज़ा येह ख़याल ग़लत़ है कि इस्लाम मिट जाएगा और इस में क़ुव्वत बाक़ी न रहेगी बल्कि अभी सब्र के साथ देखना चाहिये कि येह लश्कर किस शान से वापस होता है।

फ़ज़्ले इलाही से येह लश्करे ज़फ़र पैकर फ़त्ह़याब हुवा । रूमियों को हज़ीमत व शिकस्त हुई । जब येह फ़ातेह़ लश्कर वापस आया । उस वक़्त वोह तमाम क़बाइल जो मुर्तद होने का इरादा कर चुके थे इस नापाक क़स्द से बाज़ आए और इस्लाम पर सच्चाई के साथ क़ाइम हो गए ।

बड़े बड़े जलीलुल क़द्र साइबुर्राए सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم जो इस लश्कर की रवानगी के वक़्त निहायत शिद्दत से इख़्तिलाफ़ फ़रमा रहे थे अपनी फ़िक्र की ख़त़ा और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए मुबारक के साइब और उन के इल्म की वुस्अ़त के मो'तरिफ़ हुए ।[1] (सवानेहे करबला)

आज इबादत करने वाला कोई न होता

बैहक़ी व इब्ने अ़साकिर में है ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं **अगर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा मुक़र्रर न हुए होते तो रूए ज़मीन पर ख़ुदाए तआ़ला की इबादत बाक़ी न रह जाती** । इसी त़रह़ क़सम के साथ आप ने तीन बार फ़रमाया । लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : ऐ अबू हुरैरा !

---

١ . . . (سوانح کربلا، ص ۴۵، مکتبۃ المدینۃ) (الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، القسم الثانی، الباب الاول فی مناقب خلیفۃ رسول اللہ ابی بکر الصدیق۔۔۔، الفصل التاسع فی خصائصہ، ذکر شدۃ باسہ ثبات قلبہ۔۔۔الخ، ۱/۱۴۹، ۱۴۸، الجزء ۱، ملخصاً)

आप ऐसा क्यूं कह रहे हैं...? आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरे लश्कर मुक़र्रर कर के शाम की त़रफ़ रवाना फ़रमाया था और वोह अभी ज़ी ख़शब के मक़ाम पर थे कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया। इस ख़बर को सुन कर अत़राफ़े मदीना के अ़रब मुर्तद हो गए।

सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में आए और इस बात पर ज़ोर दिया कि उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर को वापस बुला लें। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

”وَالَّذِی لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ لَو جَرَّتِ الْکِلَابُ بِاَرْجُلِ اَزْوَاجِ النَّبِی صلی اللہ علیہ وسلم مَا رَدَدتُّ جَیْشًا وَجَّھَہ رَسُوْلُ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم“

या'नी क़सम है उस ज़ात की, कि जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाक बीवियों के पाउं कुत्ते पकड़ कर घसीटें तब भी मैं उस लश्कर को वापस नहीं बुला सकता जिस को अल्लाह के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रवाना फ़रमाया था और न मैं उस परचम को सरनिगूं करूंगा जिस को मेरे हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लहराया था।

पस हज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को आगे बढ़ने का हुक्म दिया। वोह रवाना हुए तो मुर्तद क़बीले दह्शत ज़दा हो गए। यहां तक कि वोह सल्तनते रूम की ह़द में पहुंच गए। त़रफ़ैन में जंग हुई मुसलमानों का लश्कर फ़त्ह़याब हो कर वापस हुवा तो इस त़रह़ इस्लाम का बोल बाला हो गया।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 51)

मह़बूबे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जो बे इन्तिहा और ग़ायत दरजा मह़ब्बत थी। इसी मह़ब्बत का येह असर है कि नाज़ुक वक़्त में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के ज़ोर डालने के बा वुजूद हज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर को वापस बुलाना और प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लहराए हुए झन्डे को सरनिगूं करना आप ने गवारा न किया। जिस का नतीजा येह हुवा कि दुश्मनों के ह़ौसले पस्त हो गए और इस्लाम का फिर से बोल बाला हो गया। **इसे यूं भी कहा जा सकता है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत ने इस्लाम को ज़िन्दए जावेद बना दिया।**

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، فصل فیما وقع فی خلافتہ، ص ۵۲) (تاریخ مدینۃ دمشق، عبد اللہ ویقال عتیق، ۳۰/۳۱۶)

मश्क़

(1) **सुवाल :** "हम उ़त्बा बिन रबीआ़ को क़त्ल करेंगे" सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बीले वालों ने येह किस मौक़अ़ पर और क्यूं कहा नीज़ इस वाक़िए़ से सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इश्क़े रसूल कैसे साबित होता है....?

(2) **सुवाल :** सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم लश्करे उसामा को वापस लौटाने का क्यूं मुत़ालबा कर रहे थे नीज़ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में क्या इरशाद फ़रमाया....?

(3) **सुवाल :** "आज इ़बादत करने वाला कोई न होता" येह किस का क़ौल है नीज़ इस ह़िकायत से सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान कैसे ज़ाहिर होती है....?

......इ़ल्म सीखने से आता है.....

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

"इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।" (المعجم الکبیر،ج۱۹،ص۵۱۱،الحدیث:۷۳۱۲)

मानेईने ज़कात

मुन्किरीन से जंग करूंगा

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल फ़रमाने पर बा'ज़ लोग तो इस्लाम के सारे अह़काम के मुन्किर हो कर मुर्तद हो गए और कुछ लोगों ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे। या'नी इस की फ़रज़िय्यत के मुन्किर हो गए और ज़कात की फ़रज़िय्यत चूंकि नस्से क़त़ई से साबित है तो इस के मुन्किर हो कर वोह भी मुर्तद हो गए। इसी लिये शारेह़ीने ह़दीस व फ़ुक़हाए किराम मानेईन ज़कात को भी मुर्तद्दीन में शुमार करते हैं।

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से जिहाद का इरादा फ़रमाया तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बा'ज़ दूसरे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने उन से कहा कि इस वक़्त मुन्किरीने ज़कात से जंग करना मुनासिब नहीं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! अगर वोह लोग एक रस्सी या बकरी का एक बच्चा भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में ज़कात दिया करते थे और अब उस के देने से इन्कार करेंगे तो मैं उन से जंग करूंगा।

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहाजिरीनो अन्सार को साथ ले कर आ'राब की त़रफ़ निकल पड़े और जब वोह भाग खड़े हुए तो

हज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को आप अमीरे लश्कर बना कर वापस आ गए उन्हों ने आ'राब को जगह जगह घेरा तो **अल्लाह** तआला ने उन्हें हर जगह फ़त्ह अ़ता फ़रमाई। **अब सहाबए किराम ख़ुसूसन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप की राए के सहीह होने का ए'तिराफ़ किया और कहा कि ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह तआला ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सीना खोल दिया है और उन्हों ने जो कुछ किया वोह ह़क़ है।**[1]

और वाक़िअ़तन भी येही है कि अगर उस वक़्त मानेईने ज़कात की सरकोबी न की जाती और उन्हें छूट दे दी जाती तो फिर कुछ लोग नमाज़ के भी मुन्किर हो जाते और बा'ज़ लोग रोज़े से भी इन्कार कर देते और कुछ लोग बा'ज़ दूसरी ज़रूरी चीज़ों का इन्कार कर देते तो इस्लाम अपनी शानो शौकत के साथ बाक़ी न रहता बल्कि खेल बन जाता और इस का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता।

बद मज़हबों का रद

मानेईने ज़कात और इन से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जिहाद के नतीजे में हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीर फ़रमाते हैं : "यहां से मुसलमानों को सबक़ लेना चाहिये कि हर हालत में ह़क़ की हिमायत और नाह़क़ की

---

۱ ... (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الامر بقتال الناس حتی یقولوا لا الہ الا اللہ ۔۔۔ الخ، الحدیث: ۳۲، ص ۳۲)(الریاض النضرۃ، ۱/ ۱۴۷)(تاریخ مدینۃ دمشق، باب ذکر بعث النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، ۲/ ۵۳)

मुख़ालफ़त ज़रूरी है और जो क़ौम नाहक़ की मुख़ालफ़त में सुस्ती करेगी वोह जल्द तबाह हो जाएगी। **आज कल बा'ज़ सादा लोह़ बातिल फ़िर्क़ों के रद करने को भी मन्अ़ करते हैं और कहते हैं कि इस वक़्त आपस की जंग मौक़ूफ़ करो। उन्हें ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के त़रीक़े अ़मल से सबक़ लेना चाहिये कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसे नाज़ुक वक़्त में भी बातिल की सर शिकनी में तवक़्क़ुफ़ न फ़रमाया। जो फ़िर्क़े इस्लाम को नुक़्सान पहुंचाने के लिये पैदा हुए हैं उन से ग़फ़्लत बरतना यक़ीनन इस्लाम की नुक़्सान रसानी है।**[1] (सवानेहे करबला)

इस वाक़िए़ से येह भी मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ कलिमा और नमाज़ मुसलमान होने के लिये काफ़ी नहीं बल्कि इस्लाम की सारी बातों को मानना ज़रूरी है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स इस्लाम के सारे अह़काम पर ईमान रखता हो लेकिन ज़रूरिय्याते दीन में से किसी एक बात का इन्कार करता हो तो वोह काफ़िर व मुर्तद है जैसे कि मानेईने ज़कात एक बात का इन्कार कर के काफ़िर व मुर्तद हुए। **نعوذ باللہ من ذلک**

और मुसैलिमा के साथी व मानेईने ज़कात के काफ़िर व मुर्तद होने से येह भी साबित हुवा कि "अ़रब में काफ़िर व मुर्तद न होंगे" येह कहना ग़लत़ है।

۱...(سوانح کربلا، ص۴۲، مکتبۃ المدینہ)

ग़लत़ इल्ज़ाम

राफ़िज़ी लोग ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि उन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाग़े फ़िदक को ग़स्ब कर लिया और ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को नहीं दिया। तो इस का जवाब येह है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते और जो कुछ छोड़ जाते हैं सब सदक़ा होता है। जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़दीस शरीफ़ मरवी है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "لَانُوْرَثُ مَاتَرَکْنَاہُ صَدَقَۃٌ" **या'नी हम गुरौहे अम्बिया किसी को अपना वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ जाते हैं वोह सब सदक़ा है।**[1] (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात, स. 550)

.....और **मुस्लिम शरीफ़** जिल्द दुवुम स. 91 पर है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल फ़रमा जाने के बा'द अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने चाहा कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के माल से अपना ह़िस्सा तक़्सीम करवाएं तो ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया :

"اَلَیْسَ قَدْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ و سلم لَانُوْرَثُ مَاتَرَکْنَاہُ صَدَقَۃٌ"

---

١ . . . (صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب فرض الخمس، الحدیث: ٣٠٩٣، ٢/٣٣٨) (صحیح مسلم، کتاب الجہاد و السیر، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم لانورث، الحدیث: ١٧٥٨، ص ٩٦٦)

या'नी क्या हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह नहीं फ़रमाया कि हम किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते, हम जो कुछ छोड़ जाएं वोह सब सदक़ा है।(1)

......और **बुख़ारी** जिल्द दुवुम स. 575 व मुस्लिम जिल्द दुवुम स. 90 में हज़रते मालिक बिन औस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मजमए सहाबा जिन में हज़रते अब्बास, हज़रते उस्मान, हज़रते अली, हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रते ज़ुबैर बिन अल अव्वाम और हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) मौजूद थे।

हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब को क़सम दे कर फ़रमाया : क्या आप लोग जानते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि हम किसी को वारिस नहीं बनाते, हम जो कुछ छोड़ें वोह सदक़ा है तो सब ने इक़रार किया कि हां हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा फ़रमाया है।(2)

इन अहादीसे करीमा के सहीह होने का सुबूत येह है कि जब हज़रते अली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िलाफ़त का ज़माना आया और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तर्का ख़ैबर और फ़िदक वग़ैरा इन के क़ब्ज़े में हुवा और फिर इन के बा'द हसनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا वग़ैरा के इख़्तियार में रहा **मगर इन में से किसी ने अज़वाजे मुतह्हरात, हज़रते अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और इन की औलाद को बाग़े फ़िदक वग़ैरा से हिस्सा न दिया लिहाज़ा मानना पड़ेगा**

١ . . . (صحیح مسلم، کتاب الجہاد والسیر، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم لا نورث، الحدیث: ۱۷۵۸، ص ۹۶۲)
٢ . . . (صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب فرض الخمس، الحدیث: ۳۰۹۴، ۲/۳۳۹)

कि नबी عَلَیْہِ السَّلَام के तर्के में विरासत जारी नहीं होती । इसी लिये हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बाग़े फ़िदक नहीं दिया, ना कि बुग़्ज़ो अ़दावत के सबब जैसा कि राफ़िज़ियों का इल्ज़ाम है और येह आयते करीमा ﴿وَوَرِثَ سُلَیْمٰنُ دَاوٗدَ﴾(1) या इस के इलावा कुरआने मजीद व ह़दीस शरीफ़ में जहां भी कहीं अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की विरासत का ज़िक्र है इस से इल्मे शरीअ़त व नबुव्वत ही मुराद है न कि दिरहमो दीनार ।

अ़लालत और वफ़ात

वाक़िदी और ह़ाकिम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا ने नक़्ल किया है ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बयान फ़रमाया कि वालिदे गिरामी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़लालत की इब्तिदा यूं हुई कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 7 जुमादल उख़्रा पीर के रोज़ ग़ुस्ल फ़रमाया इस रोज़ सर्दी बहुत ज़ियादा थी जो असर कर गई । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुख़ार आ गया और पन्दरह दिन तक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़लील रहे । इस दरमियान में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के लिये भी घर से बाहर तशरीफ़ नहीं ला सके । **आख़िरे कार ब ज़ाहिर इसी बुख़ार के सबब 63 साल की उ़म्र में 2 साल 2 माह से कुछ ज़ाइद उमूरे ख़िलाफ़त अन्जाम देने के बा'द 22 जुमादल उख़्रा 13 हिजरी**

---

1 . . . (سورۃ النمل، الآیۃ ۱۶، پ ۱۹)

को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात हुई और आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक पहलू में मदफ़ून हुए।(1)

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

......फ़ज़ाइले क़ुरआने करीम......

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

"येह क़ुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ उस की ज़ियाफ़त क़बूल करो। बेशक येह क़ुरआने मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अ़मल करे उस के लिये नजात है। येह ह़क़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े। इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कसरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहता है)। तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर ह़र्फ़ की तिलावत पर दस नेकियां अ़त़ा फ़रमाएगा। मैं नहीं कहता कि "الٓمٓ" एक ह़र्फ़ है बल्कि "**अलिफ़**" एक ह़र्फ़ "**लाम**" एक ह़र्फ़ और "**मीम**" एक ह़र्फ़ है।"

(المستدرك، الحديث:٢٠٨٤،ج٢،ص٢٥٦)

1 ...(تاریخ مدینۃ دمشق، عبد اللہ ویقال، ۳۰/۴۰۹)(الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الباء، فصل فی الصحابۃ، ص۵۸۷، ملتقطاً)

मश्क़

(1) **सुवाल :** हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कलिमा गो क़बाइल से क्यूं जिहाद फ़रमाया नीज़ येह किस नज़रियए अह्ले सुन्नत की ताईद करता है....?

(2) **सुवाल :** क्या मौजूदा दौर में भी बद मज़हबों का रद ज़रूरी है....?

(3) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बाग़े फ़िदक पर क्या मौक़िफ़ था, दलाइल से साबित कीजिये....?

(4) **सुवाल :** अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मीरास के मुतअ़ल्लिक़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का मौक़िफ़ दलाइल के साथ साबित कीजिये.....?

(5) **सुवाल :** अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मीरास के मुतअ़ल्लिक़ हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हसनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मौक़िफ़ बयान कीजिये....?

(6) **सुवाल :** ﴿وَوَرِثَ سُلَیْمٰنُ دَاوٗدَ﴾....मज़्कूरा आयते मुबारका ब ज़ाहिर अह्ले सुन्नत के मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ है....इस का क्या जवाब है....?

(7) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल कब और कैसे हुवा नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त कितना अ़र्सा रही....?

आप की करामतें

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कई करामतें ज़ाहिर हुई हैं जिन में से चन्द करामतों का ज़िक्र यहां किया जाता है।

खाने में बरकत...!

हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, इन्हों ने फ़रमाया कि एक बार हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अस्ह़ाबे सुफ्फ़ा में से तीन आदमियों को अपने घर लाए और उन को खाना खिलाने का हुक्म फ़रमा कर ख़ुद रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में चले गए यहां तक कि आप ने रात का खाना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के यहां खा लिया और बहुत ज़ियादा रात गुज़र जाने के बा'द अपने मकान पर तशरीफ़ लाए। उन की बीवी ने कहा कि मेहमानों के पास आने से आप को किस चीज़ ने रोक रखा ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि तुम ने अभी तक मेहमानों को खाना नहीं खिलाया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि मैं ने खाना पेश किया था मगर मेहमानों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बिग़ैर खाना खाने से इन्कार कर दिया। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने साह़िब ज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर सख़्त नाराज़ हुए और उन को बहुत बुरा भला कहा कि उस ने मुझ को मुत्तलअ़ क्यूं नहीं किया ? फिर खाना मंगवा कर मेहमानों के साथ खाने के लिये बैठ गए।

रावी का बयान है कि

"اَیْمُ اللّٰہِ مَا کُنَّا نَأْخُذُ مِنَ اللُّقْمَۃِ اِلَّا رَبَا مِنْ اَسْفَلِھَا اَکْثَرُ مِنْھَا"

"या'नी ख़ुदा की क़सम ! हम जो भी लुक़्मा उठाते उस के नीचे खाना इस से ज़ियादा हो जाता यहां तक कि हम सब शिकम सेर हो गए और जितना खाना पहले था उस से भी ज़ियादा बच रहा । हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुतअ़ज्जिब हो कर अपनी बीवी से फ़रमाया कि येह क्या मुआ़मला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ ज़ियादा नज़र आता है ? आप की बीवी ने क़सम खा कर कहा कि बिलाशुबा येह खाना पहले से तीन गुना ज़ियादा है । फिर वोह खाना उठा कर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गए सुब्ह़ तक खाना बारगाहे रिसालत में रहा ।

मुसलमानों और काफ़िरों के दरमियान एक मुआ़हदा हुवा था जिस की मुद्दत ख़त्म हो गई थी तो उस रोज़ सुब्ह़ के वक़्त एक लश्कर तय्यार किया गया जिस में बहुत काफ़ी आदमी थे । पूरी फ़ौज ने उस खाने को शिकम सेर हो कर खाया फिर भी उस बरतन में खाना कम नहीं हुवा ।(1) (बुख़ारी, जिल्द अव्वल, स. 5-6)

मेहमानों के खाने के बा'द पहले से भी खाने का तीन गुना ज़ियादा हो जाना और सुब्ह़ के वक़्त पूरी फ़ौज का उस खाने को शिकम सेर हो कर खाना फिर भी बरतन में खाने

---

۱ ... (صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب فی علامۃ النبوۃ فی الاسلام، الحدیث: ۳۵۸۱، ۲/۴۹۵)

का कम न होना येह ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़ीम करामत है ।

मां के पेट में क्या है...?

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे बाप ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मरज़े मौत में मुझे वसिय्यत करते हुए इरशाद फ़रमाया कि मेरी प्यारी बेटी ! मेरे पास जो कुछ माल था आज वोह माल वारिसों का हो चुका है। मेरी औलाद में तुम्हारे दो भाई अ़ब्दुर्रह़मान व मुह़म्मद हैं और तुम्हारी दो बहनें हैं। लिहाज़ा मेरे माल को तुम लोग क़ुरआने मजीद के फ़रमान के मुत़ाबिक़ तक़्सीम कर के अपना अपना ह़िस्सा ले लेना।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया कि अब्बा जान ! मेरी तो एक ही बहन बीबी अस्मा हैं येह मेरी दूसरी बहन कौन है ? **आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी सौतेली मां ह़बीबा बिन्ते ख़ारिजा जो ह़ामिला है उस के पेट में लड़की है वोही तुम्हारी दूसरी बहन है।** चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल फ़रमाने के बा'द आप के फ़रमान के मुत़ाबिक़ ह़बीबा बिन्ते ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पेट से लड़की (उम्मे कुल्सूम) ही पैदा हुई ।[1] (مؤطا امام محمد، باب النحلی، ص۳۴۸)

1...(مؤطا امام محمد، الحديث:٨٠٨، ١/٢٨٦)

इस ह़दीस शरीफ़ से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो करामतें साबित हुईं । **पहली करामत** येह कि वफ़ात से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बात का इ़ल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में इन्तिक़ाल कर जाऊंगा इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत के वक़्त येह फ़रमाया कि आज मेरा माल मेरे वारिसों का माल हो चुका है । **दूसरी करामत** येह साबित हुई है कि ह़ामिला के पेट में लड़की है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यक़ीन के साथ जानते थे इसी लिये ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया कि ह़बीबा बिन्ते ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो ह़ामिला है उस के पेट में लड़की है वोही तुम्हारी बहन है और इन दोनों बातों का इ़ल्म यक़ीनन ग़ैब का इ़ल्म है जो बेशक ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **दो अ़ज़ीमुश्शान करामतें** हैं ।

आप की ख़ुसूसिय्यात

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में बहुत सी ख़ुसूसिय्यात पाई जाती हैं जिन में से चन्द ख़ुसूसिय्यात को हम आप के सामने पेश करते हैं ।

चार अहम ख़ुसूसिय्यात

इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते इमाम शा'बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं । उन्हों ने फ़रमाया कि **ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर**

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **को ख़ुदाए** عَزَّوَجَلَّ **ने ऐसी चार ख़स्लतों से मुख़्तस फ़रमाया जिन से किसी को सरफ़राज़ नहीं फ़रमाया ।**

(**अव्वल**) आप का नाम सिद्दीक़ रखा और किसी दूसरे का नाम सिद्दीक़ नहीं ।

(**दुवुम**) आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ारे सौर में रहे ।

(**सोइम**) आप हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिजरत में रफ़ीक़े सफ़र रहे ।

(**चहारुम**) सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को हुक्म फ़रमाया कि आप सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم को नमाज़ पढ़ाएं और दूसरे लोग आप के मुक़्तदी बनें ।[1]

नस्ल दर नस्ल सहाबी

एक बहुत बड़ी ख़ुसूसिय्यत आप की येह भी है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सहाबी, आप के वालिद सहाबी, आप के बेटे अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सहाबी और इन के साहिबज़ादे अबू अ़तीक़ मुहम्मद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सहाबी **या'नी आप की चार नस्ल सहाबी हैं ।**[2]

दुआ है कि ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ हम सब को हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची ग़ुलामी अ़ता फ़रमाए और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । आमीन

---

١ . . . (تاریخ مدینة دمشق، عبد اللہ ویقال عتیق، ۳۰/۲۲۶)

٢ . . . (المعجم الکبیر، نسبة ابی بکر الصدیق واسمه، الحدیث: ۱۱، ۱/۵۴)

मश्क़

(1) **सुवाल :** खाने में बरकत वाली करामत मअ़ हवाला बयान कीजिये....?

(2) **सुवाल :** पेट में बच्ची की ख़बर देने वाली सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामत किस अ़क़ीदए अहले सुन्नत की मुअय्यिद है....?

(3) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की चार ख़ुसूसिय्यात बयान कीजिये नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर वालों में से किस किस को सहाबियत का शरफ़ हासिल हुवा.....?

मन्क़बत दर शाने सिद्दीक़े अक्बर

बरादरे आ'ला हज़रत, उस्ताज़े ज़मन, हज़रते मौलाना हसन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْمَنَّان अपने मजमूअ़ए कलाम "**ज़ौक़े ना'त**" में अफ़्ज़लुल बशर बा'दल अम्बिया, महबूबे हबीबे ख़ुदा, साहिबे सिद्क़ो सफ़ा, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ बिन अबू क़ुहाफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की शाने सदाक़त निशान में यूं रत्बुल्लिसान हैं :

★ बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का

है यारे ग़ार, महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

★ या इलाही ! रहम फ़रमा ! ख़ादिमे सिद्दीक़े अक्बर हूं

तेरी रहमत के सदक़े, वासिता सिद्दीक़े अक्बर का

★ रुसुल और अम्बिया के बा'द जो अफ़्ज़ल हो आलम से

येह आलम में है किस का मर्तबा, सिद्दीक़े अक्बर का

★ गदा सिद्दीक़े अक्बर का, ख़ुदा से फ़ज़्ल पाता है

ख़ुदा के फ़ज़्ल से हूं मैं गदा, सिद्दीक़े अक्बर का

★ ज़ईफ़ी में येह क़ुव्वत है ज़ईफ़ों को क़वी कर दें

सहारा लें ज़ईफ़ो अक़्विया सिद्दीक़े अक्बर का

★ हुए फ़ारूक़ो उस्मानो अ़ली जब दाख़िले बैअ़त

बना फ़ख़्रे सलासिल सिलसिला सिद्दीक़े अक्बर का

★ मक़ामे ख़्वाबे राहत चैन से आराम करने को

बना पहलूए महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

★ अ़ली हैं उस के दुश्मन और वोह दुश्मन अ़ली का है

जो दुश्मन अ़क़्ल का दुश्मन हुवा सिद्दीक़े अक्बर का

★ लुटाया राहे हक़ में घर कई बार इस महब्बत से

कि लुट लुट कर **हसन** घर बन गया सिद्दीक़े अक्बर का

अमीरुल मोमिनीन

हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

हक़ीक़त में कमाल व ख़ूबी वाला वोह शख़्स है जो दूसरों को भी कमाल व ख़ूबी वाला बना दे तो हमारे आक़ा व मौला जनाबे अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हक़ीक़त में कमाल व ख़ूबी वाले हैं। जिन्हों ने बे शुमार लोगों को कमाल व ख़ूबी वाला बना दिया और उन का येह फ़ैज़ हमेशा जारी रहेगा कि क़ियामत तक अपने जां निसारों को कमाल व ख़ूबी वाला बनाते रहेंगे।

और प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन लोगों को कमाल व ख़ूबी वाला बना दिया उन में से एक मश्हूरो मा'रूफ़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं जो कि अफ़्ज़लुल बशर बा'दल अम्बिया ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ में सब से अफ़्ज़ल हैं।

नामो नसब

आप का **नाम** उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ है। **कुन्यत** अबू ह़फ़्स और **लक़ब** फ़ारूके आ'ज़म है। आप के **वालिद** का नाम ख़त़्त़ाब

और **मां** का नाम हन्तमह है, जो हिशाम बिन मुग़ीरा की बेटी या'नी अबू जहल की बहन हैं।[1]

आठवीं पुश्त में आप का शजरए नसब सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के ख़ानदानी शजरे से मिलता है।** आप वाक़िअ़ए फ़ील के तेरह साल बा'द पैदा हुए।[2]

क़बूले इस्लाम

हज़रते उमर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه नबुव्वत के छटे साल सत्ताईस बरस की उ़म्र में इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस वक़्त इस्लाम क़बूल फ़रमाया जब कि चालीस मर्द और ग्यारह औ़रतें ईमान ला चुकी थीं और बा'ज़ उ़लमा का ख़याल है कि आप ने उन्तालीस मर्द और तेईस औ़रतों के बा'द इस्लाम क़बूल किया।[3] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

उ़मर से इस्लाम को इ़ज़्ज़त दे

तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस है कि सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुआ़ फ़रमाते थे।

या इलाहल आ़लमीन ! उ़मर बिन ख़त्ताब और अबू जह्ल बिन हिशाम में जो तुझे प्यारा हो उस से तू इस्लाम

١...(سیر اعلام النبلاء، ۲/۵۰۹)

٢...(تاریخ مدینہ دمشق، عمر بن خطاب، ۴۴/۱۲)

٣...(تاریخ الخلفا، ص ۸۶)(اسد الغابۃ، ۴/۱۵۷)

को इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा।[1]

और **हाकिम** की रिवायत में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई

"اَللّٰھُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّۃً"

या'नी या अल्लाह ! ख़ास त़ौर से उ़मर बिन ख़त़्त़ाब को मुसलमान बना कर इस्लाम को इ़ज़्ज़त व क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमा।[2]

तो **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ बारगाहे इलाही में मक़्बूल हो गई और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस्लाम से मुशर्रफ़ हो गए।

आप के क़बूले इस्लाम का वाक़िआ़

दिन ब दिन मुसलमानों की ता'दाद बढ़ते हुए देख कर एक रोज़ कुफ़्फ़ारे मक्का जम्अ़ हुए और सब ने येह त़ै किया कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़त्ल कर दिया जाए। (**معاذ اللّٰہ رب العالمین**) मगर सुवाल पैदा हुवा कि कौन क़त्ल करे....? मज्मअ़ में ए'लान हुवा कि है कोई बहादुर जो मुह़म्मद को क़त्ल कर दे ? (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) इस ए'लान पर पूरा मज्मअ़ तो ख़ामोश रहा मगर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि मैं इन को क़त्ल करूंगा। लोगों ने कहा : बेशक तुम ही इन को क़त्ल कर सकते हो।

---

١ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص ۔۔ الخ، الحدیث: ۳۷۰۱، ۵/۳۸۳)

٢ . . . (المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب عن لبس الدیباج ۔ الخ، الحدیث: ۴۵۴۱، ۴/۳۴)

फिर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और तल्वार लटकाए हुए चल दिये। इसी ख़याल में जा रहे थे कि एक साहिब क़बीलए ज़हरा के जिन का नाम हज़रते नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बताया जाता है और बा'ज़ लोगों ने दूसरों का नाम लिखा है। बहर हा़ल उन्हों ने पूछा कि ऐ उ़मर ! कहां जा रहे हो ? कहा कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़त्ल करने जा रहा हूं। हज़रते नुऐ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि इस क़त्ल के बा'द तुम बनी हाशिम और बनी ज़हरा से किस त़रह़ बच सकोगे ? वोह तुम्हें उन के बदले में क़त्ल कर देंगे। इस बात को सुन कर वोह बिगड़ गए और कहने लगे : मा'लूम होता है कि तुम ने भी अपने बाप दादा का दीन छोड़ दिया है, तो लाओ मैं पहले तुझी को निपटा दूं। येह कह कर तल्वार खींच ली और हज़रते नुऐ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी येह कहा कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं और अपनी तल्वार संभाली।

अ़न क़रीब दोनों त़रफ़ से तल्वार चलने को थी कि हज़रते नुऐ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि तू पहले अपने घर की ख़बर ले। **तेरी बहन फ़ाति़मा बिन्ते ख़त्ताब और बहनोई सई़द बिन ज़ैद** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) **दोनों अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर मुसलमान हो चुके हैं।** येह सुन कर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बे इन्तिहा ग़ुस्सा पैदा हुवा। वोह वहीं से पलट पड़े और सीधे अपनी बहन के घर पहुंचे।

वहां ह़ज़रते ख़ुबाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़ा बन्द किये हुए उन दोनों मियां बीवी को क़ुरआने मजीद पढ़ा रहे थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरवाज़ा खोलने के लिये कहा। उन की आवाज़ सुन कर ह़ज़रते ख़ुबाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर के एक ह़िस्से में छुप गए बहन ने दरवाज़ा खोला। आप घर में दाख़िल हुए और पूछा : तुम लोग क्या कर रहे थे ? और येह आवाज़ किस की थी ? आप के बहनोई ने टाल दिया और कोई वाज़ेह़ जवाब नहीं दिया। कहने लगे : मुझे मा'लूम हुवा है कि तुम लोग अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिये हो। बहनोई ने कहा : हां बाप दादा का दीन बात़िल है और दूसरा दीन ह़क़ है। येह सुनना था कि बे तह़ाशा टूट पड़े उन की दाढ़ी पकड़ कर खींची और ज़मीन पर पटख़ कर ख़ूब मारा। उन की बहन छुड़ाने के लिये दौड़ीं तो उन के मुंह पर एक घूंसा इतनी ज़ोर से मारा कि वोह ख़ून से तरबतर हो गईं।

आख़िर वोह भी ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की बहन थीं कहने लगीं कि ऐ उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम को इस वज्ह से मार रहे हो कि हम मुसलमान हो गए हैं। **कान खोल कर सुन लो कि तुम मार मार कर हमारे ख़ून का एक एक क़त़रा निकाल लो येह हो सकता है लेकिन हमारे दिल से ईमान निकाल लो येह हरगिज़ नहीं हो सकता** और आप की बहन ने कहा कि **मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के बन्दे और उस के रसूल हैं। बेशक हम लोग मुसलमान हो गए हैं। तुझ से जो हो सके तू कर ले।**

बहन के जवाब और उन को ख़ून से तर बतर देख कर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ग़ुस्सा ठन्डा हुवा।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि अच्छा मुझे वोह किताब दो जो तुम लोग पढ़ रहे थे ताकि मैं भी उस को पढ़ूं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहन ने कहा कि तुम नापाक हो और इस मुक़द्दस किताब को पाक लोग ही हाथ लगा सकते हैं। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हर चन्द इसरार किया मगर वोह बिग़ैर ग़ुस्ल के देने को तय्यार न हुई। आख़िर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ग़ुस्ल किया फिर किताब ले कर पढ़ी, उस में सूरए ता़हा लिखी हुई थी उस को पढ़ना शुरूअ़ किया। जिस वक़्त इस आयते करीमा पर पहुंचे।

﴿اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ﴾ (١)

या'नी बेशक मैं **अल्लाह** हूं मेरे इलावा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी इ़बादत करो और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम करो।

तो हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहने लगे कि मुझे मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले चलो। जिस वक़्त हज़रते ख़ुबाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह बात सुनी तो आप बाहर निकल आए और कहा कि **ऐ उ़मर ! मैं तुम को ख़ुश ख़बरी देता हूं कि कल जुमे'रात की शब में, सरकारे अक़्दस** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने दुआ़ मांगी थी कि या इलाहल आ़लमीन ! उ़मर और अबू जहल में जो तुझे मह़बूब व प्यारा हो उस से इस्लाम को कुव्वत अ़ता फ़रमा।**

١...(سورۂ طٰہٰ، الآیۃ ١٤)

मा'लूम होता है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ तुम्हारे ह़क़ में क़बूल हो गई ।

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त सफ़ा पहाड़ी के क़रीब ह़ज़रते अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे । ह़ज़रते ख़ुबाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को साथ ले कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने के इरादे से चले । ह़ज़रते अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और कुछ दूसरे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ह़िफ़ाज़त और निगरानी के लिये बैठे हुए थे । ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को देख कर फ़रमाया कि उ़मर आ रहे हैं, अगर **अल्लाह** तआ़ला को इन की भलाई मन्ज़ूर है तब तो येह मेरे हाथ से बच जाएंगे और अगर इन की निय्यत कुछ और है तो इस वक़्त उन का क़त्ल करना बहुत आसान है ।

इसी दरमियान में आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर इन ह़ालात के बारे में वह़ी नाज़िल हो चुकी थी सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मकान से बाहर तशरीफ़ ला कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दामन और उन की तल्वार पकड़ ली और फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! क्या येह फ़साद तुम उस वक़्त तक बरपा करते रहोगे जब तक कि तुम पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत़ न हो जाए ।"

येह सुनते ही ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा :

"اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاَنَّکَ عَبْدُ اللہِ وَرَسُوْلُہٗ"

या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।[1]

इस त़रह़ **अल्लाह** के मह़बूब प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में मक़्बूल हुई।

आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان फ़रमाते हैं :

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा

दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद

और फ़रमाते हैं :

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया

बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद

चले थे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** के मह़बूब प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़त्ल करने के लिये (مَعَاذَ اللہ) मगर ख़ुद ही क़तीले तैग़े अबरूए मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हो गए।

---

١ . . . (اتحاف الخیرۃ المھرۃ، کتاب المناقب، فضائل عمر بن خطاب، ۹/۲۲۱)

شد غلامے کہ آپ جو آرد
آپ جو آمد و غلام ببرد

इस वाक़िए से येह बात वाज़ेह तौर पर मा'लूम हुई कि इस्लाम बज़ोरे शमशीर नहीं फैला। देखिये इस्लाम क़बूल करने वाले के हाथ में शमशीर है और इस्लाम फैलाने वाले का हाथ शमशीर से ख़ाली है।

फ़ारूक़ का लक़ब

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब मैं कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया तो मेरे इस्लाम क़बूल करने की ख़ुशी में उस वक़्त जितने मुसलमान हज़रते अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर में मौजूद थे उन्हों ने इतनी ज़ोर से ना'रए तक्बीर बुलन्द किया कि इस को मक्के के सब लोगों ने सुना।

मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम हक़ पर नहीं हैं ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्यूं नहीं ? या'नी बेशक हम हक़ पर हैं। इस पर मैं ने अ़र्ज़ किया : फिर येह पोशीदगी और पर्दा क्यूं है ? इस के बा'द हम सब मुसलमान उस घर से दो सफ़ें बन कर निकले, एक सफ़ में हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे और दूसरी सफ़ में मैं था और इसी तरह हम सब सफ़ों की शक्ल में मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। कुफ़्फ़ारे

कु़रैश ने मुझे और हज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब मुसलमानों के गुरौह के साथ देखा तो उन को बे इन्तिहा मलाल हुवा।

उस रोज़ सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने हज़रते उ़मर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **को फ़ारूक़ का लक़ब अ़ता फ़रमाया ।** इस लिये कि इस्लाम ज़ाहिर हो गया और ह़क़ व बाति़ल के दरमियान फ़र्क़ वाज़ेह़ हो गया।[1]

फ़ारिक़े ह़क़्क़ो बाति़ल इमामुल हुदा

तेग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

इज़्हारे इस्लाम का जज़्बा

हज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब मैं मुसलमान हो गया तो इस के बा'द अपने मामूं अबू जह्ल बिन हिशाम के पास पहुंचा। अबू जह्ल ख़ानदाने कु़रैश में बहुत बा असर समझा जाता था और उस को भी रईसे कु़रैश की हैसिय्यत हा़सिल थी।

मैं ने उस के दरवाज़े की कुन्डी खटखटाई। उस ने अन्दर से पूछा : कौन है ? **मैं ने कहा मैं उ़मर हूं और मैं तुम्हारा दीन छोड़ कर मुसलमान हो गया हूं।** उस ने कहा : उ़मर ! ऐसे कभी मत करना मगर मेरे डर के सबब बाहर नहीं निकला बल्कि अन्दर से दरवाज़ा बन्द

---

1 ... (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، ص ۹۰)(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث: ۳۵۷۳۷، ۶/۲۴۷، حصہ ۱۲)

कर लिया। मैं ने कहा : येह क्या त़रीक़ा है...? मगर उस ने कोई जवाब नहीं दिया और न दरवाज़ा खोला। मैं इसी त़रह़ देर तक बाहर खड़ा रहा। फिर वहां से क़ुरैश के एक दूसरे सरदार और बा असर शख़्स के पास पहुंचा। मैं ने उस को पुकारा। वोह निकला तो जो बात मैं ने अपने मामूं अबू जह्ल से कही थी कि मैं मुसलमान हो गया हूं। वोही बात उस से भी कही। तो उस ने भी कहा कि ऐसा मत करना। फिर मेरे ख़ौफ़ से घर के अन्दर दाख़िल हो कर दरवाज़ा बन्द कर लिया।

मैं ने अपने दिल में कहा : येह क्या मुआ़मला है कि मुसलमान मारे जाते हैं और मैं नहीं मारा जाता। कोई मुझ से कुछ तआ़रुज़ नहीं करता। मेरी येह बात सुन कर एक शख़्स ने कहा कि तुम अपना इस्लाम और अपना दीन इस त़रह़ ज़ाहिर करना चाहते हो? मैं ने कहा कि हां! मैं इसी त़रह़ ज़ाहिर करूंगा। उस ने कहा : वोह देखो पथ्थर के पास कुछ लोग बैठे हुए हैं, उन में फ़ुलां शख़्स ऐसा है कि अगर उस से तुम कुछ राज़ की बात कहो तो वोह फ़ौरन ए'लान कर देगा। उस से अपने इस्लाम लाने का वाक़िआ़ बयान कर दो हर जगह ख़बर हो जाएगी। एक एक आदमी के घर जाने की ज़रूरत नहीं। मैं वहां पहुंचा और उस से अपने इस्लाम क़बूल करने का ज़ाहिर किया। उस ने कहा : क्या वाक़ेई तुम मुसलमान हो चुके हो...? मैं ने कहा : हां बेशक मैं मुसलमान हो चुका हूं। येह सुनते ही उस ने बुलन्द आवाज़ से ए'लान किया कि ऐ लोगो! उमर बिन ख़त्ताब हमारे दीन से निकल गया।

येह सुनते ही इधर उधर जो मुशरिकीन बैठे हुए थे मुझ पर टूट पड़े । फिर देर तक मार पीट होती रही । शोरो ग़ुल की आवाज़ मेरे मामूं अबू जह्ल ने सुनी उस ने पूछा : क्या मुआ़मला है...? लोगों ने कहा कि उ़मर मुसलमान हो गया है । मेरा मामूं अबू जह्ल एक पथ्थर पर चढ़ा और लोगों से कहा कि मैं ने अपने भांजे को पनाह दे दी । येह सुनते ही जो लोग मुझ से उलझ रहे थे । अलग हो गए मगर येह बात मुझे बहुत ना गवार हुई कि दूसरे मुसलमानों से मार पीट हो और मुझ को पनाह दे दी जाए ।

मैं अबू जह्ल के पास फिर पहुंचा और कहा : "جَوَارُکَ رُدَّعَلَيْکَ" या'नी तेरी पनाह मैं तुझे वापस करता हूं । मुझे तेरी पनाह की ज़रूरत नहीं । फिर कुछ दिनों तक मार पीट का सिलसिला जारी रहा यहां तक कि ख़ुदाए तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा अ़ता फ़रमाया ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

इस्लाम की शानो शौकत में इज़ाफ़ा

हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है । वोह फ़रमाते हैं कि **हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुसलमान होना इस्लाम की फ़त्ह थी । इन की हिजरत नुस्रते इलाही थी और इन की ख़िलाफ़त रह़मते ख़ुदावन्दी थी ।**

---

۱ . . . (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، ص ۸۹) (تاریخ مدینة دمشق، عمر بن خطاب، ۳۲/۴۴)

हम में से किसी की येह हिम्मत व ता़क़त नहीं थी कि हम **बैतुल्लाह शरीफ़** के पास नमाज़ पढ़ सकें **मगर जब ह़ज़रते उ़मर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **मुसलमान हो गए तो इन्हों ने मुशरिकीन से इस क़दर जंगो जिदाल किया कि उन्हों ने आ़जिज़ आ कर मुसलमानों का पीछा छोड़ दिया तो हम बैतुल्लाह शरीफ़ के पास इत़मीनान से अ़लानिया नमाज़ पढ़ने लगे ।**(1)

इस्लाम का सब से पहले ए'लान

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि जिस ने सब से पहले अपना इस्लाम अ़लल ए'लान ज़ाहिर किया वोह ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।(2)

......और ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि इन्हों ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ईमान लाए तब इस्लाम ज़ाहिर हुवा । या'नी इस से पहले लोग अपना इस्लाम क़बूल करना ज़ाहिर नहीं करते थे ।

इन के ईमान लाने के बा'द लोगों को इस्लाम की त़रफ़ खुल्लम खुल्ला बुलाया जाने लगा और हम बैतुल्लाह शरीफ़ के पास मजलिसें क़ाइम करने, इस का अ़लानिया त़वाफ़ करने, काफ़िरों से बदला लेने और उन का जवाब देने के क़ाबिल हो गए ।(3)

۱...(اسد الغابة، عمر بن خطاب، ۴/۱۶۳)

۲...(المعجم الكبير، الحديث: ۱۰۸۹۰، ۱۱/۱۳)

۳...(الطبقات الكبرى، اسلام عمر، ۳/۲۰۴)

मश्क़

(1) **सुवाल :** हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नसब नामा बयान कीजिये नीज़ आप का नसब कितने वासित़ों से सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से शरफ़ पाता है....?

(2) **सुवाल :** हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस साल ईमान लाए, नीज़ आप की ईमान यावरी के लिये सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या दुआ़ फ़रमाई....?

(3) **सुवाल :** हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ईमान लाने का वाक़िआ़ मुफ़स्सल ज़िक्र कीजिये.....?

(4) **सुवाल :** हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "फ़ारूक़" का लक़ब किस ने, कब और क्यूं दिया....?

(5) **सुवाल :** हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ईमान लाने से इस्लाम को क्या क्या फ़वाइद ह़ासिल हुए मज़्कूरा बाब के तह़्त बित्तरतीब ज़िक्र कीजिये....?

आप की हिजरत

अ़लल ए'लान हिजरत

हज़रते उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हिजरत भी बे मिसाल है। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इलावा हम किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानते जिस ने अ़लानिया हिजरत की हो।

जब हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हिजरत की निय्यत से निकले तो आप ने अपनी तल्वार गले में लटकाई और कमान कन्धे पर और तरकश से तीर निकाल कर हाथ में ले लिया। फिर बैतुल्लाह शरीफ़ के पास हाज़िर हुए। वहां बहुत से अशराफ़े कुरैश बैठे हुए थे। आप ने इत्मीनान से का'बा शरीफ़ का तवाफ़ किया। फिर बहुत इत्मीनान से मक़ामे इब्राहीम के पास दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी।

फिर अशराफ़े कुरैश की जमाअ़त के पास आ कर एक एक शख़्स से अलग अलग फ़रमाया : "شَاهَتِ الْوُجُوْہُ" या'नी तुम लोगों के चेहरे बद शक्ल हो जाएं, बिगड़ जाएं और तुम्हारा नास हो जाए। इस के बा'द फ़रमाया :

"مَنْ اَرَادَاَنْ تَثْكَلَهٗ اُمُّهٗ وَيَتَمَّ وَلَدُهٗ وَتُرْمِلَ زَوْجَتُهٗ فَلْيَلْقَنِىْ وَرَاءَ هٰذَا الْوَادِىْ"

या'नी जो शख़्स कि अपनी मां को बे औलाद, अपने बच्चों को यतीम और अपनी बीवी को बेवा बनाने का इरादा रखता हो तो वोह उस वादी के उस तरफ़ आ कर मेरा मुक़ाबला करे।

आप के इस त़रह़ ललकारने के बा वुजूद उन अशराफ़े क़ुरैश में से किसी माई के लाल की हिम्मत न हुई कि वोह आप का पीछा करता । (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 79)(1)

ह़ज़रते बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हमारे पास मदीनए त़य्यिबा में सब से पहले हिजरत कर के ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए । फिर ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के बा'द ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीस सुवारों के साथ तशरीफ़ लाए । हम ने उन से पूछा कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरादा क्या है....? उन्हों ने फ़रमाया कि वोह पीछे तशरीफ़ लाएंगे ।

तो आप के बा'द सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाए । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे । (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)(2)

ग़ज़वात में शिर्कत

ह़ज़रते इमाम नववी फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ

١... (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، ص ٩١) (کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث: ٣٥٧٩١، ٢/٢٥٧، الجزء ١٢)

٢... (اسد الغابۃ، ٤/١٦٤) (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، ص ٩٠)

तमाम गज़वात में शरीक रहे, और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह बहादुर हैं कि गज़्वए उहुद में जब कि जंग का नक़्शा बदल गया और मुसलमानों में अफ़रा तफ़री पैदा हो गई तो उस हालत में भी आप साबित क़दम रहे । (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)(1)

आप का हुल्या

हज़रते ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग गन्दुमी था । आप के सर के बाल ख़ौद पहनने की वज्ह से गिर गए थे । क़द आप का लम्बा था । मज्मअ़ में आप का सर दूसरे लोगों के सरों से ऊंचा मा'लूम होता था । देखने में ऐसा महसूस होता था कि आप किसी जानवर पर सुवार हैं ।

और अ़ल्लामा वाक़िदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग जो लोग गन्दुमी बतलाते हैं उन्हों ने क़हत़ के ज़माने में आप को देखा होगा । इस लिये कि उस ज़माने में ज़ैतून का तेल इस्ति'माल करने के सबब रंग आप का गन्दुमी हो गया था ।(2)

......और इब्ने सा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत की है कि हज़रते इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अपने बाप हज़रते उमर फ़ारूक़े

١...(تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، ص ۹۱)
٢...(تاریخ مدینۃ دمشق، عمر بن خطاب، ۴۴/۱۸)

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्या इस त़रह़ बयान किया है कि आप का रंग सुर्ख़ी माइल सफ़ेद था। आख़िरी उ़म्र में सर के बाल झड़ गए थे और बुढ़ापे के आसार ज़ाहिर थे।[1]

.....और इब्ने रजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत की है। उन्हों ने फ़रमाया कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ त़वीलुल क़ामत और मोटे बदन के आदमी थे। सर के बाल बहुत ज़ियादा झड़े हुए थे। रंग बहुत गोरा था। जिस में सुर्ख़ी झलकती थी। आप के गाल अन्दर को धंसे हुए थे। मूंछों के कनारे का ह़िस्सा बहुत लम्बा था और इन के अत़राफ़ में सुर्ख़ी थी।[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म और अह़ादीसे करीमा

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत में बहुत सी ह़दीसें वारिद हैं। चुनान्चे,

---

١...(الطبقات الکبری، ذکر ہجرۃ عمر بن خطاب، ۳/۲۴۷)

٢...(تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۳)(سیر اعلام النبلاء، عمر بن خطاب، ۲/۵۰۹)

(1) उ़मर नबी होता

तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस है : सरकारे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "لَوْ كَانَ بَعْدِیْ نَبِیٌّ لَكَانَ عُمَرَبْنَ الْخَطَّاب" **या'नी अगर मेरे बा'द नबी होते तो उ़मर होते ।** (मिश्कात, स. 558)[1]

سُبْحَانَ الله येह है मर्तबा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का कि अगर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन न होते तो आप नबी होते । इस ह़दीस शरीफ़ में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की फ़ज़ीलत का अ़ज़ीमुश्शान बयान है ।

(2) शयात़ीन भाग जाते हैं

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اِنِّیْ لَاَ نْظُرُاِلٰی شَیَاطِیْنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ قَدْ فَرُّوْا مِنْ عُمَرَ" या'नी मैं बिलाशुबा निगाहे नबुव्वत से देख रहा हूं कि **जिन्न के शैत़ान भी और इन्सान के शैत़ान भी दोनों मेरे उ़मर के ख़ौफ़ से भागते हैं ।** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (मिश्कात शरीफ़, स. 558)[2]

---

١ ...(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، الحدیث:۳۷۰۶، ۵/۳۸۵)

٢ ...(مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب عمر رضی اللہ عنہ، الفصل الثانی،، الحدیث:۶۰۴۹، ۲/۴۲۰)

येह रो'ब व दबदबा है हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का कि चाहे जिन्न का शैत़ान हो या इन्सान का दोनों इन के डर से भाग जाते हैं।

(3) ह़क़ उ़मर के साथ

मदारिजुन्नबुव्वह जिल्द दुवुम, स. 426 में है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि

"عمر با من ست و من با عمرم و حق با عمر ست ہر جا کہ باشد"

या'नी उ़मर मुझ से हैं और मैं उ़मर से हूं और उ़मर जिस जगह भी होते हैं ह़क़ उन के साथ होता है। رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

(4) ह़ज़रते उ़मर का कमाले ईमान

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से **बुख़ारी व मुस्लिम** में रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं सो रहा था तो ख़्वाब देखा कि लोग मेरे सामने पेश किये जा रहे हैं और मुझ को दिखाए जा रहे हैं। वोह सब कुर्ते पहने हुए थे। जिन में से कुछ लोगों के कुर्ते ऐसे थे जो सिर्फ़ सीने तक थे और बा'ज़ लोगों के कुर्ते इस से नीचे थे। फिर उ़मर बिन ख़त़्त़ाब को पेश किया गया जो इतना लम्बा कुर्ता पहने हुए थे कि ज़मीन पर घसीटते हुए चलते थे।

लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस ख़्वाब की ता'बीर क्या है ? हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दीन । (मिश्कात शरीफ़, स. 557)[1]

इस ह़दीस शरीफ़ में इस बात का वाज़ेह़ बयान है कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दीनदारी और तक़्वा शिआ़री में बहुत बढ़े हुए थे ।

(5) ज़बान व क़ल्ब पर ह़क़

तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اِنَّ اللّٰہَ جَعَلَ الْحَقَّ علٰی لِسَانِ عُمَرَ وَ قَلْبِہٖ"

या'नी अल्लाह तआ़ला ने उ़मर की ज़बान और क़ल्ब पर ह़क़ को जारी फ़रमा दिया है ।[2] (मिश्कात शरीफ़, स. 557)

मत़लब येह है कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा ह़क़ ही बोलते हैं । इन के क़ल्ब और ज़बान पर बात़िल कभी जारी नहीं होता ।

(6) आप से अ़दावत का अन्जाम

त़बरानी औसत़ में ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

١ ...(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، الحدیث: ۳۶۹۱، ۲/۵۲۸)

٢ ...(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص ۔۔ الخ، الحدیث: ۳۷۰۲، ۵/۳۸۳)

"مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ"

या'नी जिस शख़्स ने उ़मर से दुश्मनी रखी उस ने मुझ से दुश्मनी रखी । और जिस ने उ़मर से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और ख़ुदाए तआ़ला ने अ़रफ़ा वालों पर उ़मूमन और उ़मर पर ख़ुसूसन फ़ख़्रो मुबाहात की है । जितने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام दुन्या में मबऊ़स हुए, हर नबी की उम्मत में एक मुह़द्दस ज़रूर हुवा है और अगर कोई मुह़द्दस मेरी उम्मत में है तो वोह उ़मर हैं । सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुह़द्दस कौन होता है ! हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस की ज़बान से मलाइका बात करें वोह मुह़द्दस होता है ।[1] رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 81)

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र

उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

(7) इस उम्मत के मुह़द्दस

.....और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

١...(المعجم الاوسط، من اسمه محمد، الحديث:٦٧٢٦، ١٠٢/٥)

”وَلَقَدْ كَانَ فِيْمَا قَبْلَكُم مِنَ الْاُمَمِ مُحَدَّثُوْنَ فَاِنْ يَكُ فِيْ اُمَّتِيْ اَحَدٌ فَاِنَّه عُمَرُ“

या'नी तुम से पहले उम्मतों में मुह़द्दस हुए हैं । अगर मेरी उम्मत में कोई मुह़द्दस है तो वोह उ़मर है ।[1] (मिश्कात शरीफ़, स. 556)

(8) दुन्या को ठुकरा दिया

ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास दुन्या नहीं आई और न उन्हों ने उस की ख़्वाहिश व तमन्ना फ़रमाई मगर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास दुन्या बहुत आई लेकिन उन्हों ने उसे क़बूल नहीं किया बल्कि ठुकरा दिया ।[2]

बेशक ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास दुन्या आई कि इन के ज़मानए ख़िलाफ़त में बहुत ममालिक फ़त्ह़ हुए और बे शुमार शह्रों पर क़ब्ज़ा हुवा जहां से बे इन्तिहा माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा मगर आप फ़क़ीराना ज़िन्दगी ही गुज़ारते थे । आप ही के ज़मानए ख़िलाफ़त में शह्र मदाइन फ़त्ह़ हुवा और वहां से इस क़दर माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा कि इस से पहले किसी शह्र के फ़त्ह़ होने पर नहीं ह़ासिल हुवा था । शह्रे मदाइन के माले ग़नीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि इस शह्र के फ़त्ह़ करने वाले लश्कर के सिपाही साठ हज़ार थे । बैतुल माल का पांचवां ह़िस्सा निकालने के बा'द हर सिपाही को

١...(مشكاة المصابيح، كتاب المناقب والفضائل، باب مناقب عمر، الحديث: ٦٠٣٥، ٢/٤٢٠)

٢...(تاريخ الخلفاء ص ٩٥)(تاريخ مدينة دمشق، عمر بن خطاب، ٢٨٧/٤٤)

बारह हज़ार दिरहम नक़्द मिला था और येह माल किसरा बादशाह के उस फ़र्श के इलावा था जो सोने चांदी और जवाहिरात से बना हुवा था। जिस को मख़्सूस दरबारों में किसरा बादशाह के लिये बिछाया जाता था। येह फ़र्श लश्कर की इजाज़त से हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में भेज दिया गया इस फ़र्श की क़ीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि इस के एक बालिश्त मरबअ़ टुकड़े की क़ीमत हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बीस हज़ार की रक़म मिली थी। तो इस त़रह़ हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास दुन्या आती थी मगर आप हमेशा उसे ठुकराते रहे।

.....हज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तह़रीर फ़रमाया कि लोगों को उन की तनख़्वाहें और इस के साथ अ़तिय्यात के त़ौर पर भी माल तक़्सीम कर दो। उन्हों ने आप को लिखा कि मैं ने ऐसा ही किया लेकिन इस के बा वुजूद अभी माल बहुत ज़ियादा मौजूद है। **हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को तह़रीर फ़रमाया कि कुल माल, माले ग़नीमत है जो ख़ुदाए तआ़ला ने मुसलमानों को दिया है लिहाज़ा वोह सब माल उन्हीं पर तक़्सीम कर दो। वोह माल उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या इस की औलाद का नहीं।**[1]

---

[1] ...(تاریخ الخلفاء،عمر بن خطاب،ص ۱۱۴)

मश्क़

(1) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस शान से हिजरत फ़रमाई नीज़ इस मौक़अ़ पर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को आप ने क्या फ़रमाया....?

(2) **सुवाल :** मदीनए मुनव्वरा किस तरतीब से सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हिजरत कर के पहुंचे....?

(3) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्या मुबारका बयान फ़रमाएं, नीज़ जो लोग आप का रंग गन्दुमी बताते हैं इस की वज्ह क्या है...?

(4) **सुवाल :** फ़ज़ाइल के बाब की इब्तिदाई पांच अह़ादीस में फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के किन किन फ़ज़ाइल व ख़साइल को बयान किया गया है.....?

(5) **सुवाल :** "वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र" येह किस का शे'र है, नीज़ इस की ताईद में कोई एक रिवायत पेश फ़रमाएं....?

(6) **सुवाल :** मुह़द्दस कौन होता है नीज़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस ह़वाले से क्या बिशारत दी गई....?

(7) **सुवाल :** ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की शान में क्या फ़रमाया....?

आप की राए से क़ुरआन की मुवाफ़क़त

हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत येह है कि क़ुरआने मजीद आप की राए के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था।

राए के मुवाफ़िक़ नुज़ूले आयात

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम में हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राएं मौजूद हैं।[1]

.....हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अगर किसी मुआ़मले में लोगों की राए दूसरी होती और हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए दूसरी। **तो क़ुरआने मजीद हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था।**[2]

.....और हज़रते मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी मुआ़मले में जो कुछ मश्वरा देते थे, क़ुरआन शरीफ़ की आयतें उसी के मुताबिक़ नाज़िल होती थीं।[3]

١...(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث:٣٥٨٦٨، ٢/٢٦٩، الجزء ١٢)

٢...(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص...الخ، الحدیث:٣٧٠٢، ٥/٣٨٣)

٣...(تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، ص ٩٦)

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि उन के रब ने उन से इक्कीस बातों में मुवाफ़क़त फ़रमाई है ।(1) इन में से चन्द बातों का ज़िक्र किया जाता है ।

......हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप की ख़िदमत में हर त़रह़ के लोग आते जाते हैं और हुज़ूर की ख़िदमत में अज़्वाजे मुत़ह्हरात भी होती हैं । बेहतर है कि आप इन को पर्दा करने का हुक्म फ़रमाएं । हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मेरी इस अ़र्ज़ के बा'द उम्महातुल मोमिनीन के पर्दे के बारे में येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

﴿وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ﴾

या'नी और जब तुम उम्महातुल मोमिनीन से इस्ति'माल करने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो ।(2)

(पारह 22, रुकूअ़ 4....तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

1.....(हमें कुतुबे अह़ादीस व शुरूह़ात में येह क़ौल इन अल्फ़ाज़ से मिला है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने तीन और बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ चार बातों में मेरी मुवाफ़क़त फ़रमाई अलबत्ता 21 बातों में मुवाफ़क़त अइम्मए किराम ने गिनवाई है ।)

٢...(تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب، فصل فی موافقات عمر، ص ٩٦)

.....मुल्के शाम से एक क़ाफ़िले के साथ अबू सुफ़्यान के आने की ख़बर पा कर रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अस्हाब के साथ उन के मुक़ाबले के लिये रवाना हुए। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से अबू जह्ल कुफ़्फ़ारे कुरैश का एक भारी लश्कर ले कर क़ाफ़िले की इमदाद के लिये रवाना हुवा। अबू सुफ़्यान तो रास्ते से हट कर अपने क़ाफ़िले के साथ समुन्दर के साहिल की त़रफ़ चल पड़े। तो अबू जह्ल से उस के साथियों ने कहा कि क़ाफ़िला तो बच गया अब मक्कए मुअ़ज़्ज़मा वापस चलो मगर उस ने इन्कार कर दिया और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जंग करने के इरादे से बद्र की त़रफ़ चल पड़ा। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से जंग करने के बारे में मश्वरा किया तो बा'ज़ लोगों ने कहा कि हम इस तय्यारी से नहीं चले थे, न हमारी ता'दाद ज़ियादा है न हमारे पास काफ़ी सामाने अस्लहा है मगर उस वक़्त हज़रते उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बद्र की त़रफ़ निकल कर काफ़िरों से मुक़ाबला करने ही का मश्वरा दिया तो आयते करीमा नाज़िल हुई।

﴿كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ﴾

या'नी ऐ महबूब ! तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ (बद्र की त़रफ़) बर आमद किया और बेशक मुसलमानों का

एक गुरौह इस पर ना ख़ुश था। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)(1)

वोह अल्लाह का दुश्मन है जो....?

हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू या'ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि एक यहूदी हज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिला और आप से कहने लगा कि जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) फ़िरिश्ता जिस का तज़किरा तुम्हारे नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) करते हैं वोह हमारा सख़्त दुश्मन है इस के जवाब में हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

﴿مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓىِٕكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِیْلَ وَمِیْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِیْنَ﴾

या'नी जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उस के फ़िरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का।(2)

तो जिन अल्फ़ाज़ के साथ हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहूदी को जवाब दिया बिल्कुल उन्हीं अल्फ़ाज़ के साथ कु़रआने मजीद की येह आयते करीमा नाज़िल हुई।(3) (पारह 1, रुकूअ़ 12)(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 84)

١...(تاریخ الخلفاء،عمر بن خطاب،ص۹۷، بزیادۃ)(الصواعق المحرقۃ،الباب الخامس،الفصل السادس، ص۱۰۰،بزیادۃ)

٢...(سورۃالبقرۃ،الایۃ۹۸،پ۱)

٣...(تاریخ الخلفاء ،ص ۹۸)(تفسیر بغوی،البقرۃ،الایۃ ۹۷، ۱/۲۱)(الریاض النضرۃ،الفصل السادس،ذکر اختصاصہ بموافقۃ التنزیل، ۱/۲۹۵)

आयते मुबारका के आख़िरी जुम्ले ﴿فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِیْنَ﴾ से मा'लूम हुवा कि अम्बिया व मलाइका की अ़दावत कुफ़्र है और मह़बूबाने ह़क़ से दुश्मनी करना ख़ुदाए तआ़ला से दुश्मनी करना है।

सह़री में ख़ुसूसी रिआ़यत

पहली शरीअ़तों में रोज़ा इफ़्त़ार करने के बा'द खाना पीना और हम बिस्तरी करना इ़शा की नमाज़ तक जाइज़ था। बा'द नमाज़े इ़शा येह सारी चीज़ें रात में भी ह़राम हो जाती थीं। येह हुक्म ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक तक बाक़ी रहा, यहां तक कि रमज़ान शरीफ़ की रात में नमाज़े इ़शा के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हम बिस्तरी हो गई जिस पर वोह बहुत नादिम और शरमिन्दा हुए। ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और वाक़िआ़ बयान किया तो इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई

﴿اُحِلَّ لَكُمْ لَیْلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآىٕكُمْ﴾ (1)

इस आयते करीमा का मत़लब येह है कि रोज़ों की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना (या'नी उन से हम बिस्तरी करना) तुम्हारे लिये ह़लाल हो गया।(2) (पारह 2, रुकूअ़ 7)

١...(سورۃ البقرۃ،پ ٢،الآیۃ١٨٧)

٢...(تفسیر البغوی،سورۃالبقرۃ،الایۃ ١٨٧، ١/١١٢)

मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दी

बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ था। उस का एक यहूदी से झगड़ा था। यहूदी ने कहा : चलो सय्यिदे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़ैसला करा लें। मुनाफ़िक़ ने ख़याल किया कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हक़ फ़ैसला करेंगे कभी किसी की त़रफ़दारी और रिआयत न फ़रमाएंगे। जिस से उस का मत़लब ह़ासिल न हो सकेगा इस लिये उस ने मुद्दइए ईमान होने के बा वुजूद कहा कि हम का'ब बिन अशरफ़ यहूदी को पंच बनाएंगे। यहूदी जिस का मुआमला था वोह ख़ूब जानता था कि का'ब रिश्वत ख़ोर है और जो रिश्वत ख़ोर होता है उस से सह़ीह़ फ़ैसले की उम्मीद रखना ग़लत़ है इस लिये का'ब के हम मज़हब होने के बा वुजूद यहूदी ने उस को पंच तस्लीम करने से इन्कार कर दिया तो मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यहां मजबूरन आना पड़ा।

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो ह़क़ फ़ैसला किया वोह इत्तिफ़ाक़ से यहूदी के मुवाफ़िक़ और मुनाफ़िक़ के मुख़ालिफ़ हुवा। मुनाफ़िक़ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैसला सुनने के बा'द फिर यहूदी के दरपै हुवा और उसे मजबूर कर के ह़ज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास लाया। यहूदी ने आप से अ़र्ज़ किया कि मेरा और इस का मुआमला हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तै फ़रमा चुके हैं। लेकिन येह हुज़ूर

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैसले को नहीं मानता आप से फ़ैसला चाहता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **ठहरो मैं अभी आ कर फ़ैसला किये देता हूं। येह फ़रमा कर मकान में तशरीफ़ ले गए और तल्वार ला कर उस मुनाफ़िक़ मुद्दइए ईमान को क़त्ल कर दिया और फ़रमाया : जो अल्लाह और उस के रसूल के फ़ैसले को न माने उस के मुतअ़ल्लिक़ मेरा येही फ़ैसला है तो बयाने वाक़िआ़ के लिये येह आयते करीमा नाज़िल हुई :**

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَ قَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ یَّكْفُرُوْا بِهٖؕ وَ یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِیْدًا﴾ (پ۵، ٦٤)

या'नी क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन का दा'वा है कि वोह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा फिर चाहते हैं कि अपना पंच शैत़ान को बनाएं और उन को तो हुक्म येह था कि उसे हरगिज़ न मानें और इब्लीस येह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे।(1) (تفسیر جلالین وصاوی)

फिर किसी ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इत्तिलाअ़ की, कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस मुसलमान को क़त्ल कर दिया जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में फ़ैसले के लिये ह़ाज़िर हुवा था।

---

۱ ... (صاوی مع جلالین، ۲/۴۰۰)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझे उ़मर से ऐसी उम्मीद नहीं कि वोह किसी मोमिन के क़त्ल पर हाथ उठाने की जुरअत कर सके तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फिर मुन्दरिजए ज़ैल आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई । (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 84)

﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾

या'नी तो ऐ मह़बूब तुम्हारे रब की क़सम ! वोह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें ह़ाकिम न तस्लीम कर लें । फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में इस से रुकावट न पाएं । और दिल से मान लें ।[1] (पारह 5, रुकूअ़ 6)

इन वाक़िआ़त से ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की बारगाह में ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत का पता चलता है कि उन की बातों के मुवाफ़िक़ वह़्ये इलाही और क़ुरआने मजीद की आयतें नाज़िल होती थीं । मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये तारीख़ुल ख़ुलफ़ा वग़ैरा का मुत़ालआ़ करें ।

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، موافقته، ص ٩٨) (الدر المنثور فی تفسیر الماثور، سورة النساء، الایة ٦٥، ٢/٥٨٥)

मश्क़

(1) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के इरशाद के मुत़ाबिक़ किन तीन बातों में **अल्लाह** तआ़ला ने उन की मुवाफ़क़त फ़रमाई....?

(2) **सुवाल :** यहूदी के जवाब में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने क्या फ़रमाया नीज़ इस मौक़अ़ पर आप की मुवाफ़क़त में कौन सी आयते मुबारका नाज़िल हुई मअ़ ह़वाला तह़रीर कीजिये....?

(3) **सुवाल :** सूरतुल बक़रह की इस आयते मुबारका ﴿اُحِلَّ لَكُمْ لَیْلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآىٕكُمْ﴾ का शाने नुज़ूल मअ़ ह़वाला बयान कीजिये....?

(4) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उस मुनाफ़िक़ की गर्दन क्यूं मारी नीज़ आप की ताईद में इस मौक़अ़ पर कौन सी आयते क़ुरआनी नाज़िल हुई....?

आप की ख़िलाफ़त

ख़लीफ़ा कैसे मुक़र्रर हुए

हज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का वाक़िआ़ अ़ल्लामा वाक़िदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत के मुत़ाबिक़ यूं है कि जब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त अ़लालत के सबब बहुत ज़ियादा नासाज़ हो गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया जो अ़शरए मुबश्शरा में से हैं और उन से फ़रमाया कि उ़मर के बारे में तुम्हारी क्या राए है.....?

उन्हों ने कहा कि मेरे ख़याल में तो वोह उस से भी बढ़ कर हैं जितना कि आप उन के बारे में ख़याल फ़रमाते हैं। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर उन से भी हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया। उन्हों ने भी येही कहा कि मुझ से ज़ियादा आप उन के बारे में जानते हैं। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि कुछ तो बतलाओ।

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि उन का बात़िन उन के ज़ाहिर से अच्छा है और हम लोगों में उन का मिस्ल कोई नहीं। फिर आप ने सईद बिन ज़ैद, उसैद बिन हु़ज़ैर और दीगर अन्सार व मुहाजिरीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हज़रात से भी मश्वरा लिया और उन की राएं मा'लूम कीं। हज़रते उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि ख़ुदाए तआ़ला ख़ूब जानता है कि आप के बा'द हज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) सब से अफ़्ज़ल

हैं। वोह **अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी रहते हैं और **अल्लाह** जिस से ना खुश होता है उस से वोह भी ना खुश रहते हैं और उन का बातिन उन के ज़ाहिर से भी अच्छा है और कारे ख़िलाफ़त के लिये उन से ज़ियादा मुस्तइद और क़वी शख़्स कोई नज़र नहीं आता। फिर कुछ और सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم आए। उन में से एक शख़्स ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा कि हज़रते उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की सख़्त मिज़ाजी से आप वाक़िफ़ हैं। इस के बा वुजूद अगर आप उन को ख़लीफ़ा मुक़र्रर करेंगे तो खुदाए तआला के यहां क्या जवाब देंगे....? आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : खुदा की क़सम ! तुम ने मुझ को ख़ौफ़ ज़दा कर दिया मगर मैं बारगाहे खुदावन्दी में अ़र्ज़ करूंगा कि **या इलाहल आ़लमीन ! मैं ने तेरे बन्दों में से बेहतरीन शख़्स को ख़लीफ़ा बनाया है और ऐ ए'तिराज़ करने वाले ! येह जो कुछ मैं ने कहा है तुम दूसरे लोगों को भी पहुंचा देना।**

इस के बा'द आप ने हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर फ़रमाया : लिखिये :

بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

येह वसिय्यत नामा है जो अबू बक्र बिन अबू क़ुहाफ़ा ने अपने आख़िरी ज़माने में दुन्या से रुख़्सत होते वक़्त और अ़हदे आख़िरत के शुरूअ़ में आ़लमे बाला में दाख़िल होते वक़्त लिखाया है। येह वोह वक़्त है जब कि एक काफ़िर भी ईमान ले आता है। एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर भी यक़ीन की रौशनी हासिल कर लेता है और एक झूटा भी सच बोलता है।

मुसलमानो ! अपने बा'द मैं ने तुम्हारे ऊपर उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया है। उन के अह़काम को सुनना और उन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करना। मैं ने ह़त्तल इमकान ख़ुदा और रसूल, दीन और अपने नफ़्स के बारे में कोई तक़्सीर व ग़लती नहीं की है। और जहां तक हो सका तुम्हारे साथ भलाई की है। मुझे यक़ीन है कि वोह (या'नी ह़ज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेंगे। अगर उन्हों ने ऐसा किया तो मेरे ख़याल के मुत़ाबिक़ होगा और अगर उन्हों ने अ़द्लो इन्साफ़ को छोड़ दिया और बदल गए तो हर शख़्स अपने किये का जवाब देह होगा और ऐ मुसलमानो ! मैं ने तुम्हारे लिये नेकी और भलाई ही का क़स्द किया है।[1] ﴿وَ سَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ﴾ या'नी और ज़ालिम अ़न क़रीब जानेंगे कि वोह किस करवट पर पलटा खाएंगे। والسلام علیکم ورحمۃ اللّٰہ وبرکاتہ۔

फिर आप ने उस वसिय्यत नामे को सर ब मोहर करने का हुक्म दिया। जब वोह मोहरबन्द हो गया तो आप ने उसे ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले कर दिया जिसे ले कर वोह गए। लोगों ने राज़ी ख़ुशी से ह़ज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त की। इस के बा'द आप ने ह़ज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तन्हाई में बुला कर कुछ वसिय्यतें फ़रमाईं।

۱... (سورۃ الشعراء، الآیۃ ۲۲۷، پ ۱۹)

और जब वोह चले गए तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे इलाही में दुआ़ के लिये हाथ उठाया और अ़र्ज़ किया : **या इलाहल आ़लमीन ! येह जो कुछ मैं ने किया है इस से मेरी निय्यत मुसलमानों की फ़लाह़ो बहबूद है । तू इस बात से ख़ूब वाक़िफ़ है कि मैं ने फ़ितना व फ़साद को रोकने के लिये ऐसा काम किया है ।** मैं ने इस के बारे में अपनी राए के इजतिहाद से काम लिया है । मुसलमानों में जो सब से बेहतर है मैं ने उस को उन का वाली बनाया है और वोह उन में सब से क़वी और नेकी पर ह़रीस है ।

और या इलाहल आ़लमीन ! मैं तेरे हुक्म से तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हो रहा हूं । ख़ुदा वन्द ! तू ही अपने बन्दों का मालिको मुख़्तार है और उन की बाग दौड़ तेरे ही दस्ते क़ुदरत में है । **या इलाहल आ़लमीन !** इन लोगों में दुरुस्तगी और सलाहिय्यत पैदा करना और उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से करना और उन के साथ उन की रुइ्यत को अच्छी ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।[1]

एक ए'तिराज़ और इस का जवाब

राफ़िज़ी लोग कहते हैं कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो अपनी ज़िन्दगी में ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया तो हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त की इस लिये कि हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में किसी को ख़लीफ़ा नहीं बनाया ह़ालांकि

---

[1] ... (السنن الکبری، کتاب قتال اہل البغی، باب الاستخلاف، الحدیث: ۱۶۵۷۶، ۸/۲۵۷) (الطبقات الکبری، باب ذکر وصیۃ ابی بکر، ۳/۱۴۸)

वोह अच्छाई और बुराई को ख़ूब जानते थे और अपनी उम्मत पर पूरी पूरी शफ़्क़त व राफ़्त रखते थे मगर इस के बा वुजूद आप ने उम्मत पर किसी को ख़लीफ़ा नामज़द नहीं किया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी ज़िन्दगी में ख़लीफ़ा नामज़द कर दिया जो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुली हुई मुख़ालफ़त है।

इस ए'तिराज़ के तीन जवाब ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साह़िब मुह़द्दिसे देहल्वी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان **ने तह़रीर फ़रमाए हैं** और वोह येह हैं।

पहला जवाब येह है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में उम्मत पर ख़लीफ़ा न बनाना खुला हुवा झूट और बोहतान है इस लिये कि राफ़िज़ी सब के सब इस बात के क़ाइल हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाया था लिहाज़ा अगर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी सुन्नते नबवी की पैरवी में ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर दिया तो इस में मुख़ालफ़त कहां से लाज़िम आ गई।

और अगर जवाब की बुन्याद मज़हबे अह्ले सुन्नत पर रखें तो अह्ले सुन्नत के मुह़क़्क़िक़ीन इस बात के क़ाइल हैं कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ और ह़ज में अपना नाइब व ख़लीफ़ा बनाया है और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن जो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रम्ज़ शनास, आप

के कामों की बारीकियों से आगाह और आप के इशारों को अच्छी त़रह़ समझते थे उन के लिये इतना ही इशारा काफ़ी था और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिर्फ़ इस नुक्त़ए नज़र से ख़िलाफ़त नामा लिखवाया कि अ़रबो अ़जम के नौ मुस्लिम बिग़ैर तसरीह़ व तन्सीस के इस से वाक़िफ़ न हो सकेंगे।

और **दूसरा जवाब** येह है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस वज्ह से ख़लीफ़ा नहीं मुक़र्रर फ़रमाया कि आप वह़िये इलाही से पूरे यक़ीन के साथ जानते थे कि आप के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ख़लीफ़ा होंगे, सह़ाबा رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن उन्ही पर इत्तिफ़ाक़ करेंगे और कोई दूसरा इस में दख़्ल अन्दाज़ी नहीं कर सकेगा। चुनान्चे, अह़ादीसे करीमा जो अह्ले सुन्नत की सह़ीह़ किताबों में मौजूद हैं इस बात पर वाज़ेह़ त़रीक़े से दलालत करतीं हैं। मसलन हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**یَاْبَی اللہُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلَّا اَبَابَکْر**"

या'नी **अल्लाह** और मुसलमान अबू बक्र के सिवा किसी को क़बूल न करेंगे।[1] (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

.....और ह़दीस शरीफ़ में है "**فَاِنَّہ خَلِیْفَۃٌ مِنْ بَعْدِیْ**" या'नी मेरे बा'द अबू बक्र ख़लीफ़ा होंगे।[2] (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

और जब हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को यक़ीने कामिल था कि ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही होंगे तो ख़िलाफ़त नामा लिखने की कोई ह़ाजत न थी। चुनान्चे,

---

١ . . . (صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل ابی بکر، الحدیث: ۲۳۸۷، ص ۱۳۰۱)

٢ . . . (کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث: ۳۲۲۶۰، ۳۰/۷، الجزء ۱۳)

मुस्लिम शरीफ़ में है कि मरज़े वफ़ात में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और उन के साहिबज़ादे को बुलाया ताकि ख़िलाफ़त नामा लिखें । **फिर फ़रमाया कि ख़ुदाए तआ़ला और मुसलमान अबू बक्र के इ़लावा किसी और को ख़लीफ़ा नहीं बनाएंगे, लिखने की ह़ाजत क्या है....?** तो आप ने इरादा तर्क फ़रमा दिया ब ख़िलाफ़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के कि आप के पास वह़ी नहीं आती थी और न आप को इस बात का क़त़ई इ़ल्म था कि मेरे बा'द लोग बिलाशुबा उ़मर बिन ख़त़्त़ाब को ख़लीफ़ा बनाएंगे और अपनी अ़क़्ल से इस्लाम और मुसलमानों के लिये ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िलाफ़त को अच्छा समझते थे इस लिये इन पर ज़रूरी था कि जिस चीज़ में उम्मत की भलाई देखें उस पर अ़मल करें ।

بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی **आप की अ़क़्ल ने सह़ीह़ काम किया कि इस्लाम की शौकत, इन्तिज़ामे उमूरे सल्त़नत और काफ़िरों की ज़िल्लत जिस क़दर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथों हुई तारीख़ इस की मिसाल पेश करने से आ़जिज़ है ।**

और **तीसरा जवाब** येह है कि ख़लीफ़ा न बनाना और चीज़ है और ख़लीफ़ा बनाने से मन्अ़ करना और चीज़ है । मुख़ालफ़त जब लाज़िम आती कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़लीफ़ा बनाने से रोकते और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़लीफ़ा बना देते और अगर ख़लीफ़ा बनाना हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त करना है तो

लाज़िम आएगा कि हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बना कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त की। العیاذباللہ تعالٰی (तोह़फ़ए अस्ना अ़शरिया)[1]

हज़रते उ़मर को ख़लीफ़ा बनाने की हिक्मत

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने बा'द ख़लीफ़ा बना कर निहायत अ़क़्लमन्दी और दानिशमन्दी से काम लिया इस लिये कि वोह जानते थे इस्लाम अपनी ख़ूबियों की बिना पर रोज़ बरोज़ फैलता ही जाएगा। बड़ी बड़ी सल्त़नतें ज़ेरे नगीं होंगी और बड़े बड़े ममालिक फ़त्ह़ होंगे, जहां से बहुत माले ग़नीमत आएगा। लोग ख़ुश ह़ाल व मालदार हो जाएंगे और मालदारी के बा'द अक्सर दुन्यादारी आ जाती है और दीनदारी कम हो जाती है। **इस लिये अब मेरे बा'द उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे शख़्स को ख़लीफ़ा होना ज़रूरी है जो दीन के मुआ़मले में बहुत सख़्त हैं और शरीअ़त के मुआ़मले में किसी की परवा नहीं करते हैं।**

जो ख़िलाफ़ते शैख़ैन का मुन्किर हो....?

हज़रते सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने येह ख़याल किया कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से ज़ियादा ख़िलाफ़त के मुस्तह़िक़ और ह़क़दार

---

1 . . . (تحفۂ اثناعشریہ مترجم، ص۵۲۸،۵۲۷)

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे तो उस ने हज़रते अबू बक्र व हज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को ख़त़ाकार ठहराने के साथ तमाम अन्सार व मुहाजिरीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को भी ख़त़ाकार ठहराया।[1] العیاذباللہ تعالٰی

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 83)

करामाते ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बहुत सी करामतें भी ज़ाहिर हुई हैं। जिन में से चन्द करामतों का ज़िक्र आप के सामने किया जाता है।

निदाए फ़ारूक़ी ने फ़त्ह़ दिला दी

अ़ल्लामा अबू नुऐ़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दलाइल में हज़रते उ़मर बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जुमुआ़ का ख़ुत़बा फ़रमा रहे थे, यकायक आप ने दरमियान में ख़ुत़बा छोड़ कर तीन बार येह फ़रमाया : يَا سَارِيَةُ الْجَبَل! या'नी ऐ सारिया पहाड़ की त़रफ़ जाओ। يَا سَارِيَةُ الْجَبَل! ऐ सारिया पहाड़ की त़रफ़ जाओ। يَا سَارِيَةُ الْجَبَل! ऐ सारिया पहाड़ की त़रफ़ जाओ। इस त़रह़ हज़रते सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पुकार कर पहाड़ की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया और इस के बा'द फिर ख़ुत़बा शुरूअ़ फ़रमा दिया।

---

1 ...(حلیۃ الاولیاء، سفیان ثوری، الرقم ۹۴۲۹، ۷/۳۳)(تاریخ الخلفاء ص، عمر بن خطاب، اقوال الصحابۃ والسلف فیہ، ۹۲)

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बा'दे नमाज़ हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया कि आप तो ख़ुत़बा फ़रमा रहे थे फिर यकायक बुलन्द आवाज़ से कहने लगे : يَا سَارِيَةُ الْجَبَل! तो येह क्या मुआ़मला था....?

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : क़सम है ख़ुदाए ज़ुल जलाल की ! मैं ऐसा कहने पर मजबूर हो गया था।

"رَاَيْتُهُمْ يُقَاتِلُوْنَ عِنْدَ جَبَلٍ يُؤْتَوْنَ مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَ مِنْ خَلْفِهِمْ فَلَمْ اَمْلِكْ اَنْ قُلْتُ يَا سَارِيَةُ الْجَبَل"

या'नी मैं ने मुसलमानों को देखा कि वोह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और कुफ़्फ़ार उन को आगे और पीछे से घेरे हुए हैं। येह देख कर मुझ से ज़ब्त़ न हो सका और मैं ने कह दिया : ऐ सारिया पहाड़ की त़रफ़ जाओ।

इस वाक़िए के कुछ रोज़ बा'द हज़रते सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ासिद एक ख़त़ ले कर आया जिस में लिखा था कि हम लोग जुमुआ़ के दिन कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे और क़रीब था कि हम शिकस्त खा जाते कि ऐन जुमुआ़ की नमाज़ के वक़्त हम ने किसी की आवाज़ सुनी।

يَا سَارِيَةُ الْجَبَل! ऐ सारिया ! पहाड़ की त़रफ़ हट जाओ। उस आवाज़ को सुन कर हम पहाड़ की त़रफ चले गए तो ख़ुदाए तआ़ला ने

काफ़िरों को शिकस्त दी, हम ने उन्हें क़त्ल कर डाला। इस त़रह़ हम को फ़त्ह़ ह़ासिल हो गई।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 86)

ह़ज़रते सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ निहावन्द में लड़ाई कर रहे थे जो ईरान में सूबा आज़र बाईजान के पहाड़ी शह्‌रों में से है और मदीनए त़य्यिबा से इतनी दूर है कि उस ज़माने में वहां से चल कर एक माह के अन्दर निहावन्द नहीं पहुंच सकते थे। जैसा कि **ह़ाशिया अशिअ़्अ़तुल लमआ़त जिल्द चहारुम, स. 601** में है कि

"نہاوندر (ایران) صوبہ آذر بائیجان از بلاد جبال ست کہ از مدینہ بیک ماہ آنجانتواں رسید...

तो जब निहावन्द मदीनए त़य्यिबा से इतनी दूर है कि उस ज़माने में आदमी वहां से चल कर एक माह में निहावन्द नहीं पहुंच सकता था मगर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **ने मस्जिदे नबवी में ख़ुत़बा फ़रमाते हुए ह़ज़रते सारिया** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **को निहावन्द में लड़ते हुए मुलाह़ज़ा फ़रमाया और आप ने येह भी देखा कि दुश्मन मुसलमानों को आगे पीछे से घेरे हुए हैं और पहाड़ क़रीब में है, फिर आपने उन्हें आवाज़ दे कर पहाड़ की त़रफ़ जाने का हुक्म फ़रमाया और बिग़ैर किसी मशीन की मदद के अपनी आवाज़ को वहां तक पहुंचा दिया। येह ह़ज़रते उ़मर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **की खुली हुई करामत है।**

---

١ . . . (کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث: ٣٥٧٨٥، ٣٥٧٨٣، ٢/٢٥٦، الجزء ١٢) (تاریخ الخلفاء، عمربن خطاب، کرامتہ، ص ٩٩)

ہر کہ عشقِ مصطفےٰ سامانِ اوست
بحر و بر در گوشۂ دامانِ اوست

हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस करामत को इमाम बैहक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से भी रिवायत की है जो हदीस की मशहूर व मो'तमद किताब **मिश्कात शरीफ़ के सफ़हा 546** पर भी लिखी हुई है।

तेरे लब से जो बात निकली

हज़रते इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है....? उस ने कहा : **जमरह या'नी चिंगारी**। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के बाप का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने कहा : **शहाब या'नी शो'ला**। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : तुम्हारे क़बीले का नाम क्या है...? उस ने कहा : **हुरक़ा या'नी आग**। और जब आप ने उस के रहने की जगह दरयाफ़्त की तो उस ने **हुर्रा बताया या'नी गर्मी**। आप ने पूछा कि हुर्रा कहां है....? उस ने कहा : **ज़ाते नत़या (शो'ला वाली) जगह** में। **इन सारे जवाबात को सुनने के बा'द हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने फ़रमाया : "اَدْرِکْ اَھْلَکَ فَقَدِ احْتَرَقُوْا" या'नी अपने अहलो**

अ़याल की ख़बर लो कि वोह सब जल कर मर गए । जब वोह शख़्स अपने घर वापस हुवा तो देखा वाक़ेई उस के घर को आग लग गई थी और सब लोग जल कर मर गए थे ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 86)

जो जज़्ब के आ़लम में निकले लबे मोमिन से
वोह बात ह़क़ीक़त में तक़्दीरे इलाही है

दरियाए नील जारी कर दिया

हज़रते अबुश्शैख़ किताबुल इ़स्मत में ह़ज़रते क़ैस बिन ह़ज्जाज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि जब ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में मिस्र को फ़त्ह़ किया तो अह्ले अ़जम एक मुक़र्ररा दिन पर ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और कहा : "یَاَیُّهَا الاَمِیْرُ اِنَّ لِنِیْلِنَا هٰذَا سُنَّةً لَا یَجْرِیْ اِلَّا بِهَا" या'नी ऐ ह़ाकिम ! हमारे इस दरियाए नील के लिये एक पुराना त़रीक़ा चला आ रहा है कि जिस के बिग़ैर वोह जारी नहीं रहता है बल्कि ख़ुश्क हो जाता है और हमारी खेती का दारो मदार इसी दरियाए नील के पानी ही पर है । ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि दरियाए नील के जारी रहने का वोह पुराना त़रीक़ा क्या है...?

उन लोगों ने कहा कि जब इस महीने के चांद की ग्यारहवीं तारीख़ आती है तो हम लोग एक कंवारी जवान लड़की को मुन्तख़ब

---

1 ... (مؤطا امام مالک بروایہ یحیی اللیثی، کتاب الستئذان، باب مایکرہ من الاسماء، الحدیث:۱۸۷۰، ۲/۴۵۳)(تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، کرامتہ، ص ۱۰۰)

कर के उस के मां बाप को राज़ी करते हैं फिर उसे बेहतरीन क़िस्म के ज़ेवरात और कपड़े पहनाते हैं इस के बा'द लड़की को दरियाए नील में डाल देते हैं।

हज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "اِنَّ هٰذَا لَایَکُوْنُ اَبَدًا فِی الْاِسْلَام" या'नी इस्लाम में ऐसा कभी नहीं हो सकता। येह तमाम बातें लग़्व और बे सरो पा हैं। इस्लाम इस क़िस्म की तमाम बातिल बातों को मिटाने आया है। वोह लड़की को दरियाए नील में डालने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दे सकते। आप के इस जवाब के बा'द वोह लोग वापस चले गए कुछ दिनों के बा'द वाक़ेई दरियाए नील बिल्कुल ख़ुश्क हो गया। यहां तक कि बहुत से लोग वत़न छोड़ने पर आमादा हो गए। हज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह मुआ़मला देखा तो एक ख़त़ लिख कर हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सारे ह़ालात से मुत्तलअ़ किया।

आप ने ख़त़ पढ़ने के बा'द हज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तह़रीर फ़रमाया कि तुम ने मिस्रियों को बहुत उ़म्दा जवाब दिया। बेशक इस्लाम इस क़िस्म की तमाम लग़्व और बेहूदा बातों को मिटाने के लिये आया है। मैं इस ख़त़ के हमराह एक रुक़्आ़ रवाना कर रहा हूं तुम इस को दरियाए नील में डाल देना।

जब वोह रुक़्आ़ हज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पहुंचा तो आप ने उसे खोल कर पढ़ा उस में लिखा हुवा था

”مِنْ عَبْدِ اللّٰہ عمرَ اَمِیْرِ الْمُؤمِنِیْنَ

اِلٰی نِیْل مِصْر، اَمَّا بَعْدُ فَاِنْ کُنْتَ تَجْرِیْ مِنْ قِبَلِکَ فَلَا تَجْرِ وَاِنْ کَانَ

اللّٰہ یُجْرِیْکَ فَاَسْئَلُ اللّٰہ الْوَاحِدَ الْقَھَّارَ اَنْ یُّجْرِیَکَ“

या'नी अल्लाह के बन्दे उ़मर अमीरुल मोमिनीन की तरफ़ से मिस्र के दरियाए नील को मा'लूम हो कि अगर तू ब ज़ाते ख़ुद जारी होता है तो मत जारी हो और अगर ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ तुझ को जारी फ़रमाता है तो मैं अल्लाह वाहि़दे क़ह्हार से दुआ़ करता हूं कि वोह तुझे जारी फ़रमा दे ।

हज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के उस रुक़्ए़ को रात के वक़्त दरियाए नील में डाल दिया । मिस्र वाले जब सुब्ह़ को नींद से बेदार हुए तो देखा कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस को इस त़रह़ जारी फ़रमा दिया है कि सोलह हाथ पानी और चढ़ा हुवा है । फिर दरियाए नील इस त़रह़ कभी नहीं सूखा और मिस्र वालों की येह जाहिलाना रस्म हमेशा के लिये ख़त्म हो गई ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 87)

येह हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहुत बड़ी करामत है कि आप ने दरियाए नील के नाम ख़त़ लिखा और ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की । तो वोह दरियाए नील जो हर साल एक कंवारी लड़की की जान लिये बिग़ैर जारी नहीं होता था । हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़त़ से

---

۱ . . . (تاریخ مدینہ دمشق، عمر بن خطاب، ۴۴/۳۳۶)(تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۰)

हमेशा के लिये जारी हो गया। मा'लूम हुवा कि आप बह्रो बर दोनों पर हुकूमत फ़रमाते थे। एक शाइ़र ने बहुत ख़ूब कहा है।

یاد او گر مونس جانت بود
ہر دو عالم زیر فرمانت بود

शेर ने हिफ़ाज़त की

खि़लाफ़ते फ़ारूक़ी का ज़माना था एक अ़जमी शख़्स मदीनए त़य्यिबा में आया जो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तलाश कर रहा था। किसी ने बताया कि कहीं आबादी के बाहर सो रहे होंगे। वोह शख़्स आबादी के बाहर निकल कर आप को तलाश करने लगा यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस ह़ालत में पाया कि वोह ज़मीन पर सर के नीचे ज़िरह रखे हुए सो रहे थे। उस ने दिल में सोचा। सारी दुन्या में इस शख़्स की वज्ह से फ़ितना बरपा है। इस लिये कि इस वक़्त ईरान और दूसरे मुल्कों में इस्लामी फ़ौजों ने तहलका मचा रखा था लिहाज़ा इस को क़त्ल कर देना ही मुनासिब है और आसान भी है इस लिये कि आबादी के बाहर सोते हुए शख़्स को मार डालना कोई मुश्किल बात नहीं।

येह सोच कर उस ने नियाम से तल्वार निकाली और आप की ज़ाते बा बरकात पर वार करना ही चाहता था कि ग़ैब से दो शेर नमूदार हुए और उस अ़जमी की त़रफ़ बढ़े। इस मन्ज़र को देख कर वोह चीख़ पड़ा। उस की आवाज़ से ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

जाग उठे। आप के बेदार होने पर उस ने अपना सारा वाक़िआ़ बयान किया और फिर मुसलमान हो गया।(1)

येह भी आप की एक करामत है कि शेर जो इन्सान के जान लेवा हैं वोह आप की हिफ़ाज़त के लिये नमूदार हो गए और क्यूं न हो कि "مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ" या'नी जो **अल्लाह** तआ़ला का हो जाता है **अल्लाह** तआ़ला उस का हो जाता है और इस त़रह़ उस की हिफ़ाज़त फ़रमाता है।

वली की रूह़ानी त़ाक़त

ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सूरए कह्फ़ की आयते करीमा ﴿ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۞ ﴾ की तफ़्सीर में बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस

"اِذَا اَحْبَبْتُهٗ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِيْ يَسْمَعُ بِهٖ وَبَصَرَهُ الَّذِيْ يُبْصِرُ بِهٖ وَيَدَهُ الَّتِيْ يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِيْ يَمْشِيْ بِهَا...الخ"(2)

नक़्ल करने के बा'द तह़रीर फ़रमाते हैं "اَلْعَبْدُ اِذَا وَاظَبَ عَلَى الطَّاعَاتِ بَلَغَ الْمَقَامَ الَّذِيْ يَقُوْلُ اللّٰهُ كُنْتُ لَهٗ سَمْعاً وَّبَصَراً فَاِذَا صَارَ نُوْرُ جَلَالِ اللّٰهِ سَمْعًا لَهٗ سَمِعَ الْقَرِيْبَ وَ الْبَعِيْدَ وَاِذَا صَارَ ذٰلِكَ النُّوْرُ يَدًا لَهٗ قَدَرَ عَلَى التَّصَرُّفِ فِي السَّهْلِ وَالصَّعْبِ وَالْقَرِيْبِ وَ الْبَعِيْدِ"

١...(ازالۃ الخفاء عن خلافۃ، مقصد دوم، الفصل الرابع، ١٠٩/٤)

٢...(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث: ٦٥٠٢، ٢٤٥/٤)

या'नी जब कोई बन्दा नेकियों पर हमेशगी इख़्तियार करता है तो उस मक़ामे रफ़ीअ़ तक पहुंच जाता है कि जिस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला ने "كُنْتُ لَهٗ سَمْعًا وَّبَصَرًا" फ़रमाया है तो जब **अल्लाह** के जलाल का नूर उस की **सम्अ़** हो जाता है तो वोह दूरो नज़्दीक की आवाज़ को सुन लेता है और जब येही नूरे जलाल उस की **नज़र** हो जाता है तो वोह दूरो नज़्दीक की चीज़ों को देख लेता है और जब येही नूरे जलाल उस का **हाथ** हो जाता है तो वोह बन्दा आसान व मुश्किल और दूरो नज़्दीक की चीज़ों में तसर्रुफ़ करने पर क़ादिर हो जाता है।(1)

की मुहम्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या लौहो क़लम तेरे हैं

....रूहानी इलाज....

(हर विर्द के अव्वलो आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

۞.....هُوَاللّٰهُ الرَّحِيْم : जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैतान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।

۞......يَامَلِكُ 90 : बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ुरबत से नजात पा कर मालदार हो।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 168 ता 170 मुल्तक़तन)

---

1 ...(التفسير الكبير، سورة الكهف، تحت الاية ٩ تا ١٢، ٧/٤٣٦)

मश्क़

(1) **सुवाल :** हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा कैसे मुक़र्रर हुए, मुफ़स्सल ज़िक्र कीजिये....?

(2) **सुवाल :** हज़रते उ़मर को ख़लीफ़ा बनाने पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ व जवाब को मुफ़स्सल ज़िक्र कीजिये नीज़ आप को ख़लीफ़ा बनाने की ह़िक्मत भी बयान कीजिये...?

(3) **सुवाल :** शैख़ैन की ख़िलाफ़त का मुन्किर किन आफ़तों का सज़ावार है....?

(4) **सुवाल :** हज़रते सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाली रिवायत किस अ़क़ीदए अहले सुन्नत की और किस त़रह़ मुअय्यिद है, नीज़ घर जलने वाली ह़िकायत से क्या सबक़ ह़ासिल होता है.....?

(5) **सुवाल :** हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरियाए नील के नाम क्यूं और किस त़रह़ का ख़त़ लिखा....?

(6) **सुवाल :** मज़कूरा रिवायत में अ़जमी के ईमान लाने का ज़िक्र है, इस का क्या सबब बना....?

अ़दालते फ़ारूक़ी

हज़रते उ़मर और बादशाह जबला बिन अल ऐहम

औस व ख़ज़रज के बा'ज़ क़बीलों ने मुल्के शाम में एक चश्मे पर जिस का नाम ग़स्सान था डेरा डाला और उस अ़लाक़े के कुछ शहरों पर क़ब्ज़ा कर लेने के बा'द एक अ़ज़ीमुश्शान सल्त़नत क़ाइम कर दी और मुलूके ग़स्सानिया के मुअ़ज़्ज़ज़ नाम से मश्हूर हो गए। मुलूके ग़स्सान में सब से पहला बादशाह जफ़ना हुवा है और सब से आख़िरी बादशाह जबला बिन अल ऐहम, वोह पहले बुत परस्त थे, फिर रूमी बादशाहों के साथ तअ़ल्लुक़ की वज्ह से अपना क़दीम मज़हब छोड़ कर ईसाई हो गए थे। क़ुरैशे मक्का के बा'द सब से ज़ियादा जिन को इस्लाम की क़ुव्वत तोड़ देने और इस को सफ़ह़ए हस्ती से मिटा देने की फ़िक्र थी वोह मुलूके ग़स्सान थे, अ़रब के दूसरे क़बीले अगर्चे मुक़ाबले के लिये आमादा हुए थे लेकिन उन के पास बा क़ाइदा लश्कर न था और न किसी क़िस्म का अहम साज़ो सामान था मगर ग़स्सानियों की सल्त़नत निहायत बा क़ाइदा और मुनज़्ज़म थी और उन का लश्कर भी आरास्ता था, और सब से ज़ियादा येह कि एक ज़बरदस्त बादशाह क़ैसरे रूम से इन के तअ़ल्लुक़ात थे जो हर वक़्त इन की इमदाद पर आमादा और मुस्तइद था।

मलिके ग़स्सान मुसलमानों को सफ़ह़े हस्ती से मिटाने के लिये सोच ही रहा था कि इसी दौरान में सरकारे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के

क़ासिद हज़रते शुजाअ़ बिन वहब अल असदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के नाम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़त़ ले कर ऐसे वक़्त में पहुंचे जब कि क़ैसरे रूम किसरा के मुक़ाबले से फ़ारिग़ हो कर शुक्राना अदा करने के लिये बैतुल मुक़द्दस आया हुवा था और ग़स्सान का बदाशाह उस की दा'वत के इन्तिज़ाम में मश्ग़ूल था, इसी सबब से कई रोज़ तक हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ासिद हज़रते शुजाअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहां ठहरना पड़ा और कई रोज़ तक रसाई न हो सकी, आख़िर किसी त़रह़ एक रोज़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ासिद मलिके ग़स्सान के सामने पेश हुए और उन्हों ने जो नामए मुबारक उस को दिया उस का मज़्मून येह था,

"اِنِّیْ اَدْعُوْکَ اِلٰی اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰہِ وَحْدَہٗ یَبْقٰی لَکَ مُلْکُکَ"

या'नी मैं तुम को सिर्फ़ एक ख़ुदा पर ईमान लाने की त़रफ़ बुलाता हूं, अगर तुम ईमान ले आए तो तुम्हारा मुल्क तुम्हारे लिये बाक़ी रहेगा।

शाहे ग़स्सान सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़त़ पढ़ कर भड़क उठा और ग़ुस्से से कहा कि मेरा मुल्क कौन छीन सकता है मैं ख़ुद मदीने पर ह़म्ला करूंगा और उस की ईंट से ईंट बजा दूंगा और क़ासिद से कहा कि जा कर येही बात मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से कह देना।

हज़रते शुजाअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मदीनए त़य्यिबा पहुंच कर जब मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ग़स्सान के बादशाह की

पूरी कैफ़िय्यत बयान की तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "بَادَ مُلْکُہ" या'नी उस का मुल्क तबाहो बरबाद हो गया।[1]

सीरते ह़ल्बिया में है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामए मुबारक ह़ारिस ग़स्सानी के नाम था।[2] और **इब्ने हिशाम** वग़ैरा दूसरे मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि ह़ज़रते शुजाअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामए मुबारक जबला बिन अल ऐहम के यहां ले कर गए थे।[3]

अल ग़रज़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामए मुबारक भेजने का येह असर हुवा कि जो आग अन्दर ही अन्दर सुलग रही थी वोह भड़क उठी और मलिके ग़स्सान अपनी पूरी क़ुव्वत के साथ आमादए जंग हुवा यहां तक कि ग़स्सानियों ही की अ़दावत के नतीजे में मौता का सख़्त तरीन मा'रिका हुवा जिस में मुसलमानों को बहुत बड़ा नुक़्सान उठाना पड़ा कि बहुत से सिपाही और कई एक चीदा व बरगुज़ीदा सिपह सालार इस जंग में शहीद हो गए।

मदीनए त़य्यिबा पर ग़स्सानी बादशाह के ह़म्ले की ख़बर जब क़ासिद के ज़रीए़ पहुंची तो मुसलमान बहुत तशवीश और फ़िक्र में हुए कि अगर्चे **अल्लाह** के मह़बूब दानाए ख़ुफ़ाया व ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद के मुत़ाबिक़ मलिके ग़स्सान ख़ाइबो ख़ासिर

۱... (مدارج النبوۃ، قسم سوم، باب ششم، ۲/۲۲۸)

۲... (السیرۃ الحلبیۃ، باب بیان کتبہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ۔۔۔ الخ، ۳/۳۵۷)

۳... (السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، خروج رسول اللہ الی الملوک، الجزء ۴، ص ۵۱۱)

होगा और उस का मुल्क तबाहो बरबाद होगा लेकिन मदीना शरीफ़ पर उस के ह़म्ले से न मा'लूम कितनी जानें ज़ाएअ़ होंगी, कितनी औ़रतें बेवा हो जाएंगी और न मा'लूम कितने बच्चे यतीम हो जाएंगे मगर **अल्लाह** तआ़ला ने उस के ह़म्ले से मदीनए त़य्यिबा को मह़फ़ूज़ रखा।

ग़स्सानी बादशाह जिस के मदीना शरीफ़ पर ह़म्ला करने की ख़बर गर्म थी वोह ह़ारिस था या जबला बिन अल ऐहम...? इस में इख़्तिलाफ़ है। त़बरानी में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से जो रिवायत है उस से मा'लूम होता है कि वोह ग़स्सानी बादशाह जबला बिन अल ऐहम था।

अल ग़रज़ जबला बिन अल ऐहम ने मुसलमानों से दुश्मनी ज़ाहिर करने में कोई कमी नहीं रखी मगर इस के बा वुजूद वोह इस्लाम की ख़ूबियों से वाक़िफ़ था। उस के कानों तक इस्लाम की अच्छाइयां पहुंचती रहती थीं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्चाई की दलीलों और निशानियों का भी उसे इ़ल्म होता रहता था, अन्सार ह़ज़रात का मुसलमान हो कर सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने यहां ठहराना और उन की ह़िफ़ाज़त व ह़िमायत के लिये जानो माल को क़ुरबान कर देना भी आहिस्ता आहिस्ता उस के अन्दर इस्लाम की मह़ब्बत पैदा कर रहा था इस लिये कि अन्सार और जबला दोनों एक ही क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखते थे।

बिल आख़िर इस्लाम की मह़ब्बत उस के दिल में बढ़ती गई यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त के ज़माने में वोह

महब्बत इस क़दर बढ़ गई कि उस ने खुद हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लिखा कि मैं इस्लाम में दाखिल होने के लिये आप की खिदमत में हाज़िर होना चाहता हूं, आप ने निहायत खुशी से तहरीर फ़रमाया कि तुम बिला खटक चले आओ "وَلَکَ مَالَنَا وَعَلَیْکَ مَاعَلَیْنَا" या'नी हर हाल में तुम हमारी तरह हो जाओगे।

जबला बादशाह अपने क़बीले "अक" और गस्सान के पांच सौ आदमियों को हमराह ले कर रवाना हुवा। जब मदीनए मुनव्वरा सिर्फ़ दो मन्ज़िल रह गया तो उस ने हज़रते उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की खिदमत में इत्तिलाअ भेजी कि मैं हाज़िर हो रहा हूं और अपने लश्कर के दो सौ सुवारों को हुक्म दिया कि ज़र बफ़्त व हरीर की सुर्ख़ व ज़र्द वर्दियां पहनें और घोड़ों पर दीबाज की झोलीं डाल कर उन के गले में सोने के तौक़ पहनाएं और अपना ताज सर पर रखा फिर पूरी शान दिखलाने के लिये अपने खानदान की बेहतरीन और माया नाज़ कुर्ते मारिया ताज में लगाईं। मारिया तमाम गस्सानी बादशाहों की दादी थी, उस के पास दो बालियां थीं जिन में दो मोती कबूतर के अन्डे के बराबर लगे हुए थे, येह बालियां अपनी खूबसूरती और बेश क़ीमत मोतियों की वज्ह से बे मिस्ल समझी जाती थीं। कहा जाता है कि पूरी दुन्या के बादशाहों के खज़ानों में ऐसे मोती और ऐसी बालियां नहीं थीं, मुलूके गस्सान को उन पर फ़ख्र था और वोह उन को बेश क़ीमत और नादिर होने के इलावा अपनी साहिबे इक़्बाल दादी की यादगार समझ कर उन बालियों का निहायत एहतिराम करते थे और इसी वज्ह से जबला ने येह दिखलाने को कि अपनी इस

शाहाना हैसिय्यत और हालते आज़ादी व ख़ुद मुख़्तारी को छोड़ कर दीने इस्लाम में दाख़िल हो कर अमीरुल मोमिनीन की पैरवी को गवारा करता हूं, इन बेश क़ीमत बालियों को भी अपने ताज में लगा लिया था, इस त़रह़ बड़ी शानो शौकत के साथ मदीनए त़य्यिबा में दाख़िल होने को तय्यार हुवा।

हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों को जबला के इस्तिक़्बाल करने और ता'ज़ीमो तकरीम के साथ उतारने का हुक्म दिया मदीनए मुनव्वरा में ख़ुशी और मसर्रत का जोश फैला हुवा था, बच्चे और बूढ़े सभी इस जुलूस के नज़्ज़ारे को देखने के लिये अपने अपने घरों से निकल पड़े, मुसलमानों के लिये ह़क़ीक़त में इस से बढ़ कर ख़ुशी की और कौन सी बात हो सकती थी कि मज़हबे इस्लाम जिस के फैलाने की ख़िदमत इन के सिपुर्द हुई थी, इस के अन्दर इस त़रह़ राज़ी और ख़ुशी से बड़े बड़े बादशाह दाख़िल हो, मगर उस वक़्त येह ख़ुशी इस वज्ह से और दोबाला हो रही थी कि वोही ग़स्सान का बादशाह जिस के ह़म्ले का चर्चा मदीनए त़य्यिबा में घर घर था और जिस के डर से सब सहम रहे थे, आज वोही बादशाह इस त़रह़ सरे तस्लीम ख़म किये हुए मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हो रहा है येह सब ख़ुदाए तआ़ला की क़ुदरत और इस्लाम की एक करामत थी और इसी वज्ह से सब छोटे बड़े इस जुलूस को देखने के लिये निकल खड़े हुए।

अल ग़रज़ बड़ी शानो शौकत और निहायत ता'ज़ीमो तकरीम से इस्तिक़्बालिया जमाअ़त के झुरमुट में शाहाना जुलूस के साथ जबला मदीनए त़य्यिबा में दाख़िल हुवा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेहमानदारी के मरासिम में कोई कसर उठा न रखी और मदीनए त़य्यिबा में इन नए मेहमानों की आमद से ख़ूब चहल पहल रही...इत्तिफ़ाक़ से ज़मानए ह़ज क़रीब था ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हर साल ह़ज के लिये मक्कए मुअ़ज़्ज़मा ह़ाज़िर हुवा करते थे। इस साल जब वोह ह़ज के लिये निकले तो जबला भी साथ में रवाना हुवा, वहां बद क़िस्मती से येह बात पेश आ गई कि त़वाफ़ की ह़ालत में जबला की लुंगी पर जो ब वज्हे शाने बादशाही ज़मीन पर घिसटती हुई जा रही थी, क़बीलए फ़ज़ारा के एक शख़्स का पाउं पड़ गया, जिस के सबब लुंगी खुल गई। जबला को ग़ुस्सा आया और उस ने इतनी ज़ोर से मुंह पर घूंसा मारा कि उस की नाक टेढ़ी हो गई।

येह मुक़द्दमा ख़लीफ़ा की अ़दालत में पहुंचा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिग़ैर किसी रिआ़यत के ह़क़ फ़ैसला करते हुए जबला से फ़रमाया कि या तो तुम किसी त़रह़ मुद्दई को राज़ी कर लो वरना बदला देने के लिये तय्यार हो जाओ। जबला जो अपने को बड़ी शान वाला समझता था, येह ख़िलाफ़े उम्मीद फ़ैसला उसे सख़्त ना गवार गुज़रा और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ूब जानते थे कि जबला को येह फ़ैसला ना गवार गुज़रेगा, मगर आप ने इस की कोई परवा न की और बादशाह का लिह़ाज़ किये बिग़ैर ह़क़ फ़ैसला सुना दिया। उस ने कहा :

एक मा'मूली आदमी के इवज़ मुझ से बदला लिया जाएगा। मैं बादशाह हूं और वोह एक आ़म आदमी है। ह़ज़रत ने फ़रमाया कि बादशाह और रुइय्यत को इस्लाम ने अपने अह़काम में बराबर कर दिया है, किसी को किसी पर फ़ज़ीलत है तो तक़्वा और परहेज़गारी के सबब

﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ﴾[1] (پ۲۶،۱۴۶)

जबला ने कहा कि मैं तो येह समझ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुवा था कि मैं पहले से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ और मोह़तरम हो कर रहूंगा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि इस्लामी क़ानून का फ़ैसला येही है जिस की पाबन्दी हम पर और तुम पर लाज़िम है। इस के ख़िलाफ़ कुछ हरगिज़ नहीं हो सकता, तुम को अपनी इ़ज़्ज़त क़ाइम रखनी है तो इस को किसी त़रह़ राज़ी कर लो वरना आ़म मजमअ़ में बदला देने को तय्यार हो जाओ। जबला ने कहा : तो मैं फिर ईसाई हो जाऊंगा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तो अब इस सूरत में तेरा क़त्ल ज़रूरी होगा, इस लिये कि जो मुर्तद हो जाता है इस्लाम में उस की सज़ा येही है, जबला ने कहा : अपने मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र करने के लिये आप मुझे एक रात की मोहलत दें। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की येह दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली और उसे एक रात की मोहलत दे दी तो जबला उसी रात को अपने लश्कर के

---

[1] ...(سورۃ الحجرات،الآیۃ ۱۳،پ۲۶)

साथ पोशीदा तौर पर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से भाग गया और कुस्तुनतुनिया पहुंच कर नसरानी बन गया ।[1] العیاذباللہ تعالیٰ

येह है हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे मिसाल अ़दालत कि आप ने एक मा'मूली आदमी के मुक़ाबले में ऐसी शानो शौकत वाले बादशाह की कोई परवा न की, उसे मुद्दई के राज़ी करने या बदला देने पर मजबूर किया और इस बात का ख़याल बिल्कुल न फ़रमाया कि ऐसे जलीलुल क़द्र बादशाह पर इस फ़ैसले का रद्दे अ़मल क्या होगा लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन ने अपनी इसी क़िस्म की ख़ूबियों से इस्लाम की जड़ों को मज़बूत फ़रमाया और इसे ख़ूब रौशन व ताबनाक बनाया । (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)

इन्तिबाह

बा'ज़ लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़द्लो इन्साफ़ की ता'रीफ़ करते हुए बयान करते हैं कि आप के साहिबज़ादे अबू शह़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शराब पी और फिर इसी नशे की ह़ालत में ज़िना किया । उन बातों पर हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को कोड़े लगवाए यहां तक कि इसी तक्लीफ़ से बीमार हो कर उन का इन्तिक़ाल हो गया, तो हज़रते अबू शह़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब **ज़िना** और **शराब नोशी** की निस्बत ग़लत़ मशहूर हो गया है । मो'तमद किताब मज्मउ़ल बह़ार

---

[1] ...(تاریخ مدینۃ دمشق، ذکر من اسمہ سری، ۵۷/۳۶۸)(اللباب فی علوم الکتاب، المائدۃ، تحت الآیۃ ۵۴، ۷/۳۸۹)

में है कि ज़िना की निस्बत सह़ीह़ नहीं अलबत्ता उन्हों ने नबीज़ पी थी और नबीज़ उस पानी को कहते हैं कि जिस में खजूर भिगोई गई हो और उस की मिठास पानी में उतर आई हो।

"उ़म्दतुर्रिआ़या ह़ाशिया शर्हे़ वक़ाया" जिल्द अव्वल मजीदी, सफ़्ह़ा 87 में है :

"هوالماء الذی تنبذ فیه تمرات فتخرج حلاوتها"

और नबीज़ दो त़रह़ की होती है एक वोह कि उस में नशा नहीं होता, ऐसी नबीज़ ह़लाल व पाक है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक उस से वुज़ू बनाना भी जाइज़ है, बशर्ते़ कि रिक़्क़त व सैलान बाक़ी हो। (شرح وقایہ صفحہ مذکور)

और एक नबीज़ वोह होती है जिस में नशा पैदा हो जाता है और वोह ह़राम व नजिस होती है, ह़ज़रते अबू शह़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबीज़ पी येह समझ कर कि येह ह़लाल है नशे वाली नहीं मगर वोह नशे वाली साबित हुई तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की गिरिफ़्त फ़रमाई और अज़ राहे अ़द्लो इन्साफ़ उन्हें सज़ा दी।[1]

तर्जुमाने नबी, हम ज़बाने नबी

जाने शाने अ़दालत पे लाखों सलाम

١...(فتاوی فیض رسول بحوالہ مجمع البحار، حصہ دوم، ص ۷۱۰)

गवर्नरों से शराइत़

हज़रते ख़ुज़ैमा बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी शख़्स को कहीं का वाली मुक़र्रर फ़रमाते तो उस से चन्द शर्तें लिखवा लेते थे, **अव्वल** येह कि वोह तुर्की घोड़े पर सुवार नहीं होगा, **दूसरे** येह कि वोह आ'ला दरजे का खाना नहीं खाएगा, **तीसरे** येह कि वोह बारीक कपड़ा नहीं पहनेगा, **चौथे** येह कि ह़ाजत वालों के लिये अपने दरवाज़े को बन्द नहीं करेगा और दरबान नहीं रखेगा।

फिर जो शख़्स इन शराइत़ की पाबन्दी नहीं करता था उस के साथ निहायत सख़्ती से पेश आते थे। ह़ाकिमे मिस्र अ़याज़ बिन ग़नम के बारे में मा'लूम हुवा कि वोह रेशम पहनता है और दरबान रखता है तो आप ने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि अ़याज़ बिन ग़नम को जिस ह़ालत में भी पाओ गिरिफ़्तार कर के ले आओ। जब अ़याज़ ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने लाए गए तो आप ने उन को कम्बल का कुर्ता पहनाया और बकरियों का एक रेवड़ उन के सिपुर्द किया और फ़रमाया कि जाओ इन बकरियों को चराओ तुम इन्सानों पर हुकूमत करने के क़ाबिल नहीं हो या'नी अ़याज़ बिन ग़नम को गवर्नर से एक चरवाहा बना दिया।

येही वज्ह है कि पूरी मम्लकते इस्लामिया के हुक्काम और गवर्नर आप की हैबत से कांपते रहते थे।[1]

.....आप फ़रमाया करते थे कि कारोबारे ख़िलाफ़त उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होता जब तक इस में इतनी शिद्दत न की जाए जो जब्र न बन जाए और न इतनी नर्मी बरती जाए कि जो सुस्ती से ता'बीर हो।

......इमाम शा'बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह त़रीक़ा था कि जब आप किसी ह़ाकिम को किसी सूबे पर मुक़र्रर फ़रमाते तो उस के तमाम माल व असासे की फ़ेहरिस्त लिखवा कर अपने पास मह़फ़ूज़ कर लिया करते थे। **एक बार आप ने अपने तमाम उ़म्माल को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपने अपने मौजूदा माल व असासे की एक एक फ़ेहरिस्त बना कर इन को भेज दें।**

इन्ही उ़म्माल में ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे जो अ़शरए मुबश्शरा में से हैं। जब इन्हों ने अपने असासों की फ़ेहरिस्त बना कर भेजी तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन के सारे माल के दो ह़िस्से किये, जिन में से एक ह़िस्सा इन के लिये छोड़ दिया और एक ह़िस्सा बैतुल माल में जम्अ़ कर दिया।[2]

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 96)

---

١ . . . (تاریخ مدینۃ دمشق، عیاض بن غنم، ۴۷/۲۸۲)

٢ . . . (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، اخبارہ وقضایاہ، ص ۱۱۲) (کنز العمال، کتاب الجہاد، باب فی احکام الجہاد، الحدیث: ۱۱۴۱۶، ۲/۲۰۵، الجزء ۴)

रातों में गश्त करना

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिआ़या की ख़बरगीरी के लिये बदवी का लिबास पहन कर मदीनए तृय्यिबा के अत्राफ़ में रातों को गश्त करते थे। एक बार ह़स्बे मा'मूल आप गश्त फ़रमा रहे थे कि इन्हों ने सुना एक औ़रत कुछ अश्आ़र पढ़ रही है, जिस का ख़ुलासा येह है कि.....

"रात बहुत हो गई और सितारे चमक रहे हैं मगर मुझे येह बात जगा रही है कि मेरे साथ कोई खेलने वाला नहीं है। तो मैं ख़ुदाए तआ़ला की क़सम खा कर कहती हूं कि अगर मुझे अल्लाह के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ न होता तो इस चारपाई की चूलें हिलतीं लेकिन मैं अपने नफ़्स के साथ उस निगहबान और मुअक्किल से डरती हूं जिस का कातिब कभी नहीं थकता।"

अश्आ़र को सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस औ़रत से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तेरा क्या मुआ़मला है कि इस क़िस्म के अश्आ़र पढ़ रही है? उस ने कहा कि मेरा शौहर कई माह से जंग पर गया हुवा है, उस की मुलाक़ात के शौक़ में येह अश्आ़र पढ़ रही हूं, सुब्ह़ होते ही आप ने उस के शौहर को बुलाने के लिये क़ासिद रवाना फ़रमा दिया और चूंकि आप की ज़ौजए मोह़तरमा वफ़ात पा चुकी थीं इस लिये आप ने अपनी साह़िबज़ादी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दरयाफ़्त फ़रमाया कि औ़रत कितने ज़माने तक शौहर के बिग़ैर रह सकती है...?

इस सुवाल को सुन कर ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने शर्म से अपना सर झुका लिया और कोई जवाब नहीं दिया, आप ने फ़रमाया कि ख़ुदाए तआ़ला ह़क़ बात में शर्म नहीं करता तो ह़ज़रते ह़फ़्सा ने हाथ के इशारे से बताया कि तीन महीने या ज़ियादा से ज़ियादा चार, तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुक्म जारी फ़रमा दिया कि

"لَایُحْبَسُ الْجُیُوْشُ فَوْقَ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ" या'नी चार महीने से ज़ियादा किसी सिपाही को जंग में न रोका जाए।(1) (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

ग़रीब लड़की को बहू बना लिया

एक रात आप गश्त फ़रमा रहे थे कि एक मकान से आवाज़ आई। बेटी ! दूध में पानी मिला दे, दूसरी आवाज़ आई जो लड़की की थी, मां ! अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का हुक्म तुझ को याद नहीं रहा जिस में ए'लान किया गया है कि दूध में कोई शख़्स पानी न मिलाए, मां ने कहा : अमीरुल मोमिनीन यहां देखने नहीं आएंगे, पानी मिला दे, लड़की ने कहा मैं ऐसा नहीं कर सकती कि ख़लीफ़ा के सामने इत़ाअ़त का इक़रार और पीठ पीछे उन की ना फ़रमानी....उस वक़्त ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ ह़ज़रते सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने

---

١ . . . (تاريخ الخلفاء، عمر بن خطاب، اخباره وقضاياه، ص ١١٢) (المصنّف لعبد الرزاق، كتاب الطلاق، باب حق المرأة على زوجها، الحديث ١٢٦٤٤، ١١٨/٧)

उन से फ़रमाया कि इस घर को याद रखो और सुब्ह़ के वक़्त ह़ालात मा'लूम कर के मुझे बताओ । ह़ज़रते सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरबारे ख़िलाफ़त में रिपोर्ट पेश की, कि लड़की बहुत नेक, जवां और बेवा है, कोई मर्द इन का सर परस्त नहीं है, मां बे सहारा है । आप ने उसी वक़्त अपने सब लड़कों को बुला कर फ़रमाया कि तुम में से जो चाहे उस लड़की से निकाह़ कर ले, तो ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तय्यार हो गए, आप ने उस बेवा लड़की को बुला कर ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़क़्द कर के अपनी बहू बना लिया ।[(1)] (अ़शरए मुबश्शरा)

एक वहाबी की फ़रेबकारी

इस वाक़िए़ को एक ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी ने एक जल्से में बयान करने के बा'द इन लफ़्ज़ों में तबसिरा किया कि देखो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इतने आ'ला ख़ानदान के होते हुए अपने साह़िबज़ादे की शादी एक गवालन से कर दी । लिहाज़ा ह़नफ़ियों का "कुफ़ू" वाला मस्अला ग़लत़ है, इत्तिफ़ाक़ से उस जल्से की तक़रीरें सुनने के लिये एक सुन्नी ह़नफ़ी मौलवी भी गए थे, ग़ैर मुक़ल्लिद की उस तक़रीर से मुतअस्सिर हो कर उन्हों ने येह ख़याल कर लिया कि वाक़ेई "कुफ़ू" का मस्अला ग़लत़ मा'लूम होता है, येह बात उन्हों ने

---

١ . . . (عیون الحکایات، الحکایۃ الثانیۃ عشرۃ، حکایۃ بنت بائعۃ اللبن، ص ٢٨)

एक सुन्नी ह़नफ़ी मुफ़्ती से बयान की, **तो ह़ज़रत मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया कि ग़ैर मुक़ल्लिद ने फ़रेब से काम लिया जिसे आप भांप न सके, ह़नफ़ियों के यहां लड़के की त़रफ़ से कुफ़ू होने का ए'तिबार नहीं वोह छोटी से छोटी बिरादरी और बहुत कम दरजे की लड़की से भी निकाह़ कर सकता है। "कुफ़ू" होने का ए'तिबार सिर्फ़ लड़की की त़रफ़ से है कि बालिग़ होने के बा वुजूद अपने वली की रिज़ा के बिग़ैर वोह ग़ैर कुफ़ू से निकाह़ नहीं कर सकती जैसा कि फ़िक़्हे ह़नफ़ी की आ़म किताबों में मज़्कूर है,** तो मौलवी साह़िब ने इक़रार किया कि वाक़ेई मैं ग़ैर मुक़ल्लिद के फ़रेब में आ गया था, इस पर ह़ज़रते मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया कि इसी लिये बद मज़हबों की तक़रीर सुनने से मन्अ़ फ़रमाया गया है कि जब आप दस साल इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के बा वुजूद उस के फ़रेब में आ गए तो अ़वाम का क्या ह़ाल होगा किसी मौलवी की तक़रीर का सुनना भी दीन का ह़ासिल करना है और ह़दीस शरीफ़ में है....

"اُنْظُرُوْا عَمَّنْ تَاْخُذُوْنَ دِيْنَكُم" या'नी देख लो कि तुम अपना दीन किस से ह़ासिल कर रहे हो।[1] (رواہ مسلم، مشکوۃ، ص۳۷)

लिहाज़ा किसी बद मज़हब की तक़रीर सुनना ह़राम व नाजाइज़ है, और जो लोग येह कहते हैं कि हम पर किसी बद मज़हब की तक़रीर

---

١ . . . (صحیح مسلم، المقدمة، باب بیان ان الاسناد من الدین، ص ١١)(مشكاة المصابيح، كتاب العلم، الفصل الثالث، الحديث: ٢٧٣، ١/٧٠)

का असर नहीं हो सकता वोह बहुत बड़ी ग़लत़ फ़ह्मी में मुब्तला हैं, जब दस साल के पढ़े हुए मौलवी पर बद मज़्हब की तक़रीर का असर पड़ गया तो दूसरे लोगों की क्या ह़क़ीक़त है, बस दुआ़ है कि ख़ुदाए तआ़ला ऐसे लोगों को समझ अ़त़ा फ़रमाए और बद मज़्हबों की तक़रीर से दूर रहने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ बख़्शे, आमीन,

बैतुल माल से वज़ीफ़ा

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिन रात ख़िलाफ़त के काम अन्जाम देते थे मगर बैतुल माल से कोई ख़ास वज़ीफ़ा नहीं लेते थे, जब आप ख़लीफ़ा बनाए गए तो कुछ दिनों के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को जम्अ़ कर के इरशाद फ़रमाया कि मैं पहले तिजारत किया करता था और अब तुम लोगों ने मुझ को ख़िलाफ़त के काम में मश्ग़ूल कर दिया है तो अब गुज़ारे की सूरत क्या होगी....? लोगों ने मुख़्तलिफ़ मिक़्दारें तजवीज़ कीं, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मुतवस्सित़ त़रीक़े पर जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घरवालों के लिये और आप के लिये काफ़ी हो जाए वोही मुक़र्रर फ़रमा लें। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस राए को पसन्द फ़रमाया और क़बूल कर लिया। इस त़रह़ बैतुल माल से मुतवस्सित़ मिक़्दार आप के लिये मुक़र्रर हो गई।(1)

---

١ . . . (كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ٣٥٧٧٤، ٢/٢٥٤، الجزء ١٢)

इज़ाफ़े की तजवीज़ पर जलाल

फिर एक मजलिस जिस में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे येह तै पाया कि ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन के वज़ीफ़े में इज़ाफ़ा करना चाहिये कि गुज़र में तंगी होती है, मगर किसी की हिम्मत न हुई कि वोह आप से कहता। तो उन लोगों ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा और ताकीद कर दी कि हम लोगों का नाम न बताइयेगा। जब उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप से इस का तज़किरा किया तो आप का चेहरा ग़ुस्से से तमतमा उठा। आप ने लोगों के नाम दरयाफ़्त किये। ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया कि पहले आप की राए मा'लूम हो जाए।

आप ने फ़रमाया कि अगर मुझे उन के नाम मा'लूम हो जाते तो मैं उन को सख़्त सज़ा देता या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों की राए के बा वुजूद वज़ीफ़े के इज़ाफ़े को मन्ज़ूर नहीं फ़रमाया बल्कि उन पर और नाराज़गी ज़ाहिर फ़रमाई।[1]

رضی اللہ تعالی عنہ وارضاہ عنا وعن سائر المسلمین

वसीला

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में एक बार ज़बरदस्त क़ह़त़ पड़ा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारिश त़लब करने के

[1]... (تاریخ مدینہ دمشق، عمر بن خطاب، ۴۴/۲۹۰، مفہوماً)

लिये ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा फ़रमाई, ह़ज़रते इब्ने औ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का हाथ पकड़ा और उस को बुलन्द कर के इस त़रह़ बारगाहे इलाही में दुआ़ की...

"اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِعَمِّ نَبِیِّکَ اَنْ تُذْھِبَ عَنَّا الْمَحْلَ وَاَنْ تَسْقِیَنَا الْغَیْثَ"

या'नी या इलाहल आ़लमीन ! हम तेरे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा को वसीला बना कर तेरी बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं : क़ह़त़ और ख़ुश्क साली को ख़त्म फ़रमा दे और हम पर रह़मत वाली बारिश नाज़िल फ़रमा । येह दुआ़ मांग कर अभी आप वापस भी नहीं हुए थे कि बारिश शुरूअ़ हो गई और कई रोज़ तक मुसलसल होती रही ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 90)

मा'लूम हुवा कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वालों को अपनी किसी ह़ाजत के लिये वसीला बनाना शिर्क नहीं है बल्कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का त़रीक़ा और उन की सुन्नत है और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है "عَلَیْکُمْ بِسُنَّتِیْ وَسُنَّۃِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِیْنَ" या'नी मेरी और ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को इख़्तियार करो ।[2] (मिश्कात शरीफ़, स. 30)

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، خلافتہ، ۱۰۴) (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم، باب ذکر العباس بن عبد المطلب، الحدیث: ۳۷۱۰، ۲/۵۳۷)

٢ . . . (مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الحدیث: ۱۶۵، ۱/۵۳)

आप की शहादत

शहादत की दुआ़

बुख़ारी शरीफ़ में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की....

”اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ شَھادَۃً فِیْ سَبِیْلِکَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رسُولِکَ“

या'नी या इलाहल आ़लमीन ! मुझे अपनी राह में शहादत अ़ता फ़रमा और अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के शहर में मुझे मौत नसीब फ़रमा ।**[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 90)

आप की शहादत

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ इस त़रह़ क़बूल हुई कि ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मजूसी ग़ुलाम अबू लुअलुअ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से शिकायत की, कि उस के आक़ा ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शा'बा रोज़ाना उस से चार दिरहम वुसूल करते हैं आप इस में कमी करा दीजिये । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम लोहार और बढ़ई का

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، خلافتہ، ص ١٠٥) (صحیح البخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب کراھیۃ النبی عن ان تعری المدینۃ، الحدیث: ١٨٩٠، ٢/٢٢٢)

काम ख़ूब अच्छी त़रह़ जानते हो और नक़्क़ाशी भी बहुत उ़म्दा करते हो तो चार दिरहम यौमिया तुम्हारे ऊपर ज़ियादा नहीं हैं। इस जवाब को सुन कर वोह ग़ुस्से से तिलमिलाता हुवा वापस चला गया, कुछ दिनों के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे फिर बुलाया और फ़रमाया कि तू कहता था कि अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहें तो मैं ऐसी चक्की तय्यार कर दूं जो हवा से चले, उस ने तेवर बदल कर कहा कि हां ! मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ऐसी चक्की तय्यार कर दूंगा जिस का लोग हमेशा ज़िक्र किया करेंगे, जब वोह चला गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह लड़का मुझे क़त्ल की धमकी दे कर गया है मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के ख़िलाफ़ कोई कारवाई नहीं की,

अबू लुअलुअ ग़ुलाम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़त्ल का पुख़्ता इरादा कर लिया। एक ख़न्जर पर धार लगाई और उस को ज़हर में बुझा कर अपने पास रख लिया, **ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ज्र की नमाज़ के लिये मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गए और उन का त़रीक़ा था कि वोह तक्बीरे तह़रीमा से पहले फ़रमाया करते थे कि सफ़ें सीधी कर लो, येह सुन कर अबू लुअलुअ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बिल्कुल क़रीब सफ़ में आ कर खड़ा हो गया और फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कन्धे और पहलू पर ख़न्जर से दो वार किये जिस**

से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **गिर पड़े,** इस के बा'द उस ने और नमाज़ियों पर ह़म्ला कर के तेरह आदमियों को ज़ख़्मी कर दिया जिन में से बा'द में छे अफ़राद का इन्तिक़ाल हो गया, उस वक़्त जब कि वोह लोगों को ज़ख़्मी कर रहा था एक इ़राक़ी ने उस पर कपड़ा डाल दिया और जब वोह उस कपड़े में उलझ गया तो उस ने उसी वक़्त ख़ुद कुशी कर ली।

चूंकि अब सूरज निकला ही चाहता था इस लिये ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो मुख़्तसर सूरतों के साथ नमाज़ पढ़ाई और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर लाए पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नबीज़ पिलाई गई जो ज़ख़्मों के रास्ते बाहर निकल गई फिर दूध पिलाया गया मगर वोह भी ज़ख़्मों से बाहर निकल गया। **किसी शख़्स ने आप** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **से कहा कि आप** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अपने फ़रज़न्द अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **को अपने बा'द ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दें, आप** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने उस शख़्स को जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें ग़ारत करे, तुम मुझे ऐसा ग़लत़ मश्वरा दे रहे हो, जिसे अपनी बीवी को सह़ीह़ त़रीक़े से त़लाक़ देने का भी सलीक़ा न हो क्या मैं ऐसे शख़्स को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं....?** फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उ़स्मान, ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते त़ल्ह़ा, ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) की इन्तिख़ाबे

ख़लीफ़ा के लिये एक कमेटी बना दी और फ़रमाया कि इन ही में से किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया जाए।(1)

दफ़्न होने को मिल जाए दो गज़ ज़मीं

इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साहिबज़ादे हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि बताओ हम पर कितना क़र्ज़ है ? उन्हों ने हिसाब कर के बताया कि छियासी हज़ार क़र्ज़ है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह रक़म हमारे माल से अदा कर देना और अगर इस से पूरा न हो तो बनू अ़दी से मांगना और अगर उन से भी पूरा न हो तो क़ुरैश से लेना, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : जाओ हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहो कि उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दोनों दोस्तों के पास दफ़्न होने की इजाज़त चाहता है, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गए और अपने बाप की ख़्वाहिश को ज़ाहिर किया, उन्हों ने फ़रमाया कि येह जगह तो मैं ने अपने लिये मह़फ़ूज़ कर रखी थी मगर मैं आज अपनी ज़ात पर हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तरजीह देती हूं। जब आप को येह ख़बर मिली तो आप ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

---

١ . . . (صحیح ابن حبان، کتاب، ذکر رضی المصطفی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم عن عمر بن خطاب، الحدیث: ٦٨٢٦، ٨/٢٥)

......26 ज़ुल हिज्जा 23 हिजरी, बुध के दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ज़ख़्मी हुए और तीन दिन बा'द दस बरस छे माह चार दिन उमूरे ख़िलाफ़त को अन्जाम दे कर 63 साल की उम्र में वफ़ात पाई।[1]

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن

वोह उमर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम
तर्जुमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

कफ़न मैला नहीं होता

हज़रते उरवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर पड़ी और लोगों ने उस की ता'मीर 87 हिजरी में शुरूअ की तो (बुन्याद खोदते वक़्त) एक क़दम (घुटने तक) ज़ाहिर हुवा, तो सब लोग घबरा गए और लोगों को ख़याल हुवा कि शायद येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़दम मुबारक है और वहां कोई जानने वाला

---

1 ... (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم باب قصۃ البیعۃ والاتفاق علی عثمان بن عفان، الحدیث: ۳۷۰۰، ۲/۵۳۱)(اسد الغابۃ، عمر بن خطاب، ۴/۱۹۰)

नहीं मिला तो ह़ज़रते उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने कहा

"لَا وَاللّٰہ! مَاھِیَ قَدَمُ النَّبِی صلی اللّٰہ علیہ وسلم مَاھِیَ اِلَّا قَدَمُ عُمَر"

या'नी ख़ुदा की क़सम ! येह ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़दम शरीफ़ नहीं है बल्कि येह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का क़दम मुबारक है ।(1) (बुख़ारी शरीफ़, जिल्द अव्वल, स. 186)

ख़ुलासा येह है कि तक़रीबन 64 बरस के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का जिस्म मुबारक ब दस्तूर साबिक़ रहा उस में किसी क़िस्म की तब्दीली नहीं हुई थी और न कभी होगी ।

एक शाइ़र ने ख़ूब कहा है :

ज़िन्दा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर

अल्लाह ! अल्लाह ! मौत को किस ने मसीह़ा कर दिया

وصلی اللّٰہ تعالیٰ علیٰ خیر خلقہ سیدنا محمد وعلیٰ الہ

واصحابہ وازواجہ وذریاتہ اجمعین برحمتک یاارحم الراحمین

---

١ . . . (صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی قبور النبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم ۔۔۔ الخ، الحدیث: ١٣٩٠، ١/٤٦٩)

मश्क़

(1) **सुवाल :** जबला बिन ऐहम कौन था नीज़ उस के इस्लाम लाने और मुर्तद होने का वाक़िआ़ मुफ़स्सल बयान फ़रमाइये...?

(2) **सुवाल :** ह़ज़रते अबू शह़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कौन हैं और उन के मुतअ़ल्लिक़ क्या ग़लत़ मश्हूर है, नीज़ नबीज़ की अक़्साम मअ़ अह़काम बयान फ़रमाइये....?

(3) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने गवर्नरों को किन शराइत़ की पासदारी का हुक्म फ़रमाते थे.....?

(4) **सुवाल :** मज़्कूरा रिवायत के मुत़ाबिक़ शौहर अपनी ज़ौजा से कितने अ़र्से दूरी अपनाए सकता है नीज़ इस हुक्म का सबब क्या बना....?

(5) **सुवाल :** दूध में पानी मिलाने की तजवीज़ पर लड़की ने क्या जवाब दिया नीज़ इसे ईमानदारी पर क्या इन्आ़म मिला....?

(6) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये कितना वज़ीफ़ा मुक़र्रर हुवा था, और क़ौम ने इस में इज़ाफ़े की तजवीज़ क्यूं दी और इस के लिये ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिख़ाब क्यूं किया, नीज़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में क्या इरशाद फ़रमाया....?

(7) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाराने रह़मत के लिये किस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई नीज़ येह रिवायत किस अ़क़ीदए अह्ले सुन्नत की ताईद करती है....?

(8) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत किस माह व सिन और कितनी उम्र में हुई नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत का वाक़िआ़ मुफ़स्सल बयान फ़रमाइये....?

(9) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद करने वाला कौन था और उस का क्या अन्जाम हुवा....?

(10) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्र के खुलने का वाक़िआ़ मुफ़स्सल बयान कीजिये नीज़ येह रिवायत किस अ़क़ीदए अह्ले सुन्नत की मुअय्यिद है....?

मन्क़बत दर शाने फ़ारूक़े आ'ज़म

★ *नहीं ख़ुश बख़्त मोह्ताजाने आ़लम में कोई हम सा*
मिला तक़्दीर से ह़ाजत रवा फ़ारूक़े आ'ज़म सा

★ *ग़ज़ब में दुश्मनों की जान है तैग़े सर अफ़गन से*
ख़ुरूफ़ व रफ़्ज़ के घर में न क्यूं बरपा हो मातम सा

★ *शयात़ीन मुज़्मह़िल हैं तेरे नामे पाक के डर से !*
निकल जाए न क्यूं रफ़ाज़ बद बत़्वार का दम सा

★ *मनाएं ई़द जो ज़िल ह़िज्जा में तेरी शहादत की*
इलाही रोज़ो माहो सिन उन्हें गुज़रे मुह़र्रम सा

★ *तेरे जूदो करम का कोई अन्दाज़ा करे क्यूं कर*
तेरा इक इक गदा फ़ैज़ो सख़ावत में है ह़ातिम सा

★ *तेरा रिश्ता बना शीराज़ा जमइय्यते ख़ात़िर !*
पड़ा था दफ़्तरे दीन किताबुल्लाह बरहम सा

(ज़ौक़े ना'त)

अमीरुल मोमिनीन

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस दुन्या में मबऊ़स फ़रमाए गए। या कुछ कमो बेश दो लाख चौबीस हज़ार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने क़ुदूम में मिन्नते लुज़ूम से इस दुन्या को सरफ़राज़ फ़रमाया, वोह लोग साह़िबे औलाद भी हुए, लड़के वाले हुए और लड़की वाले भी हुए तो जिन लोगों के साथ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी साह़िबज़ादियों को मन्सूब फ़रमाया वोह यक़ीनन इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत वाले हुए हैं। इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला के नबी का दामाद होना एक बहुत बड़ा मर्तबा है जो ख़ुश नसीब इन्सानों ही को नसीब हुवा है। मगर इस सिलसिले में जो ख़ुसूसिय्यत और जो इनफ़िरादिय्यत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ासिल है वोह किसी को नहीं कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर ह़ुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक किसी के निकाह़ में नबी की दो बेटियां नहीं आई हैं लेकिन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह़ में सिर्फ़ नबी नहीं बल्कि नबिय्युल अम्बिया और सय्यिदुल अम्बिया ह़ज़रते अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो साह़िबज़ादियां यके बा'द दीगरे निकाह़ में आईं।

उ़स्मान के निकाह़ में दे देता

और सिर्फ़ येही नहीं बल्कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से यहां तक रिवायत है कि उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशाद सुना है कि आप ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमा रहे थे कि **अगर मेरी चालीस लड़कियां भी होतीं तो यके बा'द दीगरे मैं उन सब का निकाह़ ऐ उ़स्मान ! तुम से कर देता यहां तक कि कोई भी बाक़ी न रहती ।**[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 104)

ज़ुन्नूरैन लक़ब की वज्ह

और बैहक़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी सुनन में लिखा है कि अ़ब्दुल्लाह जुअ़फ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान फ़रमाते हैं कि मुझ से मेरे मामूं हुसैन जुअ़फ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरयाफ़्त किया कि तुम्हें मा'लूम है कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब ज़ुन्नूरैन क्यूं है ? मैं ने कहा : नहीं । **उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते आदम** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **से ले कर ह़ुज़ूर** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **तक ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **के इ़लावा किसी शख़्स के निकाह़ में किसी नबी की दो बेटियां नहीं**

1... (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، فصل فی الاحادیث الواردۃ الخ، ص ۱۲۱)

आई, इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ुन्नूरैन कहते हैं।[1]

आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी علیہ الرحمۃ والرضوان फ़रमाते हैं :

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का

हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

बद्री सहाबा में शुमार

सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ब्ले ए'लाने नबुव्वत अपनी साहिबज़ादी ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किया था जो ग़ज़वए बद्र के मौक़अ़ पर बीमार थीं और उन्ही की तीमारदारी के सबब ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस जंग में शिर्कत नहीं फ़रमा सके और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से मदीनए त़य्यिबा ही में रह गए थे मगर चूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बद्र के माले ग़नीमत से हिस्सा अ़त़ा फ़रमाया था इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बद्रियों में शुमार किये जाते हैं।

---

[1] ... (السنن الکبری، کتاب النکاح، باب تسمیۃ ازواج النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ۔۔۔ الخ، الحدیث: ۱۳۴۲۷، ۱۱۵/۷)

ग़ज़्वए बद्र में मुसलमानों के फ़त्ह़ पाने की ख़ुश ख़बरी ले कर जिस वक़्त ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा पहुंचे उस वक़्त ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दफ़्न किया जा रहा था। उन के इन्तिक़ाल फ़रमा जाने के बा'द हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी दूसरी साहि़बज़ादी ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कर दिया तो उन का भी 9 हिजरी में विसाल हो गया।

ग़रज़ येह कि इस त़रह़ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ज़ुन्नूरैन** हुए।[1]

आप की औलाद

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक साहि़बज़ादे ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे जिन का नाम अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ था। वोह अपनी मां के बा'द छे बरस की उ़म्र पा कर इन्तिक़ाल कर गए और ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से आप की कोई औलाद नहीं हुई।[2]

नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "**उ़स्मान**" कुन्यत **अबू उ़मर** और लक़ब "**ज़ुन्नूरैन**" है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिलसिलए नसब इस

---

۱ . . . (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۱۸)

۲ . . . (المواہب اللدنیا وشرح الزرقانی، باب ذکر اولادہ الکرام، ۴/۳۲۷، ۳۲۴، ۳۲۲)

त़रह़ है, उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान बिन अबुल आ़स बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मनाफ़, या'नी पांचवीं पुश्त में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिलसिलए नसब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शजरए नसब से मिल जाता है।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नानी उम्मे ह़कीम जो ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब की बेटी थी वोह हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे गिरामी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक ही पेट से पैदा हुई थीं, इस रिश्ते से ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी की बेटी थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैदाइश आ़मुल फ़ील के छे साल बा'द हुई।[1] رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

क़बूले इस्लाम और मसाइब

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन ह़ज़रात में से हैं जिन को ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम की दा'वत दी थी। **आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़दीमुल इस्लाम हैं या'नी इब्तिदाए इस्लाम ही में ईमान ले आए थे।**

---

١ . . . (اسد الغابة، عثمان بن عفان، ٣/٢٠٢) (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ١١٨)

......इब्ने इस्हा़क़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बा'द इस्लाम क़बूल किया।(1)

दुन्या छोड़ सकता हूं पर ईमान नहीं

इब्ने सा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुह़म्मद बिन इब्राहीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम हुए तो उन का पूरा ख़ानदान भड़क उठा यहां तक कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का चचा ह़कम बिन अबिल आ़स इस क़दर नाराज़ और बरहम हुवा कि आप को पकड़ कर एक रस्सी से बांध दिया और कहा कि तुम ने अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर एक दूसरा नया मज़हब इख़्तियार कर लिया है, जब तक कि तुम इस नए मज़हब को नहीं छोड़ोगे हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे इसी त़रह़ बांध कर रखेंगे।

येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया :
"وَاللّٰهِ لَا اَدَعُه اَبداً وَلاَ اُفَارِقُه" या'नी ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! मज़हबे इस्लाम को मैं कभी नहीं छोड़ सकता और न कभी इस दौलत से दस्त बरदार हो सकता हूं, मेरे जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालो येह हो सकता है मगर दिल से दीने इस्लाम निकल जाए येह हरगिज़ नहीं हो

---

۱ . . .(تاریخ مدینۃ دمشق، عثمان بن عفان، ۳۹/۲۶)

सकता, ह़कम बिन अबिल आ़स ने जब इस त़रह़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्तिक़्लाल देखा तो मजबूर हो कर आप को रिहा कर दिया।[1] رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप का हुल्यए मुबारका

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्या और सरापा इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चन्द त़रीक़ों से इस त़रह़ बयान करते हैं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दरमियाने क़द के ख़ूब सूरत शख़्स थे, रंग में सफ़ेदी के साथ सुर्ख़ी भी शामिल थी, चेहरे पर चेचक के दाग़ थे। जिस्म की हड्डियां चौड़ी थीं। कन्धे काफ़ी फेले हुए थे। पिन्डलियां भरी हुई थीं, हाथ लम्बे थे जिन पर काफ़ी बाल थे, दाढ़ी बहुत घनी थी, सर के बाल घुंगरियाले थे, दांत बहुत ख़ूब सूरत थे और सोने के तार से बन्धे हुए थे, कनपटियों के बाल कानों के नीचे तक थे और पीले रंग का ख़िज़ाब किया करते थे... (تاریخ مدینۃ دمشق، عثمان بن عفان، ۳۹/ ۲۶)

......और इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ज़्म माज़ुनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं इन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा "فَمَا رَاَیْتُ قَطُّ ذَکَرًا وَّلَا اُنْثٰی اَحْسَنَ وَجْھًا مِنْہ" या'नी तो मैं ने औ़रतों और मर्दों में से किसी को इन से ज़ियादा

---

1 ...(تاریخ مدینۃ دمشق، عثمان بن عفان، ۳۹/ ۲۶)

हसीन और ख़ूब सूरत नहीं पाया ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

ऐसा जोड़ा कभी न देखा

और इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं वोह फ़रमाते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे गोश्त का एक बड़ा प्याला दे कर हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा, जब मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में दाख़िल हुवा तो हज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी बैठी हुई थीं, मैं कभी हज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चेहरे की त़रफ़ देखता था और कभी हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सूरत देखता था,

जब मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर से वापस हो कर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते मुबारका में ह़ाज़िर हुवा तो रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि उसामा ! उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के घर के अन्दर तुम गए थे ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! जी हां ! मैं घर के अन्दर गया था, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम ने उन मियां बीवी से हसीन व ख़ूब सूरत

---

[1] ...(تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۱۹)(تاریخ مدینۃ دمشق، عثمان بن عفان، ۱۷/۳۹)

किसी मियां बीवी को देखा है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी नहीं देखा ।[1] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

येह वाक़िआ़ ग़ालिबन आयते हिजाब के नाज़िल होने से पहले का है ।

अम्बिया से मुशाबहत

और इब्ने अ़दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं उन्हों ने फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ अपनी साहिबज़ादी उम्मे कुल्सूम का निकाह़ किया तो उन से फ़रमाया कि **तुम्हारे शौहर उ़स्माने ग़नी तुम्हारे दादा ह़ज़रते इब्राहीम** عَلَیْہِ السَّلَام **और तुम्हारे बाप मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **से शक्लो सूरत में बहुत मुशाबेह हैं ।**[2] (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۱۹) (کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، الحدیث: ۳۶۲۵۲، ۷/۲۹، الجزء ۱۳)

٢ . . . (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۱۹) (کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، الحدیث: ۳۶۲۲۰، ۷/۲۴، الجزء ۱۳)

﴾ मश्क़ ﴿

(1) **सुवाल :** ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "ज़ुन्नूरैन" का लक़ब कैसे मिला नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उन शहज़ादियों से क्या औलाद भी हुई....?

(2) **सुवाल :** क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़वए बद्र में शरीक थे, अगर नहीं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बद्री सह़ाबा में क्यूं शुमार किया जाता है....?

(3) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम व नसब बयान कीजिये नीज़ एक लिह़ाज़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का भान्जा होने का ए'ज़ाज़ ह़ासिल होता है, बताइये किस त़रह़....?

(4) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्या तफ़्सील के साथ बयान कीजिये.....?

﴾......इल्म सीखने से आता है.....﴿

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

"इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं ।" (المعجم الکبیر، ج۱۹، ص۵۱۱، الحدیث:۷۳۱۲)

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आयाते क़ुरआनी

अब कोई अ़मल नुक़्सान न पहुंचाएगा

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में भी क़ुरआने मजीद की आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं।

जंगे तबूक का वाक़िआ़ ऐसे वक़्त में पेश आया जब कि मदीनए मुनव्वरा में सख़्त क़ह़त़ पड़ा हुवा था और आ़म मुसलमान बहुत ज़ियादा तंगी में थे। यहां तक कि दरख़्त की पत्तियां खा कर लोग गुज़ारा करते थे। इसी लिये इस जंग के लश्कर को **जैशे उ़सरह** कहा जाता है या'नी तंगदस्ती का लश्कर।

तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है वोह फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस वक़्त ह़ाज़िर था जब कि आप जैशे उ़सरह की मदद के लिये लोगों को जोश दिला रहे थे। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पुर जोश लफ़्ज़ सुन कर खड़े हुए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **मैं सौ ऊंट पालान और सामान के साथ अल्लाह की राह में पेश करूंगा** । इस के बा'द फिर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को सामाने

लश्कर के बारे में तरग़ीब दी और इमदाद के लिये मुतवज्जेह फ़रमाया तो फिर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **! मैं दो सौ ऊंट मअ़ साज़ो सामान अल्लाह के रास्ते में नज़्र करूंगा ।** इस के बा'द फिर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सामाने जंग की दुरुस्तगी और फ़राहमी की त़रफ़ मुसलमानों को रग़बत दिलाई फिर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **! मैं तीन सौ ऊंट पालान और सामान के साथ ख़ुदाए तआ़ला की राह में ह़ाज़िर करूंगा ।**

ह़दीस के रावी ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर से उतरते जाते थे और फ़रमाते जाते थे :

"مَاعَلٰی عُثمان ماعَمِلَ بَعْدَ هذه، مَاعَلٰی عُثْمَانَ مَاعَمِلَ بَعْدَ هٰذِه"

या'नी एक ही जुम्ले को हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो बार फ़रमाया । **इस जुम्ले का मत़लब येह है कि अब उ़स्मान को वोह अ़मल कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाएगा जो इस के बा'द करेंगे ।**

मुराद येह है कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मले ख़ैर ऐसा आ'ला और इतना मक़्बूल है कि अब और नवाफ़िल न करें जब भी उन के मदारिजे उ़लिया के लिये काफ़ी है और इस मक़्बूलिय्यत

के बा'द अब उन्हें कोई अन्देशए ज़रर नहीं है ।(1)

(मिश्कात शरीफ़, स. 561)

.......तफ़्सीरे ख़ाज़िन और तफ़्सीरे मआ़लिमुल तन्ज़ील में है कि आप ने साज़ो सामान के साथ एक हज़ार ऊंट उस मौक़अ़ पर चन्दा दिया था ।(2)

.......और हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैशे उ़सरह की तय्यारी के ज़माने में एक हज़ार दीनार अपने कुर्ते की आस्तीन में भर कर लाए (दीनार साढ़े चार माशा सोने का सिक्का होता था) इन दीनारों को आप ने रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद में डाल दिया ।

राविये ह़दीस ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन दीनारों को अपनी गोद में उलट पलट कर देखते जाते थे और फ़रमाते जाते थे :

"مَاضَرَّ عُثمَانَ مَاعَمِلَ بَعدَ الیوم مَرَّتین" या'नी आज के बा'द उ़स्मान को उन का कोई अ़मल नुक़्सान नहीं पहुंचाएगा ।

---

١ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، الحدیث: ۳۷۲۰، ۵/۳۹۱)

٢ . . . (تفسیر الخازن، سورۃ البقرۃ، تحت الایۃ ۲۶۲، ۱/۲۰۶)

सरकारे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के बारे में इस जुम्ले को दो बार फ़रमाया ।[1]

मत्लब येह है कि फ़र्ज़ कर लिया जाए कि अगर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कोई ख़त़ा वाक़ेअ़ हो तो आज का इन का येह अ़मल उन की ख़त़ा के लिये कफ़्फ़ारा बन जाएगा । (मिश्कात शरीफ़, स. 561)

ख़र्च करने पर क़ुरआन की बिशारत

तफ़्सीरे ख़ाज़िन और **तफ़्सीरे मआ़लिमुल तन्ज़ील** में है कि जब ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैशे उ़सरह की इस त़रह़ मदद फ़रमाई कि एक हज़ार ऊंट साज़ो सामान के साथ पेश फ़रमाया और एक हज़ार दीनार भी चन्दा दिया और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सदक़े के चार हज़ार दिरहम बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पेश किये तो उन दोनों ह़ज़रात के बारे में येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

﴿ اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًىۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴾

---

۱ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، الحدیث: ۳۷۲۱، ۵/۳۹۲) (مشکوۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، الحدیث: ۶۰۷۳، ۲/۴۲۴، دار الکتب العلمیه)

या'नी जो लोग अपने माल को **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर देने के बा'द न एह़सान रखते हैं न तक्लीफ़ देते हैं तो उन का अज्रो सवाब उन के रब के पास है और न उन पर कोई ख़ौफ़ त़ारी होगा और न वोह ग़मगीन होंगे ।[1] (پ۳،ع۴)

......हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी अपनी **तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में तह़रीर फ़रमाया है कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई ।[2]

ऐ उहुद ! ठहर जा

ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक रोज़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم उहुद पहाड़ पर थे कि यकायक वोह हिलने लगा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

“اُثْبُتْ اُحُد! مَا عَلَیْکَ اِلَّا نَبِیٌّ اَوْ صِدِّیْقٌ اَوْ شَہِیْدَانِ”

۱...(تفسیر الخازن، سورۃ البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۶۲، ۱/۲۰۶)

۲...(تفسیر خزائن العرفان، سورۃ البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۶۲، پ۳)

या'नी ऐ उहुद ! तू ठहर जा कि तेरे ऊपर सिर्फ़ एक नबी या सिद्दीक़ या दो शहीद हैं।[1] (تفسیر معالم التنزیل، جلد۶، ص۱۲۶)

इस ह़दीस शरीफ़ से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहाड़ों पर भी अपना हुक्म नाफ़िज़ फ़रमाते थे और येह भी साबित हुवा कि ख़ुदाए तआ़ला ने आप को इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया था कि बरसों पहले ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के शहीद होने के बारे में हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़बर दे रहे हैं।

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेल्वी علیہ الرحمۃ والرضوان फ़रमाते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला

जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

शहादत का इन्तिज़ार

और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ूब जानते थे कि नदी का बहता हुवा धारा रुक सकता है। दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है। बल्कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर **अल्लाह** के मह़बूब दानाए ख़फ़ाया व ग़ुयूब जनाबे अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान नहीं टल सकता। इस लिये आप

[1]... (تفسیر معالم التنزیل، سورۃ الفتح، الآیۃ ۲۹)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी शहादत का इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे। तो येह और इन के इ़लावा दूसरे लोग जो अपनी शहादत के मुन्तज़िर थे जैसे कि दुल्हा व दुल्हन अपनी शादी की तारीख़ के मुन्तज़िर होते हैं तो उन के ह़क़ में येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

﴾ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّنْتَظِرُ ﴿[1] या'नी तो उन में से कोई वोह है जो अपनी मन्नत पूरी कर चुका (जैसे ह़ज़रते ह़म्ज़ा व मुस्अ़ब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) कि येह लोग जिहाद पर साबित रहे यहां तक कि जंगे उहुद में शहीद हो गए) और उन में से कोई वोह है जो (अपनी शहादत का) इन्तिज़ार कर रहा है।[2] (जैसे ह़ज़रते उ़स्मान और ह़ज़रते त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

दरख़्त के बदले बाग़ दे दिया

और ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माई़ल ह़क़्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीर फ़रमाते हैं कि मदीनए मुनव्वरा में एक मुनाफ़िक़ रहता था उस का दरख़्त एक अन्सारी पड़ोसी के मकान पर झुका हुवा था जिस का फल उन के मकान में गिरता था। अन्सारी ने सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस का ज़िक्र किया। उस वक़्त तक मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ लोगों पर ज़ाहिर नहीं हुवा था। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

١...(سورۃالاحزاب،الایة٢٣،پ٢١)

٢...(تفسیرالبیضاوی،سورۃالاحزاب،تحت الایة٢٣،پ٢١)

उस से फ़रमाया कि तुम दरख़्त अन्सारी के हाथ बेच डालो उस के बदले तुम्हें जन्नत का दरख़्त मिलेगा। मगर मुनाफ़िक़ ने अन्सारी को दरख़्त देने से इन्कार कर दिया। जब इस वाक़िए की ख़बर हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुई कि मुनाफ़िक़ ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान को मन्ज़ूर नहीं किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरा एक बाग़ दे कर दरख़्त को उस से ख़रीद लिया और अन्सारी को दे दिया। इस पर हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ और मुनाफ़िक़ की बुराई में येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

﴿ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿۱۰﴾ وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿۱۱﴾ الَّذِیْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿۱۲﴾ ﴾

या'नी अ़न क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है और उस से वोह बड़ा बद बख़्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में जाएगा।(1)

इस आयते मुबारका में ﴿ مَنْ يَّخْشٰى ﴾ से मुराद हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ﴿ اَشْقٰى ﴾ से मुराद उस दरख़्त का मालिक मुनाफ़िक़ है।(2) (تفسیر روح البیان، جلد۱۰، ص۴۰۸)

۱...(سورۃ الاعلی، الایۃ ۱۰، ۱۲، ۱۱، پ۳۰)

۲...(تفسیر روح البیان، سورۃ الاعلی، تحت الایۃ ۱۱، ۱۰، ۱۰/۴۰۸)

ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अह़ादीसे करीमा

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइलो मनाक़िब में बहुत सी ह़दीसें भी वारिद हैं।

फ़ितनों के वक़्त हिदायत पर

तिरमिज़ी और इब्ने माजा में ह़ज़रते मुर्रह बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि वोह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़मानए आयिन्दा में होने वाले फ़ितनों का ज़िक्र फ़रमा रहे थे कि इतने में एक साहिब सर पर कपड़ा डाले हुए इधर से गुज़रे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह शख़्स उस रोज़ हिदायत पर होगा।

ह़ज़रते मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह अल्फ़ाज़ सुन कर मैं उठा और उस शख़्स की त़रफ़ गया तो देखा कि वोह ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। फिर मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ उन का रुख़ किया और पूछा : क्या येह शख़्स उन फ़ितनों में हिदायत पर होंगे....? तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां येही।(1)

---

۱ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، الحدیث: ۳۷۲۴، ۵/۳۹۳)

शहादत की ग़ैबी ख़बर

और **तिरमिज़ी** में ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है : वोह फ़रमाते हैं कि रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुस्तक़्बिल में होने वाले फ़ितने का ज़िक्र किया तो इरशाद फ़रमाया कि येह **शख़्स उस फ़ितने में ज़ुल्म से क़त्ल किया जाएगा, येह कहते हुए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ इशारा फ़रमाया ।**[1]

जन्नत की ख़ुश ख़बरी

और बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है वोह फ़रमाते हैं कि मैं मदीनए त़य्यिबा के एक बाग़ में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह था कि एक साहिब आए और उस बाग़ का दरवाज़ा खुलवाया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **“اِفْتَحْ لَہٗ وَبَشِّرْہُ بِالْجَنَّۃِ”** या'नी दरवाज़ा खोल दो और आने वाले शख़्स को जन्नत की बिशारत दो । मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वोह ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं । मैं ने उन को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान के मुत़ाबिक़ जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी । इस पर ह़ज़रते अबू

---

١. . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، الحدیث: ٣٧٢٨، ٥/٣٩٥)س

बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुदाए तआ़ला का शुक्र अदा किया और उस की ह़म्दो सना की । फिर एक साहि़ब और आए और उन्हों ने दरवाज़ा खुलवाया । हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के बारे में भी फ़रमाया :

"اِفتَحْ لَہ وَبَشِّرْہ بِالجَنَّۃِ" या'नी इन के लिये भी दरवाज़ा खोल दो और इन को भी जन्नत की बिशारत दो । मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वोह ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं । मैं ने उन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश ख़बरी से मुत़्त़लअ़ किया । उन्हों ने ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना की और उस का शुक्र अदा किया । फिर एक तीसरे साहि़ब ने दरवाज़ा खुलवाया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया :

"اِفتَحْ لَہ وَبَشِّرْہ بِالجَنَّۃِ عَلٰی بَلْوٰی تُصِیْبُہ"

या'नी आने वाले के लिये दरवाज़ा खोल दो और उसे उन मुसीबतों पर जो उस शख़्स को पहुंचेंगी जन्नत की ख़ुश ख़बरी दो ।

राविये ह़दीस ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा आने वाले शख़्स ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं । मैं ने उन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद के मुत़ाबिक़ ख़ुश ख़बरी दी और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

फ़रमान से उन को आगाह किया । उन्हों ने खुदाए तआ़ला की ह़म्दो सना की उस का शुक्र अदा किया और फ़रमाया : "اللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ" या'नी आने वाली मुसीबतों पर **अल्लाह** तआ़ला से मदद त़लब की जाती है ।[1]

फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं

और **मुस्लिम शरीफ़** में ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है वोह फ़रमाती हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मकान में लेटे हुए थे और आप की रान या पिन्डली मुबारक से कपड़ा हटा हुवा था । इतने में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए और उन्हों ने ह़ाज़िरी की इजाज़त चाही । ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को बुलाया और वोह अन्दर आ गए मगर ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसी त़रह़ लेटे रहे और गुफ़्तगू फ़रमाते रहे । इस के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आ गए । उन्हों ने अन्दर आने की इजाज़त त़लब की । ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को भी इजाज़त दे दी और वोह भी अन्दर आ गए लेकिन ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फिर भी ब दस्तूर उसी त़रह़ लेटे रहे या'नी रान या पिन्डली से कपड़ा हटा रहा । फिर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ गए और आप ने अन्दर आने की इजाज़त

---

[1] ... (صحیح البخاری، کتاب المناقب، مناقب عثمان بن عفان، الحدیث: ۳۶۹۵، ۲/۵۲۹)

चाही तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया। इस के बा'द ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अन्दर आने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई।

राविये ह़दीस ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब येह लोग चले गए तो मैं ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वज्ह है कि मेरे बाप ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब दस्तूर लेटे रहे फिर ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब दस्तूर लेटे रहे। और जुम्बिश भी नहीं फ़रमाई। लेकिन जब ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो आप उठ कर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस सुवाल के जवाब में सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"اَلَا اَسْتَحْیِیْ مِنْ رَجُلٍ تَسْتَحْیِیْ مِنْہُ الْمَلَائِکَۃ"

या'नी क्या मैं उस शख़्स से ह़या न करूं जिस से फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं।[1]

1... (صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، الحدیث: ۲۴۰۱، ص ۱۳۰۷)

سُبْحَانَ الله ! हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दरजा क्या ही बुलन्दो बाला और अ़ज़्मत वाला है कि फ़िरिश्ते आप से ह़या करते हैं यहां तक कि सय्यिदुल अम्बिया और नबिय्युल अम्बिया जनाबे अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी आप से ह़या फ़रमाते हैं।

आप की त़रफ़ से बैअ़त फ़रमाई

तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है वोह फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक़ामे हुदैबिया में बैअ़ते रिज़्वान का हुक्म फ़रमाया। उस वक़्त ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ासिद की है़सिय्यत से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा गए हुए थे। लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर बैअ़त की। जब सब लोग बैअ़त कर चुके तो रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उ़स्मान ख़ुदा और रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के काम से गए हुए हैं। फिर अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर मारा। या'नी ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से ख़ुद बैअ़त फ़रमाई। लिहाज़ा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये उन हाथों से बेहतर है जिन्हों ने अपने हाथों से अपने लिये बैअ़त की।[1]

---

١ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، الحدیث: ۳۷۲۲، ۵/۳۹۲)

......हज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी बुख़ारी عَلَيْهِ الرحمة والرضوان "अशिअ़अ़तुल लमआ़त" में इस ह़दीस के तह़त तह़रीर फ़रमाते हैं कि **सरकारे अक़्दस** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने अपने दस्ते मुबारक को ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **का हाथ क़रार दिया। येह वोह फ़ज़ीलत है जो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **के साथ ख़ास है।**[1]

या'नी इस फ़ज़ीलत से इन के सिवा और कोई दूसरा सह़ाबी कभी मुशर्रफ़ नहीं हुवा।

मस्नदे ख़िलाफ़त मत छोड़ना

तिरमिज़ी शरीफ़ और इब्ने माजा में ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक रोज़ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया कि **ऐ उ़स्मान! ख़ुदाए तआ़ला तुझ को एक क़मीस पहनाएगा या'नी ख़िलअ़ते ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। फिर अगर लोग उस क़मीस के उतारने का तुझ से मुत़ालबा करें तो उन की ख़्वाहिश पर उस क़मीस को मत उतारना या'नी ख़िलाफ़त नहीं छोड़ना** इसी लिये जिस रोज़ इन को शहीद किया गया उन्हों ने ह़ज़रते अबू सहला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से

١... (اشعۃ اللمعات، کتاب الفتن، باب مناقب عثمان، ۴/۲۶۸)

फ़रमाया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ को ख़िलाफ़त के बारे में वसिय्यत फ़रमाई थी। इसी लिये मैं इस वसिय्यत पर क़ाइम हूं और जो कुछ मुझ पर बीत रही है उस पर सब्र कर रहा हूं।(1)

दो बार जन्नत ख़रीदी

हाकिम ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो बार जन्नत ख़रीदी है। एक बार तो "बीरे रूमा" ख़रीद कर और दूसरी बार "**जैशे उ़सरह**" के लिये सामान दे कर। जैशे उ़सरह के लिये जो सामान आप ने फ़राहम किया था इस का बयान पहले हो चुका है और बीरे रूमा की ख़रीदारी का वाक़िआ़ येह है कि जब सरकारे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत फ़रमा कर मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ ले गए तो उस ज़माने में वहां बियरे रूमा के इलावा और किसी कूंवें का पानी मीठा न था। येह कूंवां वादिये अ़क़ीक़ के कनारे एक पुर फ़ज़ा बाग़ में है जो मदीनए त़य्यिबा से तक़रीबन चार किलो मीटर के फ़ासिले पर है। इस कूंएं का मालिक यहूदी था जो इस का पानी फ़रोख़्त किया करता था और मुसलमानों को पानी की सख़्त तक्लीफ़ थी तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरग़ीब पर हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आधा कूंवां बारह हज़ार दिरहम में ख़रीद कर मुसलमानों पर वक़्फ़

---

١ . . . (سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب عثمان، الحدیث: ٣٧٢٥، ٥/٣٩٣)

कर दिया और तै़ येह पाया कि एक रोज़ मुसलमान पानी भरेंगे और दूसरे दिन यहूदी। मगर जब यहूदी ने देखा कि मुसलमान एक रोज़ में दो रोज़ का पानी भर लेते हैं और मेरा पानी ख़ातिर ख़्वाह नहीं बिकता तो परेशान हो कर बक़िया आधा भी ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ आठ हज़ार दिरहम में बेच दिया। **उस कूंवें को आज कल "बियरे ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" कहते हैं।**[1]

رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ وارضاہ عنا وعن سائر المسلمین

मिस्री के ए'तिराज़ात, इब्ने उ़मर के जवाबात

ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मौहिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मिस्र का रहने वाला एक शख़्स ह़ज के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ़ आया। उस ने एक जगह कुछ लोगों को बैठे हुए देखा तो पूछा कि येह कौन लोग हैं? जवाब दिया गया कि येह लोग कु़रैश हैं। उस ने पूछा कि इन लोगों का शैख़ कौन है? जवाब दिया गया कि इन लोगों के शैख़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर हैं (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)। अब उस ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा कि ऐ इब्ने उ़मर! मैं कुछ सुवाल करना चाहता हूं आप उस का जवाब दें। क्या आप को मा'लूम है कि उ़स्मान उहुद की जंग से भाग गए थे। ह़ज़रते

---

1 ... (المستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة، باب اشتری عثمان الجنه مرتین، الحدیث:۴۶۲۲، ۴/ ۲۸)

इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि हां ऐसा हुवा था। फिर उस शख़्स ने दरयाफ़्त किया : क्या आप को मा'लूम है कि बद्र की लड़ाई से उ़स्मान ग़ाइब थे और मा'रिकए बद्र में वोह शरीक न हुए थे।

हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने जवाब दिया कि हां वोह बद्र के मा'रिके में मौजूद न थे। फिर उस शख़्स ने पूछा : क्या आप को मा'लूम है कि उ़स्मान बैअ़ते रिज़्वान के मौक़अ़ पर भी ग़ाइब थे और उस में शरीक न हुए थे, हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि हां वोह बैअ़ते रिज़्वान के मौक़अ़ पर भी मौजूद न थे और उस में शामिल न थे। हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से तीनों बातों की तस्दीक़ सुन कर उस शख़्स ने اَللّٰہُ اَکۡبَر कहा।

बज़ाहिर उस मिस्री शख़्स का सुवाल था लेकिन ह़क़ीक़त में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ाते गिरामी पर उस का ए'तिराज़ था। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने उस से फ़रमाया कि इधर आ मैं तुझ से ह़क़ीक़ते ह़ाल बयान कर के तेरे शुब्हात दूर कर दूं। **उहुद के मा'रिके से ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के भाग जाने के मुतअ़ल्लिक़ मैं तुझ से येह कहता हूं कि ख़ुदाए ज़ुल जलाल ने उन की ग़लती को मुआ़फ़ फ़रमा दिया**। जैसा कि क़ुरआने मजीद में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْاۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴾

या'नी बेशक वोह लोग जो तुम में से फिर गए जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं उन के बा'ज़ आ'माल के सबब उन्हें शैत़ान ही ने लग़्ज़िश दी और बेशक **अल्लाह** ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला ह़िल्म वाला है ।[1]

और जंगे बद्र में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मौजूद न होना इस का वाक़िआ येह है कि ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादी और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी उस ज़माने में बीमार थीं । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन की देख भाल के लिये मदीनए त़य्यिबा में छोड़ दिया था और फ़रमाया था कि उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जंगे बद्र में शरीक होने वालों में से एक मुजाहिद का सवाब मिलेगा और माले ग़नीमत में से भी एक शख़्स का हि़स्सा दिया जाएगा ।

अब रहा मुआ़मला बैअ़ते रिज़्वान से ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ाइब होना तो इस की वज्ह येह है कि अगर मक्कए

1 ...(سورۂ اٰل عمران، الاٰیۃ ۱۵۵، پ ۴)

मुअ़ज़्ज़मा में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा बा इ़ज़्ज़त और हर दिल अ़ज़ीज़ कोई और शख़्स होता तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसी को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा भेजते मगर चूंकि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा हर दिल अ़ज़ीज़ और बा इ़ज़्ज़त मक्का शरीफ़ वालों की निगाह में कोई और शख़्स न था इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हीं को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रवाना फ़रमाया ताकि वोह आप की त़रफ़ से कुफ़्फ़ारे मक्का से बात चीत करें **तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के हुक्म से मक्कए मुकर्रमा चले गए । इस त़रह़ उन की ग़ैर मौजूदगी में बैअ़ते रिज़्वान का वाक़िआ़ पेश आया और हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने बैअ़ते रिज़्वान के वक़्त अपने दाहने हाथ को उठा कर फ़रमाया कि येह उ़स्मान का हाथ है और फिर उस हाथ को अपने दूसरे हाथ पर मार कर फ़रमाया कि येह उ़स्मान की बैअ़त है ।** इस के बा'द ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अभी जो मैं ने तेरे सामने बयान किया है तू इस को ले जा कि येही तेरे सुवालात के मुकम्मल जवाबात हैं ।[1]

---

1 ... (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، باب مناقب عثمان، الحدیث: ۳۶۹۸، ۲/۵۳۰)

मश्क़

(1) **सुवाल :** जैशे उ़सरह के मौक़अ़ पर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस क़दर माल राहे ख़ुदा में पेश किया नीज़ उन्हें इस पर किन बिशारतों से नवाज़ा गया....?

(2) **सुवाल :** ऐ उहुद ! ठहर जा....येह ह़दीस किन किन अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की मुअय्यिद है.....?

(3) **सुवाल :** ﴿فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ قَضٰی نَحۡبَهٗ وَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ یَّنۡتَظِرُ ۫﴾ इस आयते मुबारका में कौन से लोग मुराद हैं....?

(4) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दरख़्त पूरा बाग़ दे कर क्यूं ख़रीदा नीज़ उस मौक़अ़ पर कौन सी आयते मुबारका नाज़िल हुई.....?

(5) **सुवाल :** फ़ितनों के वक़्त हिदायत पर होने वाली रिवायत मअ़ ह़वाला बयान कीजिये.....?

(6) **सुवाल :** "आने वाले को जन्नत की ख़ुश ख़बरी दो" येह रिवायत किन अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की मुअय्यिद है......?

(7) **सुवाल :** "मैं उस से ह़या क्यूं न करूं जिस से फ़िरिश्ते ह़या करते हैं" सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह किस के मुतअ़ल्लिक़ और कब फ़रमाया......?

(8) **सुवाल :** बैअ़ते रिज़्वान के मौक़अ़ पर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क्यूं ह़ाज़िर न थे......?

(9) **सुवाल :** "ऐ उ़स्मान ! ख़ुदा तुझे क़मीस पहनाएगा" यहां क़मीस से क्या मुराद है नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कितनी बार जन्नत ख़रीदी.....?

(10) **सुवाल :** मिस्री के ए'तिराज़ात और इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के जवाबात तफ़्सीलन ज़िक्र कीजिये.....?

.....मदनी इन्क़िलाब.....

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये **"दा'वते इस्लामी"** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** से **"मदनी इन्आ़मात"** नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये। और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के लिये बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर **"मदनी इन्क़िलाब"** बरपा होता देखेंगे।

आप की ख़िलाफ़त

हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَالرِّضْوَان अपनी मश्हूर किताब तारीख़ुल ख़ुलफ़ा में तह़रीर फ़रमाते हैं कि ज़ख़्मी होने के बा'द ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त जब ज़ियादा नासाज़ हुई तो लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया कि या अमीरल मोमिनीन ! आप हमें कुछ वसिय्यतें फ़रमाइये और ख़िलाफ़त के लिये किसी का इन्तिख़ाब फ़रमा दीजिये **तो ह़ज़रते उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने इरशाद फ़रमाया कि ख़िलाफ़त के लिये इलावा उन छे सह़ाबा के जिन से रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **राज़ी और ख़ुश रह कर इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए हैं मैं किसी और को मुस्तह़िक़ नहीं समझता हूं। फिर आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने ह़ज़रते उ़स्मान, ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते त़लह़ा, ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास** (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) **के नाम लिये** और फ़रमाया कि मेरे लड़के अ़ब्दुल्लाह मजलिसे शूरा में इस के साथ रहेंगे। लेकिन ख़िलाफ़त से उन्हें कोई सरोकार नहीं होगा। अगर सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिख़ाब हो जाए तो वोह इस का ह़क़ रखते हैं वरना इन छे सह़ाबियों में से जिस को चाहें मुन्तख़ब कर लें और मैं ने सा'द बिन अबी वक़्क़ास को किसी आ़जिज़ी और ख़ियानत के सबब मा'ज़ूल नहीं किया था। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ने फ़रमाया कि मैं अपने बा'द ख़लीफ़ा होने वाले को वसिय्यत करता हूं ताकि वोह **अल्लाह** तआ़ला से डरता रहे और सब अन्सार व मुहाजिरीन और सारी रिआ़या के साथ भलाई से पेश आता रहे।

जब ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हो गया और लोग उन की तजहीज़ो तक्फ़ीन से फ़ारिग़ हो गए तो तीन रोज़ बा'द ख़लीफ़ा को मुन्तख़ब करने के लिये जम्अ़ हुए। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों से फ़रमाया कि पहले तीन आदमी अपना ह़क़ तीन आदमियों को दे कर दस्त बरदार हो जाएं। लोगों ने इस बात की ताईद की तो ह़ज़रते ज़ुबैर ह़ज़रते अ़ली को ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान को और ह़ज़रते त़लह़ा ह़ज़रते उ़स्मान को अपना ह़क़ दे कर दस्त बरदार हो गए। رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن

येह तीनों ह़ज़रात राए मश्वरा करने के लिये एक त़रफ़ चले गए। वहां ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं अपने लिये ख़िलाफ़त पसन्द नहीं करता अब आप लोगों में से भी जो ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी से दस्त बरदार होना चाहे वोह बता दे इस लिये कि जो बरी होगा हम ख़िलाफ़त उसी के सिपुर्द करेंगे और जो शख़्स ख़लीफ़ा हो उस के लिये ज़रूरी है कि वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में सब से अफ़्ज़ल हो और इस्लाहे उम्मत की बहुत ख़्वाहिश रखता है। इस बात के जवाब में ह़ज़रते उ़स्मान और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) या'नी दोनों ह़ज़रात चुप रहे

तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि अच्छा आप लोग इस इन्तिख़ाब का काम हमारे सिपुर्द कर दें। क़सम ख़ुदा की ! मैं आप लोगों में से बेहतर और अफ़्ज़ल शख़्स का इन्तिख़ाब करूंगा। दोनों ह़ज़रात ने फ़रमाया कि हम लोगों को मन्ज़ूर है हम इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा का काम आप के सिपुर्द करते हैं।

अब इस के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ले कर एक त़रफ़ गए और उन से कहा कि ऐ अ़ली ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम क़बूल करने में साबिक़ीने अव्वलीन में से हैं और आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीबी अ़ज़ीज़ हैं लिहाज़ा आप को अगर मैं ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो आप क़बूल फ़रमा लें और अगर मैं किसी दूसरे को आप पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो उस की इत़ाअ़त करें। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मुझे मन्ज़ूर है।

इस के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ले कर एक त़रफ़ गए और उन से भी तन्हाई में इसी क़िस्म की गुफ़्तगू की तो उन्हों ने भी दोनों बातों को तस्लीम कर लिया। **जब उन दोनों ह़ज़रात से अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस क़िस्म का अ़ह्दो पैमान ले लिया तो इस के बा'द आप ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी**

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैअ़त कर ली और इन के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी बैअ़त कर ली।(1)

ख़िलाफ़त पर राए आ़म्मा

तारीख़ुल ख़ुलफ़ा में इब्ने अ़साकिर के ह़वाले से है कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बजाए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस लिये ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया कि जो भी साइबुर्राए तन्हाई में इन से मिलता वोह येही मश्वरा देता कि ख़िलाफ़त ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को मिलनी चाहिये। वोह इस के लिये सब से ज़ियादा मुस्तह़िक़ हैं। चुनान्चे,

एक रिवायत में यूं आया है कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़म्दो सलात के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : **ऐ अ़ली ! मैं ने सब लोगों की राए मा'लूम कर ली है। ख़िलाफ़त के बारे में सब की राए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये है** येह कह कर आप ने ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ा और कहा कि मैं सुन्नते ख़ुदा, सुन्नते रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दोनों ख़ुलफ़ा की सुन्नत पर आप से बैअ़त करता हूं। इस त़रह़ सब से पहले ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، عمر بن خطاب، ص۱۰۷)(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، الحدیث: ۳۷۰۰، ۲/۵۳۳)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बैअ़त की फिर तमाम मुहाजिरीन व अन्सार ने उन से बैअ़त की।(1)

ह़ज़रते अ़ली ख़लीफ़ए सिवुम क्यूं न बने

और **मुस्नदे इमाम अह़मद** में ह़ज़रते अबू वाइल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस त़रह़ मरवी है : इन्हों ने फ़रमाया कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया कि आप ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को छोड़ कर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क्यूं बैअ़त की ? उन्हों ने फ़रमाया कि इस में मेरा क़ुसूर नहीं है। **मैं ने पहले ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही से कहा कि मैं किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुन्नत पर आप से बैअ़त करता हूं तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता। इस के बा'द मैं ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इसी क़िस्म की गुफ़्तगू की तो उन्हों ने क़बूल कर लिया।**(2) (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 24)

ग़ुनयतुत्त़ालिबीन जो ह़ज़रते ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तस्नीफ़ मश्हूर है। इस में भी येही रिवायत मज़्कूर है तो इस रिवायत की बुन्याद पर येह कहा जाएगा कि ग़ालिबन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

---

١ ...(السنن الکبری، کتاب قتال اہل البغی، باب کیفیۃ البیعۃ، الحدیث:١٦٥٦٣، ٨/٢٥٣)

٢ ...(المسند للامام احمد، مسند عثمان بن عفان، الحدیث:٥٥٧، ١/١٦٢)

उस वक़्त ख़िलाफ़त से इस लिये इन्कार कर दिया कि उन पर आ़म सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का रुजह़ान ज़ाहिर हो चुका था कि वोह मेरे बजाए ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुक़र्रर करना चाहते हैं तो आप ने सह़ाबा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ ज़बरदस्ती उन का ख़लीफ़ा बनना पसन्द न फ़रमाया। رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم

......और एक रिवायत में येह भी है कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने तन्हाई में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया कि अगर मैं आप से बैअ़त न करूं तो मुझे आप किस से बैअ़त करने का मश्वरा देंगे....? उन्हों ने फ़रमाया कि अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) से। फिर मैं ने इसी त़रह़ तन्हाई में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि अगर मैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त न करूं तो आप मुझे किस की बैअ़त का मश्वरा देंगे? उन्हों ने फ़रमाया : उ़स्मान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) फिर मैं ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर इसी त़रह़ तख़्लिया में उन से दरयाफ़्त किया कि अगर मैं आप की बैअ़त न करूं तो आप मुझे किस से बैअ़त करने की राए देंगे....? उन्हों ने फ़रमाया कि ह़ज़रते अ़ली या ह़ज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से।

......ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि फिर मैं ने ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और उन से कहा कि मेरा और आप का इरादा ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन बनने का तो है

नहीं तो फिर आप मुझे किस से बैअ़त करने का मश्वरा देंगे ? उन्हों ने फ़रमाया कि हज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) से फिर हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मुहाजिरीन व अन्सार से मश्वरा किया तो अक्सर लोगों की राए हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पाई गई । इस लिये उन्हों ने हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बैअ़त की ।(1)

एक ए'तिराज़ और इस का जवाब

राफ़िज़ी कहते हैं कि सब से पहले ख़िलाफ़त के ह़क़दार ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे मगर लोगों ने इन के ह़क़ को ग़स्ब कर लिया कि पहले (ह़ज़रते) अबू बक्र फिर (ह़ज़रते) उ़मर और फिर (ह़ज़रते) उ़स्मान को ख़लीफ़ा बनाया (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) इस त़रह़ मुसलसल ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़क़ तलफ़ी की गई ।

फिर राफ़िज़ी इसी पर इक्तिफ़ा नहीं करते बल्कि ह़ज़राते ख़ुलफ़ाए सलासा और दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم जिन्हों ने उन को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया उन सब से बुग़्ज़ो अ़दावत रखते हैं और उन को बुरा भला कहते हैं ।

---

1 . . . (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، خلافتہ، ص ۱۲۲)

इस ए'तिराज़ का जवाब येह है कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले जो लोग ख़लीफ़ा हुए और जिन्हों ने उन को ख़लीफ़ा बनाया येह वोह लोग हैं कि जिन की ख़ुदाए तआ़ला ने मद्ह़ फ़रमाई है और उन की ता'रीफ़ो तौसीफ़ में कुरआने मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं। मसलन पारह 27 में है :

﴿ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ ﴾

या'नी तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का से पहले ख़र्च और जिहाद किया वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का के बा'द ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से अल्लाह जन्नत का वा'दा फ़रमा चुका।[1] चुनान्चे पारह 11, रुकूअ़ 2 में है :

﴿ وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ﴾

या'नी और सब में अगले पहले मुहाजिरीन व अन्सार और जो भलाई के साथ उन की इत्तिबाअ़ किये। अल्लाह उन से राज़ी

---

١ . . . (سورة الحديد، الاية ١٠، پ٢٧)

हुवा और वोह **अल्लाह** से राज़ी हुए ।(1)

﴿ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِیْنَ الَّذِیْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَ اَمْوَالِهِمْ یَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا وَّ یَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴾.....(पारह 28, रुकूअ़ 4 में है)

या'नी हिजरत करने वाले फ़क़ीरों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रिज़ा चाहते हैं और **अल्लाह** व रसूल की मदद करते हैं । वोही लोग सच्चे हैं ।(2)

.....फिर इसी पारे (पारह 28, रुकूअ़ 4 में है) ﴿ وَ الَّذِیْنَ تَبَوَّؤُا الدَّارَ وَ الْاِیْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ یُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَیْهِمْ وَ لَا یَجِدُوْنَ فِیْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّاۤ اُوْتُوْا وَ یُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ۫ وَ مَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴾

और जिन लोगों ने पहले से उस (मदीनए मुनव्वरा) शहर में और ईमान में घर बना लिया, वोह दोस्त रखते हैं उन लोगों को जो उन की त़रफ़ हिजरत कर के गए और वोह लोग अपने दिलों में कोई ह़ाजत नहीं पाते, उस चीज़ की जो (मुहाजिरीन माले ग़नीमत) दिये गए और (अन्सार) अपनी

١...(سورۃالتوبہ،الایۃ۱۰۰،پ۱۱)

٢...(سورۃالحشر،الایۃ۸،پ۲۸)

जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।[1]

(पारह 4, रुकूअ़ 8 में है)

﴿ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ ... ﴾

या'नी बेशक अल्लाह का मुसलमानों पर बड़ा एह़सान हुवा कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर ख़ुदाए तआ़ला की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता है।[2]

इस क़िस्म की और भी बहुत सी आयाते करीमा हैं जिन में ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब की वाज़ेह़ लफ़्ज़ों में ता'रीफ़ो तौसीफ़ बयान फ़रमाई है।

......अब आप लोग ग़ौर कीजिये कि पहली आयते करीमा में फ़रमाया गया है : ﴿وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ط﴾

या'नी फ़त्ह़े मक्का से पहले और इस के बा'द अल्लाह की राह में ख़र्च करने और लड़ाई करने वाले हर एक से अल्लाह तआ़ला ने भलाई का वा'दा फ़रमाया है।

---

١ ...(سورۃالحشر،الایۃ ٩،پ ٢٨)

٢ ...(سورۂ اٰل عمران،الایۃ ١٦٤،پ ٤)

.....और दूसरी आयते मुबारका में है :

﴿رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡہُ﴾ या'नी अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी है और वोह अल्लाह तआ़ला से राज़ी हैं ।

......और तीसरी आयते मुबारका में फ़रमाया गया :

﴿اُولٰٓئِکَ ھُمُ الصّٰدِقُوۡنَ﴾ या'नी वोही लोग सच्चे हैं ।

.......और चौथी आयते मुबारका में है :

﴿فَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ﴾ या'नी वोही लोग फ़लाह़ याफ़्ता और कामयाब हैं ।

.......और पांचवीं आयते मुबारका में फ़रमाया गया :

﴿وَیُزَکِّیۡہِمۡ ...﴾ नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन का तज़्किया फ़रमाते हैं या'नी ना पसन्दीदा ख़स्लतों और बुरी बातों से उन को पाक व साफ़ करते हैं और सालेह़ बनाते हैं ।

अल्लाह तआ़ला ने इस आयते मुबारका में ख़बर दी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुज़क्की हैं । तो इस बात पर ईमान लाना ज़रूरी है कि सह़ाबए किराम के क़ुलूब का उन्हों ने तज़्किया फ़रमाया इस लिये कि अगर उन के क़ुलूब का तज़्किया नहीं फ़रमाया तो वोह मुज़क्की नहीं हो सकते और जब हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के क़ुलूब का तज़्किया फ़रमाया तो मानना पड़ेगा कि वोह नेकूकार और सालेह़ हैं, उन के अख़्लाक़ बुलन्द हैं, वोह औसाफ़े

ह़मीदा वाले हैं। उन की निय्यतें सह़ीह़ हैं और उन का अ़मल हमारे लिये मश्अ़ले राह है।

लिहाज़ा सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم कि जिन से अल्लाह तआ़ला ने भलाई का वा'दा फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी और वोह अल्लाह तआ़ला से राज़ी और ऐसे लोग कि जो फ़लाह़ याफ़्ता और सच्चे हैं और जिन के क़ुलूब मुज़क्का व मुजल्ला हैं उन के बारे में येह फ़ासिद ए'तिक़ाद रखना कि उन्हों ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه के ह़क़ को ग़स्ब कर लिया इन्तिहाई बद नसीबी व बद बख़्ती है बल्कि क़ुरआन शरीफ़ को झुटलाना है। العیاذباللہ تعالی

बादशाह जिस जमाअ़त से राज़ी हो और उन की ता'रीफ़ो तौसीफ़ बयान करता हो उस जमाअ़त से बुग़्ज़ो अ़दावत रखना और उन की बुराई करना बादशाह की नाराज़गी का सबब होगा तो ख़ुदाए ज़ुल जलाल जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم से राज़ी है और अपनी किताब क़ुरआने मजीद में जगह जगह उन की ता'रीफ़ो तौसीफ़ बयान फ़रमाता है उस मुबारक जमाअ़त से बुग़्ज़ो अ़दावत रखना और उन की बुराई करना ख़ुदाए तआ़ला की सख़्त नाराज़गी का सबब है।

सह़ाबा का गुस्ताख़ बे दीन है

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू ज़ुरआ़ राज़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه जो तबए़ ताबेईन में से हैं उन्हों ने इस सिलसिले में निहायत ही उ़म्दा बात फ़रमाई है।

फ़रमाते हैं :

"اِذَا رَأَيْتَ الرَّجُلَ اَنَّهُ يُنَقِّصُ اَحَدًا مِّنْ اَصْحَابِ رَسُولِ اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم فَاعْلَمْ اَنَّه زِنْدِيقٌ"

या'नी जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वोह रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब में से किसी की तन्क़ीस करता है उन में नुक़्स निकालता है तो जान लो कि वोह ज़िन्दीक़ और बे दीन है। इस लिये कि कुरआन और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हर फ़रमान हमें सह़ाबा ही के वासित़े से मिला है तो उन की ज़ात में बुराई साबित करना और उन को ग़लत़ ठहराना कुरआनो ह़दीस को बाति़ल क़रार देना है।[1] العياذ بالله تعالى

आप का पहला ख़ुत़बा

तारीख़ुल ख़ुलफ़ा में इब्ने सा'द के ह़वाले से है कि ख़लीफ़ा मुन्तख़ब होने के बा'द जब ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ुत़बा देने के लिये खड़े हुए तो आप कुछ बयान न कर सके। सिर्फ़ इतना फ़रमाया कि ऐ लोगो ! पहली मरतबा घोड़े पर सुवार होना बड़ा मुश्किल होता है। आज के बा'द बहुत से दिन आएंगे। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो اِنْ شَآءَ الله تَعَالٰی आप लोगों के सामने ज़रूर ख़ुत़बा दूंगा। हमारे ख़ानदान

---

1 . . . (تاریخ مدینۃ دمشق، عبید اللہ بن عبد الکریم، ۳۲/۳۸)

के लोग ख़त़ीब नहीं हुए हैं, ख़ुदाए तआ़ला से उम्मीद है कि वोह अ़न क़रीब हमें ख़ुत़बा देने पर क़ुदरत अ़त़ा फ़रमाएगा।(1)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बराबरी मुतसव्वर भी नहीं

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेल्वी عَلَیْہِ الرحمۃُ والرِضْوان तह़रीर फ़रमाते हैं कि ''मिम्बर के तीन ज़ीने थे इलावा ऊपर के तख़्ते कि जिस पर बैठते हैं। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दरजए बाला पर ख़ुत़बा फ़रमाया करते। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दूसरे पर पढ़ा। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीसरे पर। जब ज़माना ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आया तो फिर अव्वल पर ख़ुत़बा फ़रमाया। सबब पूछा गया, फ़रमाया : अगर दूसरे पर पढ़ता लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक़ का हमसर हूं और तीसरे पर, तो वहम होता कि फ़ारूक़ के बराबर हूं। लिहाज़ा वहां पढ़ा जहां येह एह़तिमाल मुतसव्वर ही नहीं।(2)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जुम्ले क़ाबिले ग़ौर हैं वोह फ़रमाते हैं कि अगर दूसरे पर पढ़ता लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक़ का हमसर हूं। सुवाल येह पैदा होता है कि अगर लोग इन को ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हमसर गुमान करते तो क्या इस में कोई ख़राबी थी....?

---

١ . . . (الطبقات الکبریٰ، ذکر بیعۃ عثمان بن عفان، ۴۲/۳)
٢ . . . (فتاویٰ رضویہ، ۳۴۳/۸)

हां बेशक ख़राबी थी। इस लिये कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह हरगिज़ मन्ज़ूर नहीं था कि लोग उन को सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हमसर गुमान करें। इसी त़रह़ उन को येह भी गवारा नहीं था कि लोग उन के बारे में वह्म करें कि वोह ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बराबर हैं। इसी लिये फ़रमाया कि अगर तीसरे पर पढ़ता तो वह्म होता कि फ़ारूक़ के बराबर हूं।

मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से बराबरी का दा'वा करना तो बहुत दूर की बात है उन को इतना भी गवारा नहीं था कि उन के बारे में कोई येह वह्मो गुमान करे कि वोह ह़ज़राते शैख़ैन के हमसर व बराबर हैं इसी लिये वोह सब से ऊपर वाले दरजे पर ख़ुत़बा पढ़ते।

फिर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह जुम्ला भी क़ाबिले तवज्जोह है कि मैं ने वहां ख़ुत़बा पढ़ा जहां येह (या'नी हमसरी व बराबरी का) एह़तिमाल मुतसव्वर ही नहीं। मत़लब येह हुवा कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से कोई भी येह तसव्वुर कर ही नहीं सकता था कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बराबरी व हमसरी का दा'वा कर सकते हैं। साबित हुवा कि अगर कोई आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बराबरी व हमसरी का दा'वा करे तो वोह गुस्ताख़ व बे अदब है और

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के रास्ते से अलग है और ह़दीस शरीफ़ "مَااَنَاعَلَیْہِ وَاَصْحَابِیْ"[1] के मुत़ाबिक़ इन्हीं के रास्ते पर चलने वाले जन्नती हैं बाक़ी सब जहन्नमी ।

आप के ज़मानए ख़िलाफ़त की फ़ुतूह़ात

हज़रते उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में भी इस्लामी फ़ुतूह़ात का दाइरा बराबर वसीअ़ होता रहा । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त के पहले साल या'नी 24 हिजरी में "**रै**" फ़त्ह़ हुवा । रै ख़ुरासान का एक शह्‌र है जो आज कल ईरान का दारुस्सलत़नत है और इसे तेहरान कहते हैं । 26 हिजरी में शह्‌र "**साबूर**" फ़त्ह़ हुवा ।[2]

बह़री बेड़े के ज़रीए ह़म्ला

हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मुल्के शाम के गवर्नर थे उन्हों ने हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कई बार येह दरख़्वास्त पेश की थी कि बह़री बेड़े के ज़रीए क़ुबरुस पर ह़म्ले की इजाज़त दी जाए मगर आप ने इजाज़त नहीं दी लेकिन जब हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का

---

۱ . . . (سنن الترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی افتراق . . .، الحدیث: ۲۶۵۰، ۴/۲۹۱)

۲ . . . (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۲۳)

इसरार बहुत ज़ियादा हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समुन्दर और बादबानी जहाज़ों की कैफ़िय्यत मुफ़स्सल त़रीक़े से लिख कर मुझे रवाना करो। उन्हों ने लिखा कि मैं ने बादबानी जहाज़ को देखा है जो एक बड़ी मख़्लूक़ है और उस पर छोटी मख़्लूक़ सुवार होती है। जब वोह जहाज़ ठहर जाता है तो लोगों के दिल फटने लगते हैं और जब वोह चलता है तो अ़क़्लमन्द लोग भी ख़ौफ़ ज़दा हो जाते हैं। इस में अच्छाइयां कम हैं और ख़राबियां ज़ियादा हैं। इस में सफ़र करने वालों की हैसिय्यत कीड़े मकोड़ों जैसी है। अगर येह सुवारी किसी त़रफ़ को झुक जाए तो उ़मूमन लोग डूब जाते हैं और अगर बच जाते हैं तो इस ह़ाल में साह़िल तक पहुंचते हैं कि कांपते रहते हैं।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़त़ इस मज़्मून का पढ़ा तो ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि "وَاللّٰہِ لَا اُحَمِّلُ فِیْہِ مُسْلِمًا اَبَدًا" या'नी क़सम है ख़ुदाए तआ़ला की ! मैं ऐसी सुवारी पर मुसलमानों को कभी सुवार नहीं कर सकता। इस त़रह़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में क़ुबरुस पर मुसलमानों का ह़म्ला नहीं हो सका। **लेकिन जब ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़मानए ख़िलाफ़त आया तो इन के हुक्म से 27 हिजरी में जहाज़ के**

ज़रीए़ ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लश्कर ले जा कर क़ुबरुस पर ह़म्ला कर के उस को फ़त्ह़ कर लिया और जिज़्या लेने की शर्त़ मन्ज़ूर कर ली ।[1]

और कोई ग़ैब क्या...

जिस लश्कर ने बह़री रास्ते से जा कर क़ुबरुस पर ह़म्ला किया था । उस लश्कर में मश्हूरो मा'रूफ़ सह़ाबी ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी अहलियए मोह़तरमा ह़ज़रते उम्मे ह़िराम बिन्ते मिल्ह़ान अन्सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ मौजूद थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी जानवर से गिर कर इन्तिक़ाल कर गईं तो इन को वहीं क़ुबरुस में दफ़्न कर दिया गया । इस लश्कर के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** के मह़बूब दानाए ख़ुफ़ाया व ग़ुयूब जनाबे अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पेशनगोई फ़रमाई थी कि उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी भी उस लश्कर में होगी और क़ुबरुस ही में उस की क़ब्र बनेगी । चुनान्चे, येह पेशीनगोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सह़ीह़ हुई ।[2]

और क्यूं न हो कि नदी का बहता हुवा धारा रुक सकता है । दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है । बल्कि बड़े से बड़ा पहाड़ भी

---

١ . . . (تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۲۳) (تاریخ الطبری، ثم دخلت ثمان وعشرین، ۳/۳۱۱)

٢ . . . (صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب رکوب البحر . . .، الحدیث: ۲۸۹۴، ۲۸۹۵، ۲/۲۵۳) (فتح الباری، کتاب الاستیذان، باب ۱۲/۶۳، ۴۱)

अपनी जगह से टल सकता है मगर **अल्लाह** के मह़बूब प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान नहीं टल सकता।

صلی اللّٰه علی النبی الامی و اله صلی اللّٰه تعالیٰ علیه و سلم

صلاۃ و سلام علیک یا رسول اللّٰه صلّی اللّٰه تعالیٰ علیه و اٰلهٖ و سلّم

दीगर फ़ुतूह़ात और माले ग़नीमत

और इसी 27 हिजरी में जुरजान और दारे बजरद फ़त्ह़ हुए। और उसी साल जब ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़ब्दुल्लाह बिन सा'द बिन अबी सरह़ को मिस्र का गवर्नर बनाया तो उन्हों ने मिस्र पहुंच कर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म पर अफ़्रीक़ा पर ह़म्ला किया और उस को फ़त्ह़ कर के सारी सल्त़नतों को हुकूमते इस्लामिया में शामिल कर लिया। इस जंग में इस क़दर माले ग़नीमत मुसलमानों को ह़ासिल हुवा कि हर सिपाही को एक एक हज़ार दीनार और बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ तीन तीन हज़ार दीनार मिले। दीनार साढ़े चार माशा सोने का एक सिक्का होता था। **इस फ़त्ह़े अ़ज़ीम के बा'द इसी 27 हिजरी में स्पेन या'नी हस्पानिया भी फ़त्ह़ हो गया और 29 हिजरी में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से इस्तिख़र क़सा और इन के इलावा बा'ज़ दूसरे ममालिक भी फ़त्ह़ हुए।**

......और 30 हिजरी में जोर, ख़ुरासान और नैशापुर सुल्ह़ के ज़रीए़ फ़त्ह़ हुए। इसी त़रह़ मुल्के ईरान के दूसरे शहर त़ूस,

सरख़स, मर्व और बैहक़ भी सुल्ह़ से फ़त्ह़ हुए । इस क़दर फ़ुतूह़ात से जब बेशुमार माले ग़नीमत हर त़रफ़ से दारुल ख़िलाफ़त में पहुंचने लगा तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन मालों की ह़िफ़ाज़त के लिये कई मह़फ़ूज़ ख़ज़ाने बनवाने पड़े और लोगों में इस फ़राख़ दिली से माल तक़्सीम फ़रमाया कि एक एक शख़्स को एक एक लाख बदरे मिले जब कि एक बदरा दस हज़ार दिरहम का होता है ।(1)

﴾...जन्नत में ले जाने वाले आ'माल...﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स ह़लाल खाए, सुन्नत पर अ़मल करे और लोग उस के शर से मह़फ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे लोग तो इस वक़्त बहुत हैं ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़न क़रीब मेरे बा'द भी ऐसे लोग होंगे ।"

(المستدرك، الحديث:٧١٥٥، ج٥، ص١٤٢)

1...(تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان،ص ۱۲۳)

﴾ मश्क़ ﴿

(1) **सुवाल :** हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा कैसे मुक़र्रर हुए, नीज़ हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा न बनाने के सुवाल का क्या जवाब दिया....?

(2) **सुवाल :** हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ख़लीफ़ा बनने से क्यूं इन्कार फ़रमा दिया.....?

(3) **सुवाल :** मुसन्निफ़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने सहाबए किराम की शान में कितनी आयात बयान फ़रमाई हैं, इन में से तीन मअ़ तर्जमा व हवाला बयान कीजिये नीज़ इस ए'तिराज़ कि "बा'ज़ सहाबा ने ग़लतियां की" का क्या जवाब होगा.....?

(4) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर के उस ज़ीने पर बैठे जिस पर प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा होते थे, इस का सबब क्या है नीज़ मुसन्निफ़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने इस के ज़िम्न में किन अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की त़रफ़ रौशनी डाली है.....?

(5) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर की फ़ुतूह़ात का तफ़्सीली जाइज़ा लीजिये....?

(6) **सुवाल :** हज़रते उम्मे ह़िराम कौन थीं नीज़ इन की वफ़ात किस मो'जिज़ए मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर का सबब बनी.....?

आप की करामतें

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कई करामतों का ज़ुहूर हुवा है जिन में से चन्द करामतें यहां पेश की जाती हैं।

ग़ैब की ख़बर देना

अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने अपनी किताब "**त़बक़ात**" में तह़रीर फ़रमाया कि एक शख़्स ने रास्ते में चलते हुए एक अजनबी औ़रत को घूर घूर कर ग़लत़ निगाहों से देखा। इस के बा'द येह शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा। उस शख़्स को देख कर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फ़रमाया कि तुम लोग ऐसी ह़ालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में ज़िना के असरात होते हैं। शख़्से मज़्कूर ने जल भुन कर कहा कि क्या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप पर वह़ी उतरने लगी है? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह कैसे मा'लूम हो गया कि मेरी आंखों में ज़िना के असरात हैं....?

अमीरुल मोमिनीन ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे ऊपर वह़ी तो नाज़िल नहीं होती लेकिन मैं ने जो कुछ कहा है येह बिल्कुल ही क़ौले ह़क़ और सच्ची बात है और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मुझे एक ऐसी फ़िरासत (नूरानी बसीरत) अ़त़ा फ़रमाई है जिस से मैं लोगों के

दिलों के ह़ालात व ख़यालात को मा'लूम कर लेता हूं।[1] (करामाते सह़ाबा ब ह़वाला हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन) और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रावी हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मिम्बर पर ख़ुत़बा पढ़ रहे थे कि बिल्कुल ही अचानक एक बद नसीब और ख़बीसुन्नफ़्स इन्सान जिस का नाम ''जहजाह ग़िफ़ारी'' था खड़ा हो गया और आप के दस्ते मुबारक से अ़सा छीन कर उस को तोड़ डाला। आप ने अपने ह़िल्मो ह़या की वज्ह से उस से कोई मुआख़ज़ा नहीं फ़रमाया लेकिन ख़ुदाए तआ़ला की क़ह्हारी व जब्बारी ने इस बे अदबी और गुस्ताख़ी पर उस मर्दूद को येह सज़ा दी कि उस के हाथ में केन्सर का मरज़ हो गया और उस का हाथ गल सड़ कर गिर पड़ा और वोह येह सज़ा पा कर एक साल के अन्दर ही मर गया।[2]

(करामाते सह़ाबा ब ह़वाला हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन, जिल्द दुवुम, स. 862)

1... (حجۃ اللہ العالمین، الخاتمۃفی اثبات کرمات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلہ...الخ، ص ۶۱۳)

2....**तम्बीह :** हमारी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना जहजाह बिन सई़द ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबिये रसूल हैं और हमें किसी का भी कोई क़ौल ऐसा नहीं मिला जिस में इन के सह़ाबी होने की नफ़ी हो, लिहाज़ा इन के लिये ऐसे अल्फ़ाज़ हरगिज़ इस्ति'माल न किये जाएं। **मुसन्निफ़ की त़रफ़ से उ़ज़्र :** किसी आ़म मुसलमान से भी येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि वोह किसी सह़ाबी के बारे में जान बूझ कर कोई ना ज़ेबा कलिमा इस्ति'माल करे। यक़ीनन ह़ज़रते मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के इ़ल्म में न होगा कि येह सह़ाबी हैं क्यूंकि यहां जो मुआ़मला था वोह सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़सा के तोड़ने का था जिस की वजह से शायद मुसन्निफ़ से तसामोह़ हो गया वरना वोह हरगिज़ ऐसी बात सह़ाबिये रसूल के लिये न लिखते क्यूंकि मुसन्निफ़ ने ख़ुद अपनी कुतुब में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं जो कि इन के रासिख़ सुन्नी सह़ीहु़ल अ़क़ीदा और आ़शिक़े सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان होने की दलील है।

सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के बारे में इस्लामी अ़क़ीदा : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ अह्ले सुन्नत का मौक़िफ़ है कि

(1) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के बाहम जो वाक़िआ़त हुए, उन में पड़ना ह़राम, ह़राम, सख़्त ह़राम है, मुसलमानों को तो येह देखना चाहिये कि वोह सब ह़ज़रात आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार और सच्चे ग़ुलाम हैं।

(2) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم अम्बिया न थे, फ़िरिश्ते न थे कि मा'सूम हों। इन में बा'ज़ के लिये लग़्ज़िशें हुईं, मगर इन की किसी बात पर गिरिफ़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1/ स. 253 मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

तफ़्सील : मज़्कूरा वाक़िए़ की तफ़्तीश करते हुए हम ने मुतअ़द्दद अ़रबी कुतुबे सियर व तारीख़ वग़ैरा देखीं लेकिन इन में "बद नसीब और ख़बीसुन्नफ़्स" या इस की मिस्ल कलिमात नहीं मिले। चुनान्चे "अल इस्तीआ़ब" में है :

وروي أنّ جهجاه هذا هو الذي تَناوَل العصا مِن يَدِ عثمان وهو يحصب فكسَرَها يومئذ، فأخَذَتْه الأكِلةُ في ركبته وكانت عصا رسولِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم.(الاستيعاب في معرفة الأصحاب- ١ /٣٣٤)

وفي "الإصابة" بلفظِ: فوضعها على ركبته فكسرها....حتى مات. (الإصابة في تمييز الصحابة - ١ /٦٢٢).

तर्जमा : और मरवी है कि येह वोही जहजाह (बिन सई़द ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हैं जिन्हों ने ब ह़ालते ख़ुत़्बा उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दस्ते मुबारक से अ़सा (छड़ी) छीन कर अपने घुटने पर रख कर तोड़ दिया था तो (सय्यिदुना) जहजाह (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को घुटने में ज़ख़्म हो गया यहां तक कि वोह रिह़्लत फ़रमा गए। वोह अ़सा मुबारक रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का था। **उन की सह़ाबिय्यत के दलाइल :** कुतुबे तराजिम में उन के मुतअ़ल्लिक़ बयान किया गया है कि "वोह बैअ़ते रिज़्वान में ह़ाज़िर थे" "شَهِدَ بيعةَ الرضوانِ بالحديبية"-الإصابة في تمييز الصحابة-(٦٢١/١) और मुतअ़द्दद कुतुब में अ़सा तोड़ने वाला वाक़िआ़ इन्ही का लिखा है, जिस की ताईद "इस्तीआ़ब" से बिल ख़ुसूस होती है कि उन्हों ने पहले इन के ईमान लाने का वाक़िआ़ बयान किया और फिर "هذا هو الذى تَنَاوَلَ العَصَا" के अल्फ़ाज़ के ज़रीए़ येह वाज़ेह़ कर दिया कि अ़सा तोड़ने वाला वाक़िआ़ इन्ही का है। (الإستيعاب في معرفة الأصحاب- ١ /٣٣٤) इन के सह़ाबी होने की सराह़त इन कुतुब में भी की गई है।

(١) (التمهيد لما في الموطأ من المعاني والأسانيد)

فلما أسلمتُ دعاني رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى منزله فحلب لي عنزا. (٢٣٠/٧) (٢) (الثقات لابن حبان)وكان جهجاه من فقراء المهاجرين وهو الذي أكل عند النبي صلى الله عليه و سلم وهو كافر فأكثر ثم أسلم فأكل فقال له النبي صلى الله عليه وسلم المؤمن يأكل في معي واحد والكافر يأكل في سبعة أمعاء. (٢٨٠/١)(٣)(أسد الغابة) ثم أسلم فلم يستتم حلاب شاة واحدة. (٤٥١/١) (٤)شرح مشكل الآثار للطحاوي ثم إنه أصبح فأسلم. . (٢٨٠/١، حصه دوم)(٥)شرح الزرقاني على المؤطا– ثم أصبح فأسلم. (ج/٤/٣٩٣)

हाए ! मेरे लिये जहन्नम है

और ह़ज़रते अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं मुल्के शाम की सरज़मीन में था तो मैं ने एक शख़्स को बार बार येह सदा लगाते हुए सुना। "हाए अफ़्सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।" मैं उठ कर उस के पास गया तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि उस शख़्स के दोनों हाथ और पाउं कटे हुए हैं और वोह दोनों आंखों से अन्धा है और अपने चेहरे के बल ज़मीन पर ओंधा पड़ा हुवा बार बार लगातार येही कह रहा है कि

"हाए अफ़्सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।" येह मन्ज़र देख कर मुझ से रहा न गया और मैं ने उस से पूछा कि ऐ शख़्स तेरा क्या ह़ाल है....? और क्यूं और किस बिना पर तुझे अपने जहन्नमी होने का यक़ीन है.....?

येह सुन कर उस ने येह कहा कि ऐ शख़्स ! मेरा ह़ाल न पूछ मैं उन बद नसीब लोगों में से हूं जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल करने के लिये उन के मकान में घुस पड़े थे। मैं जब तल्वार ले कर उन के क़रीब पहुंचा तो उन की बीवी साह़िबा ने मुझे डांट कर शोर मचाना शुरूअ़ किया तो मैं ने उन की बीवी साह़िबा को एक थप्पड़ मार दिया। येह देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह दुआ़ मांगी कि "अल्लाह तआ़ला तेरे दोनों हाथों और पाउं को काट डाले और तेरी दोनों आंखों को अन्धी कर दे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे।" ऐ शख़्स ! मैं अमीरुल मोमिनीन के पुर जलाल चेहरे को देख कर और उन की इस क़ाहिराना दुआ़ को सुन कर कांप उठा और मेरे बदन का एक एक रोंगटा खड़ा हो गया और मैं ख़ौफ़ो दहशत से कांपते हुए वहां से भाग निकला। अमीरुल मोमिनीन की चार दुआ़ओं में से तीन दुआ़ओं की ज़द में तो मैं आ चुका हूं। तुम

देख रहे हो कि मेरे दोनों हाथ और पाउं कट चुके और दोनों आंखें अन्धी हो चुकीं। अब सिर्फ़ चौथी दुआ़ या'नी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाक़ी रह गया है और मुझे यक़ीन है कि येह मुआ़मला भी यक़ीनन हो कर रहेगा, चुनान्चे, अब मैं उसी का इन्तिज़ार कर रहा हूं और अपने जुर्म को बार बार याद कर के नादिम व शर्मसार हो रहा हूं और अपने जहन्नमी होने का इक़रार करता हूं।[1]

मज़्कूरा बाला वाक़िआ़त अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़ीम करामतें हैं जो इन की जलालते शान और बारगाहे ख़ुदावन्दी में इन की मक़्बूलिय्यत और विलायत की वाज़ेह़ निशानियां हैं।

आप की शहादत

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे ख़िलाफ़त कुल बारह साल रहा। शुरूअ़ के छे बरसों में लोगों को आप से कोई शिकायत नहीं हुई। बल्कि इन बरसों में वोह हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी ज़ियादा लोगों में मक़्बूल व महबूब रहे इस लिये कि हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मिज़ाज में कुछ सख़्ती थी। और हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में सख़्ती का वुजूद न था। आप बहुत बा मुरव्वत थे। लेकिन आख़िरी छे बरसों में बा'ज़ गवर्नरों के सबब लोगों को आप से शिकायत हो गई। आप ने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ को मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया। अभी अ़ब्दुल्लाह के तक़र्रुर को सिर्फ़ दो साल गुज़रे थे कि मिस्र के लोगों को इन से शिकायतें पैदा हो गईं। इन्हों ने हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दाद रसी चाही। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब ज़रीअ़ए तह़रीर अ़ब्दुल्लाह को सख़्त तम्बीह फ़रमाई और ताकीद की, कि ख़बरदार ! आयिन्दा

---

١ . . . (ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما مأثر امير المؤمنين عثمان بن عفان، ۴/۳۱۵)

तुम्हारी शिकायत मेरे पास न पहुंचे। मगर अ़ब्दुल्लाह ने आप के ख़त़ की कुछ परवा न की बल्कि मिस्र के जो लोग दारुल ख़िलाफ़ा मदीना शरीफ़ में शिकायत ले कर आए थे उन को क़त्ल कर दिया। इस से मिस्र की ह़ालत और ज़ियादा ख़राब हो गई यहां तक कि वहां से सात सौ अफ़राद मदीना शरीफ़ आए और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़ब्दुल्लाह की ज़ियादतियां बयान कीं और दूसरे सह़ाबए किराम से भी शिकायतें कीं तो बा'ज़ सह़ाबए किराम ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सख़्त कलामी की और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप के पास कहला भेजा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा आप के पास आए हैं और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम है उस की मा'ज़ूली और बर त़रफ़ी का आप से मुत़ालबा करते हैं मगर आप उन की बातों पर तवज्जोह नहीं देते। आप को चाहिये कि ऐसे शख़्स को मुनासिब सज़ा दें।

और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए उन्हों ने भी ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि येह लोग क़त्ले नाह़क़ के सबब मिस्र के गवर्नर की मा'ज़ूली चाहते हैं। आप इस मुआ़मले में इन्साफ़ कीजिये और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ की जगह पर किसी दूसरे को गवर्नर मुक़र्रर कर दीजिये।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिस्र के लोगों से फ़रमाया कि "اِخْتَارُوْا رَجُلاً اُوَلِّیهِ عَلَیْکُمْ مَکَانَه" या'नी आप लोग ख़ुद ही किसी को गवर्नर चुन लीजिये मैं अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ को मा'ज़ूल कर के आप लोगों के चुने हुए गवर्नर को मुक़र्रर कर दूंगा। उन लोगों ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द या'नी मुह़म्मद बिन अबू बक्र को मुन्तख़ब किया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन लोगों के इन्तिख़ाब को मन्ज़ूर फ़रमा लिया और हज़रते मुहम्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के लिये परवानए तक़र्रुरी और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ के बारे में मा'ज़ूली की तह़रीर लिख दी। मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मिस्र से आए हुए सात सौ अफ़राद और कुछ अन्सार व मुहाजिरीन के साथ मिस्र के लिये रवाना हुए।

मदीनए मुनव्वरा से अभी येह क़ाफ़िला तीसरी ही मन्ज़िल पर था कि इन को एक ह़बशी ग़ुलाम सांडनी पर बैठा हुवा निहायत तेज़ी के साथ मिस्र की त़रफ़ जाता हुवा नज़र आया उस के रंग ढंग और उस की तेज़ रफ़्तारी से मा'लूम होता था कि येह ग़ुलाम या तो अपने मालिक से भागा हुवा है और या तो किसी का क़ासिद है। क़ाफ़िले वालों ने उसे बढ़ कर पकड़ लिया और पूछा कि तू कौन है ? तू कहीं से भागा है या तुझे किसी की तलाश है ? उस ने कहा कि मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम हूं फिर कहा कि मैं मरवान का ग़ुलाम हूं। एक शख़्स ने उसे पहचान लिया और बाताया कि येह अमीरुल मोमिनीन ही का ग़ुलाम है। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हें कहां भेजा गया है ? उस ने कहा : मुझे मिस्र के गवर्नर अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ के पास भेजा गया है। उस की तलाशी ली गई तो उस के ख़ुश्क मश्कीज़े से एक ख़त़ निकला जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से आ़मिले मिस्र अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ के नाम था। मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने सब लोगों को जम्अ़ किया और उन के सामने ख़त़ खोला जिस में लिखा हुवा था :

"اِذَا اَتَاکَ مُحَمَّدٌ وَ فُلَانٌ وَفُلَانٌ فَاحْتَلْ فِی قَتْلِهِمْ وَاَبْطِلْ
كِتَابَه وَقَرَّ عَلٰی عَمَلِكَ حَتّٰی يَاتِيَكَ رَائِی"

या'नी जब मुह़म्मद बिन अबू बक्र और फ़ुलां व फ़ुलां तुम्हारे पास पहुंचें तो उन को किसी ह़ीले से क़त्ल कर दो। ख़त़ को कल अ़दम क़रार दो और जब तक कि मेरा दूसरा हुक्म नामा पहुंचे अपने ओ़ह्दे पर बर क़रार रहो।

उस ख़त़ को पढ़ कर क़ाफ़िले वाले सब लोग दंग रह गए। मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उस ख़त़ पर साथ के चन्द ज़िम्मेदार लोगों की मोहरें लगवा दीं और उसे एक शख़्स की तह़वील में दे दिया। और सब लोग वहीं से मदीनए मुनव्वरा को वापस हो गए। जब वहां पहुंचे तो ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते त़लह़ा, ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते सा'द और दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को इकठ्ठा कर के उन के सामने ख़त़ खोल कर सब को पढ़वाया और उस ह़बशी ग़ुलाम का सारा वाक़िआ़ सुनाया। इस पर सब लोग बहुत सख़्त बरहम हुए और तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ग़ैज़ो ग़ज़ब में भरे हुए अपने अपने घरों को वापस हो गए। मगर मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अपने क़बीले बनू तमीम और मिस्रियों के साथ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर को घेर लिया। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह सूरते ह़ाल देखी तो ह़ज़रते त़लह़ा, ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते सा'द, ह़ज़रते अ़म्मार और दीगर अकाबिर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के साथ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर तशरीफ़ ले गए। उन के साथ वोह ख़त़, ग़ुलाम और ऊंटनी भी थी जो रास्ते में पकड़ी गई थी।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह ग़ुलाम आप का है ? उन्हों ने जवाब में फ़रमाया : हां येह ग़ुलाम मेरा है। फिर इन्हों ने पूछा : येह ऊंटनी भी आप ही की है ? उन्हों ने जवाब में फ़रमाया : हां ऊंटनी भी हमारी है। फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह ख़त़ पेश फ़रमाया और पूछा : क्या येह ख़त़ आप ने लिखा है ?

उन्हों ने फ़रमाया : नहीं और ख़ुदाए तआ़ला की क़सम खा के कहा कि न मैं ने इस ख़त़ को लिखा है, न किसी को लिखने का हुक्म दिया है और न मुझे इस के बारे में कोई इ़ल्म है।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि ऊंटनी आप की और ख़त़ पर मोहर भी आप की जिसे आप ही का ग़ुलाम यहां से ले कर जा रहा था। मगर आप को कोई इ़ल्म नहीं। तो फिर हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** तआ़ला की क़सम खा के फ़रमाया कि न मैं ने इस ख़त़ को लिखा है, न किसी से लिखवाया है और न मैं ने ग़ुलाम को येह ख़त़ दे कर मिस्र की त़रफ़ रवाना किया है।

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम खा कर अपनी बराअत ज़ाहिर फ़रमाई तो हर शख़्स को यक़ीन हो गया कि इन का दामन इस जुर्म से पाक है। लोगों ने तह़रीर को बग़ौर देखा तो येह ख़याल क़ाइम किया कि तह़रीर मरवान की है और सारी शरारत उसी की ज़ात से है। मरवान उस वक़्त अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान में मौजूद था। लोगों ने उन से कहा कि आप इसे हमारे ह़वाले कर दीजिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्कार कर दिया। इस लिये कि वोह लोग ग़ैज़ो ग़ज़ब में भरे हुए थे मरवान को सज़ा देते और उसे क़त्ल कर देते ह़ालांकि तह़रीर से यक़ीने कामिल नहीं होता इस लिये कि[1] "اَلْخَطُّ یَشْبَہُ الْخَطَّ" या'नी एक तह़रीर दूसरी तह़रीर के मुशाबेह होती है। तो उन्हें मरवान की तह़रीर होने का सिर्फ़ शुबा था और शुबे का फ़ाएदा हमेशा मुल्ज़िम को पहुंचता है। इस लिये हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मरवान को उन के सिपुर्द नहीं किया इ़लावा इस के सिपुर्द करने में बहुत बड़े फ़ितने का अन्देशा भी था।

۱...(فتح الباری، کتاب الاحکام، باب ۱۲۵/۱۴، ۱۵)

बहर हाल हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मरवान को लोगों के ह़वाले करने से इन्कार कर दिया तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم उन के यहां से उठ कर चले गए और आपस में येह कह रहे थे कि हज़रते उ़स्मान कभी झूटी क़सम नहीं खा सकते मगर कुछ लोग येह भी कह रहे थे कि वोह शक से बरी नहीं हो सकते जब तक कि मरवान को हमारे सिपुर्द न कर दें और हम उस से तह़क़ीक़ न कर लें और येह मा'लूम न हो जाए कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबियों को क़त्ल करने का हुक्म क्यूं दिया गया ? अगर येह बात साबित हो गई कि ख़त़ उन्हों ने ही लिखा है तो हम उन्हें ख़िलाफ़त से अलग कर देंगे और अगर येह बात पायए सुबूत को पहुंची कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से मरवान ने ख़त़ लिखा है तो हम उसे सज़ा देंगे ।(1)

मुह़ासरे में सख़्ती

जब अकाबिर अस्ह़ाब अपने अपने घर चले गए तो बलवाइयों ने मुह़ासरे में और सख़्ती पैदा कर दी यहां तक कि इन पर पानी को बन्द कर दिया। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऊपर से झांक कर मजमअ़ से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम में अ़ली हैं ? लोगों ने कहा। नहीं।

۱... (تاریخ مدینہ دمشق، عثمان بن عفان، ج ۳۹/ ۴۱۲)

फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : क्या तुम में सा'द मौजूद हैं ? जवाब दिया गया कि सा'द भी मौजूद नहीं हैं। येह जवाब सुन कर आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे इस के बा'द फ़रमाया : कोई शख़्स अ़ली को येह ख़बर पहुंचा दे कि वोह हमारे लिये पानी मुहय्या कर दें। जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर पहुंच गई तो उन्हों ने आप के लिये पानी से भरे हुए तीन मश्कीज़े भिजवा दिये। मगर वोह पानी ब मुश्किल तमाम आप तक पहुंचा कि उस के सबब बनी हाशिम और बनी उमय्या के कई ग़ुलाम ज़ख़्मी हो गए।

इस वाक़िए से ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बात का अन्दाज़ा हुवा कि लोग ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल करना चाहते हैं तो आप ने अपने दोनों साहि़बज़ादगान या'नी ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से फ़रमाया कि तुम दोनों अपनी अपनी तल्वारें ले कर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर जाओ पहरे दारों की त़रह़ होशियार खड़े रहो और ख़बरदार किसी भी बलवाई को अन्दर हरगिज़ न जाने दो। इसी त़रह़ ह़ज़रते त़लह़ा, ह़ज़रते ज़ुबैर और दीगर अकाबिर सह़ाबा رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अपने अपने साहि़बज़ादगान को अमीरुल मोमिनीन के दरवाज़े पर भेज दिया जो बराबर निहायत मुस्ता'दी के साथ उन की ह़िफ़ाज़त करते रहे।[1]

١... (تاریخ مدینہ دمشق، عثمان بن عفان، ۳۹/ ۴۱۷)

जान देना क़बूल है, पर ख़ूनरेज़ी नहीं

हज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहिब मुहद्दिसे देहल्वी عَلَیْہِ الرَّحمَۃُ وَالرِّضْوَان तह़रीर फ़रमाते हैं कि जब बलवाइयों ने मुह़ासरा सख़्त कर दिया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا चन्द मुहाजिरीन के साथ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौलत ख़ाने पर तशरीफ़ लाए और उन से कहने लगे कि येह जिस क़दर बलवाई आप पर चढ़ आए हैं येह वोही हैं जो हमारी तल्वारों से मुसलमान हुए हैं और अब भी डर के मारे कपड़े ही में पाख़ाना किये देते हैं। येह सब शेख़ियां और ऊंची ऊंची उड़ानें इस सबब से हैं कि कलिमा पढ़ते हैं और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ कलिमे की हुरमत का पासो लिहाज़ करते हैं। अगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुक्म दें तो हम इन को इन की ह़क़ीक़त मा'लूम करा दें और इन की भूली हुई बात फिर इन को याद दिला दें।

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! ऐसी बात न कहो सिर्फ़ मेरी जान की ख़ातिर इस्लाम में हरगिज़ फूट न पैदा करो।

फिर आप के सारे ग़ुलाम जो एक फ़ौज के बराबर थे। अस्बाब व हथियार से तय्यार हो कर आप के सामने आए और बड़ी बे चैनी व बे क़रारी के साथ आप से कहने लगे कि हम वोही तो हैं जिन की तल्वारों की ताब ख़ुरासान से अफ़्रीक़ा तक कोई न ला सका। अगर आप

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इजाज़त फ़रमाएं तो हम मग़रूरों को उन के काम का तमाशा दिखा दें । गुफ़्तगू और बात चीत से उन की दुरुस्तगी नहीं हो सकती । वोह लोग जानते हैं कि कलिमे की हुरमत के सबब हमें कोई नहीं छेड़ेगा । इसी लिये वोह राहे रास्त पर नहीं आते और आप की नीज़ दीगर सहाबए किराम की बातों को ज़र्रा बराबर अहम्मिय्यत नहीं देते लिहाज़ा हमें आप उन से लड़ने की इजाज़त दीजिये ।

हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ुलामों से फ़रमाया कि अगर तुम लोग मेरी रिज़ा व ख़ुशनूदी चाहते हो और मेरी ने'मत का हक़ अदा करना चाहते हो तो हथियार खोल दो और अपनी अपनी जगहों पर जा कर बैठो और सुन लो कि तुम लोगों में से जो ग़ुलाम भी हथियार खोल दे उस को मैं ने आज़ाद कर दिया ।

"وَاللّٰہ لَاَنْ اُقْتَلَ قَبْلَ الدِّمَاءِ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ اَنْ اُقْتَلَ بَعْدَ الدِّمَاءِ"

या'नी अल्लाह की क़सम ! ख़ूनरेज़ी से पहले मेरा क़त्ल हो जाना मुझे ज़ियादा महबूब है इस से कि मैं ख़ूनरेज़ी के बा'द क़त्ल किया जाऊं । मत़लब येह है कि मेरी शहादत लिख दी गई है और अल्लाह के रसूल प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की बिशारत मुझ को दे दी है । अगर तुम लोगों ने बलवाइयों से जंग भी की तो भी मैं ज़रूर क़त्ल कर दिया जाऊंगा लिहाज़ा उन से लड़ने में कोई फ़ाएदा नहीं है ।[1]

---

۱ . . . (تحفۂ اثنا عشریۃ، مطاعن عثمان رضی اللہ تعالی عنہ، طعن دہم، ص ۳۲۷)

बलवाइयों का आप को शहीद कर देना

मुह़म्मद बिन अबू बक्र ने जब देखा कि दरवाज़े पर ऐसा सख़्त पहरा है कि अन्दर पहुंचना बहुत मुश्किल है तो उन्हों ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर तीर चलाना शुरूअ़ किया जिस में से एक तीर ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लग गया और आप ज़ख़्मी हो गए। एक तीर मरवान को भी लगा। मुह़म्मद बिन त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ज़ख़्मी हो गए और एक तीर से ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलाम क़म्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ज़ख़्मी हो गए।

मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने जब इन लोगों को ज़ख़्मी देखा तो उन को ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि बनी हाशिम अगर ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे लोगों को ज़ख़्मी देख लेंगे तो वोह बिगड़ जाएंगे इस त़रह़ एक नई मुसीबत पैदा हो जाएगी। लिहाज़ा इन्हों ने दो आदमियों के हाथ पकड़ कर उन से कहा कि अगर बनी हाशिम इस वक़्त आ गए और उन्हों ने ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी ह़ालत में देख लिया तो वोह हम से उलझ पड़ेंगे और हमारा सारा मन्सूबा ख़ाक में मिल जाएगा। लिहाज़ा हमारे साथ चलो हम पड़ोस के मकान में पहुंच कर (ह़ज़रत) उ़स्मान के घर में कूद पड़ेंगे और उन्हें क़त्ल कर देंगे। इस गुफ़्तगू के बा'द मुह़म्मद बिन अबू बक्र अपने दो साथियों के हमराह एक अन्सारी के मकान में घुस गए और वहां से छत फांद कर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान में पहुंच गए। इन लोगों के पहुंचने की दूसरे लोगों को ख़बर न हुई इस लिये कि जो लोग घर पर

मौजूद थे वोह छत पर थे। नीचे अमीरुल मोमिनीन के पास सिर्फ़ उन की अहलियए मोह़तरमा ह़ज़रते नाइला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बैठी हुई थीं। सब से पहले मुह़म्मद बिन अबू बक्र ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास पहुंच कर उन की दाढ़ी पकड़ ली तो अमीरुल मोमिनीन ने उन से फ़रमाया : अगर तुम्हारे बाप ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तुझे मेरे साथ ऐसी गुस्ताख़ी करते हुए देखते तो वोह क्या कहते। इस बात को सुन कर मुह़म्मद बिन अबू बक्र ने उन की दाढ़ी छोड़ दी लेकिन उसी दरमियान में उन के दोनों साथी आ गए जो अमीरुल मोमिनीन पर झपट पड़े और इन को निहायत बे दर्दी के साथ शहीद कर दिया।

''اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ''

जब ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ह़म्ला हुवा और दुश्मन इन को शहीद कर रहे थे उस वक़्त आप की अहलियए मोह़तरमा ह़ज़रते नाइला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बहुत चीख़ी चिल्लाईं लेकिन बलवाइयों ने चूंकि बड़ा शोरो ग़ोग़ा कर रखा था इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की चीख़ो पुकार को किसी ने नहीं सुना। **आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के बा'द वोह कोठे पर गईं और लोगों को बताया कि अमीरुल मोमिनीन शहीद कर दिये गए। लोगों ने नीचे उतर कर देखा तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का पूरा जिस्म ख़ून आलूद था और इन की रूह़ परवाज़ कर चुकी थी।**[1]

---

۱ . . . (تاریخ مدینہ دمشق، عثمان بن عفان، ۳۹/۴۱۸)

.......बा'ज़ रिवायतों में है कि शहादत के वक़्त हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआने मजीद की तिलावत फ़रमा रहे थे जब तल्वार लगी तो आयते करीमा ﴿فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ﴾ पर ख़ून के चन्द क़तरात पड़े ।[1]

......और आप की बीवी साहिबा हज़रते नाइला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तल्वार के वार को जब अपने हाथों से रोका तो इन की उंगलियां कट गईं ।[2]

हज़रते अ़ली की बरहमी

जब हज़रते अ़ली, हज़रते त़लह़ा, हज़रते ज़ुबैर, हज़रते सा'द और दीगर सह़ाबा व अह्ले मदीना رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत की ख़बर मिली तो सब के होश उड़ गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर आए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद देख कर सब ने "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ" पढ़ा और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस सूरते ह़ाल से इतना ग़ुस्सा पैदा हुवा कि हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक त़मांचा और हज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सीने पर एक घूंसा मारा और फ़रमाया : "كَيْفَ قُتِلَ اَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْتُمَا عَلَى الْبَابِ"

---

١ . . . (الدرالمنثور، سورة البقرة، تحت الاية ١٣٧، ١/٣٤٠)

٢ . . . (تاريخ مدينه دمشق، عثمان بن عفان، ٣٩/٤٠٧)

या'नी जब कि तुम दोनों दरवाज़ों पर मौजूद थे तो अमीरुल मोमिनीन कैसे शहीद कर दिये गए। फिर आप ने हज़रते त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादे मुह़म्मद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते ज़ुबैर के साहिबज़ादे अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी सख़्त सुस्त और बुरा भला कहा।

जब हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा कि क़ातिल दरवाज़े से नहीं दाख़िल हुए थे बल्कि पड़ोस के मकान से कूद कर आए थे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहलियए मोह़तरमा से दरयाफ़्त फ़रमाया कि अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को किस ने शहीद किया? उन्हों ने कहा कि मैं उन लोगों को तो नहीं जानती जिन्हों ने अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया। अलबत्ता उन के साथ मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا थे जिन्हों ने अमीरुल मोमिनीन की दाढ़ी भी पकड़ी थी।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बुला कर क़त्ल के बारे में उन से दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते नाइला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا सच कहती हैं। बेशक मैं घर के अन्दर ज़रूर दाख़िल हुवा था और क़त्ल का इरादा भी किया था लेकिन जब उन्हों ने मेरे बाप ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

का तज़्किरा किया तो मैं उन को छोड़ कर हट गया। **मैं अपने इस फ़े'ल पर नादिम व शरमिन्दा हूं और अल्लाह तआ़ला से तौबा व इस्तिग़्फ़ार करता हूं। ख़ुदा की क़सम ! मैं ने उन को क़त्ल नहीं किया है।**[1]

क़ातिल कौन था ?

इब्ने अ़साकिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने किनाना वग़ैरा से रिवायत की है कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को जिस ने शहीद किया वोह मिस्र का रहने वाला था। उस की आंखें नीली थीं और उस का नाम "**ह़म्मार**" था।[2]

.....और बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि आप के क़ातिल का नाम "**अस्वद**" था।[3]

बहुत मुमकिन है कि मुह़म्मद बिन अबू बक्र के साथ दो बलवाई जो कि आप के मकान में कूदे थे, उस में से एक का नाम "**ह़म्मार**" और दूसरे का नाम "**अस्वद**" रहा हो। **واللّٰہ تعالٰی اعلم**

शहादत की तारीख़

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه 35 हिजरी माहे ज़ुलह़िज्जा के अय्यामे तशरीक़ में शहीद हुए जब कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की उ़म्र बयासी

١...(تاریخ مدینہ دمشق، عثمان بن عفان، ۳۹/۴۱۹)
٢...(تاریخ مدینہ دمشق، عثمان بن عفان، ۳۹/۴۰۸)
٣...(الریاض النضرۃ، الفصل الحادی عشر، ذکر من قتلہ، ۲/۷۲)

साल की थी । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के **जनाज़े की नमाज़** हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पढ़ाई और आप ह़शे कौकब के मक़ाम पर **जन्नतुल बक़ीअ़** में दफ़्न किये गए ।[1]

ज़ौजे दो नूर इ़फ़्फ़त पे लाखों सलाम — दुर्रे मन्सूर क़ुरआं की सिल्के बही

हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम — या'नी उ़स्मान साह़िब क़मीसे हुदा

وصلی اللّٰہ تعالیٰ علی النبی الکریم سیّدنا محمد صلی اللّٰہ علیہ وسلم وعلی الہ واصحابہ اجمعین

मन्क़बत दर शाने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी

महबूबे ख़ुदा यार है उ़स्माने ग़नी का — अल्लाह से क्या प्यार है उ़स्माने ग़नी का

वोह जल्वए दीदार है उ़स्माने ग़नी का — जो दिल को ज़िया दे जो मुक़द्दर को जिला दे

वोह आईना रुख़्सार है उ़स्माने ग़नी का — जिस आईने में नूरे इलाही नज़र आए

वोह फ़ैज़ पे दरबार है उ़स्माने ग़नी का — अल्लाह ग़नी ह़द नहीं इन्आ़मो अ़ता की

फ़ैज़ान मददगार है उ़स्माने ग़नी का — रुक जाएं मेरे काम ह़सन हो नहीं सकता

---

[1] ... (الریاض النضرة، الفصل الحادی عشر، ذکر تاریخ مقتلہ، ۲/۴۳) (اسد الغابة، عثمان بن عفان، مقتلہ، ۳/۶۱۷) (الصواعق المحرقة، الباب السابع فی فضائلہ، الفصل الثالث، ص ۱۱۱)

मश्क़

(1) **सुवाल :** आंखों में ज़िना के असरात की ख़बर देना क्या ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्मे ग़ैब पर दलालत करता है नीज़ येह रिवायत किस अ़क़ीदए अहले सुन्नत की मुअय्यिद है....?

(2) **सुवाल :** "हाए अफ़्सोस मेरे लिये जहन्नम है" येह किस की सदा थी और क्यूं.....?

(3) **सुवाल :** बलवाइयों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकाने आ़लीशान का मुह़ासरा क्यूं किया नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मरवान को उन के ह़वाले क्यूं न फ़रमाया.....?

(4) **सुवाल :** मुह़ासरे के दौरान पानी पहुंचाने का इन्तिज़ाम किस ने किया नीज़ "ख़ूनरेज़ी से पहले मेरा क़त्ल हो जाना मुझे ज़ियादा मह़बूब है" येह जुम्ला किस का है नीज़ कब फ़रमाया.....?

(5) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत कब हुई नीज़ वक़्ते शहादत आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ किस इ़बादत में मसरूफ़ थे.....?

(6) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने वाले कौन थे नीज़ ख़बर मिलने पर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कैफ़िय्यत क्या थी.....?

अमीरुल मोमिनीन

हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

दुन्या में बे शुमार इन्सान पैदा हुए जिन में से अक्सर ऐसे हुए कि उन में कोई कमाल व ख़ूबी नहीं और बा'ज़ लोग ऐसे हुए जो सिर्फ़ चन्द ख़ूबियां रखते थे मगर हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की वोह ज़ाते गिरामी है जो बहुत से कमाल व ख़ूबियों की जामेअ़ है कि आप كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم शेरे ख़ुदा भी हैं और दामादे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी । हैदरे कर्रार भी हैं और साहिबे ज़ुल फ़िक़ार भी, हज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا के शौहरे नामदार भी और ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के वालिदे बुज़ुर्गवार भी । साहिबे सख़ावत भी और साहिबे शुजाअ़त भी । इबादतो रियाज़त वाले भी और फ़साह़तो बलाग़त वाले भी, हि़ल्म वाले भी और इ़ल्म वाले भी । फ़ातेहे ख़ैबर भी और मैदाने ख़ित़ाबत के शहसुवार भी । ग़रज़ कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ बहुत से कमालात व ख़ूबियों के जामेअ़ हैं और हर एक में मुमताज़ व यगाना हैं । इसी लिये दुन्या आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ को मज़्हरुल अ़जाइब वल ग़राइब से याद करती है और क़ियामत तक इस त़रह़ याद करती रहेगी ।

मुर्तज़ा शेरे ह़क़ अश्जड़ल अश्जईं

साक़िये शीरो शरबत पे लाखों सलाम

शेरे शमशीरे ज़न शाहे ख़ैबर शिकन

पर तवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "अ़ली बिन अबी त़ालिब" और कुन्यत "**अबुल ह़सन**" व "**अबू तुराब**" है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब के साह़िबज़ादे हैं या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई हैं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **वालिदए मोह़तरमा का इस्मे गिरामी** फ़ात़िमा बिन्ते असद बिन हाशिम है और येह पहली ख़ात़ून हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल किया और हिजरत फ़रमाई।(1)

.....आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का सिलसिलए नसब इस त़रह़ है : अ़ली बिन अबी त़ालिब बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़।(2) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाक़िअ़ए फ़ील के 30 साल बा'द पैदा हुए।

۱...(معرفۃ الصحابۃ، معرفۃ نسبۃ علی بن ابی طالب، ۱/ ۹۵)

۲...(اسد الغابۃ، علی بن ابی طالب، ۴/ ۱۰۰)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की परवरिश में

और ए'लाने नबुव्वत से पहले ही मौलाए कुल सय्यिदुर्रुसुल जनाबे अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की परवरिश में आए कि जब क़ुरैश क़ह़त़ में मुब्तला हुए थे तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू त़ालिब पर अ़याल का बोझ हल्का करने के लिये ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم को ले लिया था। इस त़रह़ ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साए में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने परवरिश पाई और इन्हीं की गोद में होश संभाला, आंख खुलते ही ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जमाले जहां आरा देखा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की बातें सुनीं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की आ़दतें सीखीं। इस लिये बुतों की नजासत से आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم का दामन कभी आलूदा न हुवा या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी बुत परस्ती न की और इसी लिये "کرم اللّٰہ تعالیٰ وجہہ" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब हुवा।[1]

आप का क़बूले इस्लाम

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم नौ उ़म्र लोगों में सब से पहले इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।

---

١ ...(الصواعق المحرقه، الباب التاسع، ص ١٢٠)(الریاض النضرة، الفصل الرابع فی اسلامه، ٣/١٠٩، جزء ٣)(فتاوی رضویه، ٢٨/٤٣٦)

किस उ़म्र में इस्लाम लाए

तारीखु़ल खु़लफ़ा में है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ईमान लाए उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र मुबारक दस साल थी बल्कि बा'ज़ लोगों के क़ौल के मुत़ाबिक़ नौ साल और बा'ज़ कहते हैं कि आठ साल और कुछ लोग इस से भी कम बताते हैं और आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा बरेल्वी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان **"तन्ज़ीहुल मकानतिल ह़ैदरिया"** में तह़रीर फ़रमाते हैं कि ब वक़्ते क़बूले इस्लाम आप की उ़म्र आठ-दस साल थी।[1]

इस्लाम क़बूल करने का सबब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम क़बूल करने की तफ़्सील मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस त़रह़ बयान की है कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा। जब येह लोग नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा कि आप लोग येह क्या कर रहे थे....? हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

١ ... (الطبقات الکبری، علی بن ابی طالب، ۳/ ۱۵)(فتاوی رضویہ، ۲۸/ ۴۳۴)

फ़रमाया कि येह **अल्लाह** तआ़ला का ऐसा दीन है जिस को उस ने अपने लिये मुन्तख़ब किया है और इस की तब्लीग़ो इशाअ़त के लिये अपने रसूल को भेजा है लिहाज़ा मैं तुम को भी ऐसे मा'बूद की त़रफ़ बुलाता हूं, जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मैं तुम को उसी की इ़बादत का हुक्म देता हूं।

हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने कहा कि जब तक मैं अपने बाप अबू त़ालिब से दरयाफ़्त न कर लूं इस के बारे में कोई फ़ैसला नहीं कर सकता। चूंकि उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ का फ़ाश होना मन्ज़ूर न था इस लिये आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अ़ली ! अगर तुम इस्लाम नहीं लाते हो तो अभी इस मुआ़मले को पोशीदा रखो किसी पर ज़ाहिर न करो।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अगर्चे उस वक़्त रात में ईमान नहीं लाए मगर अल्लाह तआ़ला ने आप के दिल में ईमान को वाज़ेह़ कर दिया था। दूसरे रोज़ सुब्ह़ होते ही हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेश की हुई सारी बातों को क़बूल कर लिया और इस्लाम ले आए।[1]

۱...(اسدالغابۃ، علی بن ابی طالب، ۴/۱۰۱)

आप की हिजरत

सरकारे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब खुदाए तआला के हुक्म के मुताबिक़ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से मदीनए तय्यिबा की हिजरत का इरादा फ़रमाया तो हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को बुला कर फ़रमाया कि मुझे खुदाए तआला की तरफ़ से हिजरत का हुक्म हो चुका है लिहाज़ा मैं आज मदीना रवाना हो जाऊंगा। तुम मेरे बिस्तर पर मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ कर सो रहो। तुम्हें कोई तक्लीफ़ न होगी कुरैश की सारी अमानतें जो मेरे पास रखी हुई हैं उन के मालिकों को दे कर तुम भी मदीने चले आना।

येह मौक़अ़ बड़ा ही ख़ौफ़नाक और निहायत ख़तरे का था। हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को मा'लूम था कि कुफ़्फ़ारे कुरैश सोने की हालत में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़त्ल का इरादा कर चुके हैं इसी लिये खुदाए तआला ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने बिस्तर पर सोने से मन्अ़ फ़रमा दिया है। आज हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिस्तर क़त्ल गाह है लेकिन **अल्लाह** के महबूब दानाए ख़फ़ाया व गुयूब जनाबे अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से कि "तुम्हें कोई तक्लीफ़ न होगी कुरैश की अमानतें दे कर तुम भी मदीने चले आना।" **हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को पूरा यक़ीन था कि दुश्मन मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचा सकेंगे, मैं ज़िन्दा**

रहूंगा और मदीने ज़रूर पहुंचूंगा लिहाज़ा सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिस्तर जो आज ब ज़ाहिर कांटों का बिछोना था वोह ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم के लिये फूलों की सेज बन गया इस लिये कि इन का अ़क़ीदा था कि सूरज मशरिक़ के बजाए मग़रिब से निकल सकता है मगर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं रात भर आराम से सोया सुब्ह़ उठ कर लोगों की अमानतें उन के मालिकों को सोंपना शुरूअ़ कीं और किसी से नहीं छुपा। इसी त़रह़ मक्के में तीन दिन रहा फिर अमानतों के अदा करने के बा'द मैं भी मदीने की त़रफ़ चल पड़ा। रास्ते में भी किसी ने मुझे कोई तअ़र्रुज़ न किया यहां तक कि मैं क़ुबा में पहुंचा। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते कुल्सूम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे मैं भी वहीं ठहर गया।(1)

उख़ुव्वते रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم की बहुत सी ख़ुसूसिय्यात में से एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि **आप सरकारे अक़्दस** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के दामाद और चचाज़ाद भाई होने के साथ "अ़क़्दे मुवाख़ात" में भी आप के भाई हैं।**

---

١ ...(اسد الغابة، علی بن ابی طالب، ہجرتہ، ۴/۱۰۴)(الریاض النضرة، علی بن ابی طالب، الفصل الخامس فی ہجرتہ، ۲/۱۱۳، جزء ۳)

जैसा कि **तिरमिज़ी शरीफ़** में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मदीनए त़य्यिबा में उख़ुव्वत या'नी भाईचारा क़ाइम किया कि दो दो सह़ाबा को भाई भाई बनाया तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोते हुए बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ! आप ने सारे सह़ाबा के दरमियान उख़ुव्वत क़ाइम की। एक सह़ाबी को दूसरे सह़ाबी का भाई बनाया मगर मुझ को किसी का भाई न बनाया मैं यूं ही रह गया तो सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "اَنْتَ اَخِیْ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ" **या'नी तुम दुन्या और आख़िरत दोनों में मेरे भाई हो।**[1]

.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल.....

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स ह़लाल खाए, सुन्नत पर अ़मल करे और लोग उस के शर से मह़फ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे लोग तो इस वक़्त बहुत हैं।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़न क़रीब मेरे बा'द भी ऐसे लोग होंगे।"

(المستدرك، الحديث:٧١٥٥، ج٥، ص١٤٢)

---

١ ... (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، الحدیث: ۳۷۴۱، ۵/۴۰۱)

मश्क़

(1) **सुवाल :** हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामो नसब नीज़ बचपन के ह़ालात बयान कीजिये....?

(2) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम का वाक़िआ़ तफ़्सीलन बयान कीजिये नीज़ उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र मुबारका क्या थी.....?

(3) **सुवाल :** "दुश्मन मुझे कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे, मैं ज़िन्दा रहूंगा" येह किस का क़ौल है नीज़ कब फ़रमाया....?

(4) **सुवाल :** "तुम दुन्या व आख़िरत में मेरे भाई हो" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह कब, किस से फ़रमाया.....?

......इ़ल्म सीखने से आता है.....

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

"इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं ।" (المعجم الکبیر،ج۱۹،ص۵۱۱،الحدیث:۷۳۱۲)

आप की शुजाअ़त

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शुजाअ़त और बहादुरी शोहरए आफ़ाक़ है। अ़रबो अ़जम में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुव्वते बाज़ू के सिक्के बैठे हुए हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के रो'ब व दबदबे से आज भी बड़े बड़े पहलवानों के दिल कांप जाते हैं। जंगे तबूक के मौक़अ़ पर सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मदीनए तय्यिबा पर अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमा दिया था इस लिये इस में हाज़िर न हो सके **बाक़ी तमाम ग़ज़्वात व जिहाद में शरीक हो कर बड़ी जांबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला किया और बड़े बड़े बहादुरों को अपनी तल्वार से मौत के घाट उतार दिया।**[1]

जंगे बद्र में शुजाअ़त

जंगे बद्र में हज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अस्वद बिन अ़ब्दुल असद मख़्ज़ूमी को काट कर जहन्नम में पहुंचाया तो इस के बा'द काफ़िरों के लश्कर का सरदार उ़त्बा बिन रबीआ़ अपने भाई शैबा बिन रबीआ़ और अपने बेटे वलीद बिन उ़त्बा को साथ ले कर मैदान में निकला और चिल्ला कर कहा कि ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! अशराफ़े क़ुरैश में से हमारे जोड़ के आदमी भेजिये। हुज़ूर

---

1 ...(اسدالغابۃ، علی بن ابی طالب، ۴/۱۰۱)

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया : ऐ बनी हाशिम ! उठो और हक़ की हिमायत में लड़ो जिस के साथ **अल्लाह** तआला ने तुम्हारे नबी को भेजा है। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान को सुन कर हज़रते हम्ज़ा, हज़रते अ़ली और हज़रते उ़बैदा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) दुश्मन की त़रफ़ बढ़े। लश्कर का सरदार उ़त्बा हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़ाबिल हुवा और ज़िल्लत के साथ मारा गया। वलीद जिसे अपनी बहादुरी पर बहुत बड़ा नाज़ था वोह हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के मुक़ाबले के लिये मस्त हाथी की त़रह़ झूमता हुवा आगे बढ़ा और डींगें मारता हुवा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ह़म्ला किया मगर शेरे ख़ुदा अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने थोड़ी ही देर में उसे मार गिराया और ज़ुलफ़िक़ारे ह़ैदरी ने उस के घमन्ड को ख़ाको ख़ून में मिला दिया। इस के बा'द आप ने देखा कि उ़त्बा के भाई शैबा ने हज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी कर दिया है तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने झपट कर उस पर ह़म्ला किया और उसे भी जहन्नम में पहुंचा दिया।(1)

जंगे उहुद में शुजाअ़त

और जंगे उहुद में जब कि मुसलमान आगे और पीछे से कुफ़्फ़ार के बीच में आ गए जिस के सबब बहुत से लोग शहीद हुए तो उस वक़्त सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी काफ़िरों के घेरे में आ गए और उन्हों ने ए'लान कर दिया कि ऐ मुसलमानो ! तुम्हारे नबी क़त्ल कर दिये

---

١ ... (سیرۃ ابن ہشام، ذکر رؤیا عاتکۃ بنت عبد المطلب، جزء ۱، ص ۵۵۲)

गए। इस ए'लान को सुन कर मुसलमान बहुत परेशान हो गए यहां तक कि इधर उधर तितर बितर हो गए बल्कि इन में से बहुत लोग भाग भी गए। ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि जब काफ़िरों ने मुसलमानों को आगे पीछे से घेर लिया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी निगाह से ओझल हो गए तो पहले मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़िन्दों में तलाश किया मगर नहीं पाया फिर शहीदों में तलाश किया वहां भी नहीं पाया तो मैं ने अपने दिल में कहा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैदाने जंग से भाग जाएं लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला ने अपने रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आस्मान पर उठा लिया। इस लिये अब बेहतर येही है कि मैं भी तल्वार ले कर काफ़िरों में घुस जाऊं यहां तक कि लड़ते लड़ते शहीद हो जाऊं। फ़रमाते हैं कि मैं ने तल्वार ले कर ऐसा सख़्त ह़म्ला किया कि कुफ़्फ़ार बीच में से हटते गए और मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख लिया तो मुझे बे इन्तिहा ख़ुशी हुई और मैं ने यक़ीन किया कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़िरिश्तों के ज़रीए़ अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई है। मैं दौड़ कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जा कर खड़ा हुवा कुफ़्फ़ार गुरौह दर गुरौह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला करने के लिये आने लगे। **आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने फ़रमाया : अ़ली ! इन को रोको तो मैं ने तन्हा उन सब का मुक़ाबला किया और उन के मुंह फेर दिये** और **कई एक को क़त्ल भी किया**। इस

के बा'द फिर एक गुरौह और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला करने की निय्यत से बढ़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर मेरी त़रफ़ इशारा फ़रमाया तो मैं ने फिर उस गुरौह का अकेले मुक़ाबला किया। **इस के बा'द ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने आ कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरी बहादुरी और मदद की ता'रीफ़ की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :**

"اِنَّهٗ مِنِّیْ وَاَنَامِنْهُ" या'नी बेशक अ़ली मुझ से हैं और मैं अ़ली से हूं मत़लब येह है कि अ़ली को मुझ से कमाले क़ुर्ब ह़ासिल है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान को सुन कर ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया "**وَاَنَامِنْكُمَا**" या'नी मैं तुम दोनों से हूं।[1]

सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न पा कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शहीद हो जाने की निय्यत से काफ़िरों के जथ्थे में तन्हा घुस जाना और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला करने वाले गुरौह दर गुरौह से अकेले मुक़ाबला करना आप की बे मिसाल बहादुरी और इन्तिहाई दिलेरी की ख़बर देता है। साथ ही हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप के इ़श्क़ और सच्ची मह़ब्बत का भी पता देता है।

"رضی اللّٰه عنه وارضاه عنا"

---

[1] ...(الکامل فی التاریخ، ذکر غزوۃ احد، ۲/۴۸)

जंगे ख़न्दक़ में शुजाअ़त

हज़रते का'ब बिन मालिक अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : वोह फ़रमाते हैं कि जंगे ख़न्दक़ के रोज़ अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद (जो एक हज़ार सुवार के बराबर माना जाता था) एक झन्डा लिये हुए निकला ताकि वोह मैदाने जंग को देखे, जब वोह और उस के साथ के सुवार एक मक़ाम पर खड़े हुए तो उस से हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐ अ़म्र ! तू क़ुरैश से **अल्लाह** की क़सम दे कर कहा करता था कि जब कभी मुझ को कोई शख़्स दो अच्छे कामों की त़रफ़ बुलाता है तो मैं उस में से एक को ज़रूर इख़्तियार करता हूं। उस ने कहा : हां मैं ने ऐसा कहा था और अब भी कहता हूं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं तुझे **अल्लाह** (جَلَّ جَلَالُہٗ) व रसूल (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और इस्लाम की त़रफ़ बुलाता हूं। अ़म्र ने कहा : मुझे इन में से किसी की ह़ाजत नहीं। ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया तो अब मैं तुझ को मुक़ाबले की दा'वत देता हूं और इस्लाम की त़रफ़ बुलाता हूं। अ़म्र ने कहा : ऐ मेरे भाई के बेटे ! किस लिये मुक़ाबले की दा'वत देता है। ख़ुदा की क़सम ! मैं तुझ को क़त्ल करना पसन्द नहीं करता। ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : लेकिन ख़ुदा की क़सम ! मैं तुझ को क़त्ल करना पसन्द करता हूं। **येह सुन कर अ़म्र का ख़ून गर्म हो गया और ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा। दोनों मैदान में आ गए और थोड़ी देर**

मुक़ाबला होने के बा'द शेरे ख़ुदा ने उसे मौत के घाट उतार कर जहन्नम में पहुंचा दिया ।[1]

....और मुहम्मद बिन इस्हाक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद मैदान में इस त़रह़ निकला कि लोहे की ज़िरहें पहने हुए था और उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा : है कोई जो मेरे मुक़ाबले में आए ? उस आवाज़ को सुन कर ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم खड़े हुए और मुक़ाबले के लिये हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त त़लब की । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बैठ जाओ, येह अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद है । दूसरी बार अ़म्र ने फिर आवाज़ दी कि मेरे मुक़ाबले के लिये कौन आता है ? और मुसलमानों को मलामत करनी शुरूअ़ की । कहने लगा : तुम्हारी वोह जन्नत कहां है जिस के बारे में तुम दा'वा करते हो कि जो भी तुम में से मारा जाता है वोह सीधे उस में दाख़िल हो जाता है । मेरे मुक़ाबले के लिये किसी को क्यूं नहीं खड़ा करते हो । दोबारा फिर ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने खड़े हो कर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त त़लब की, मगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर वोही फ़रमाया कि बैठ जाओ । तीसरी बार अ़म्र ने फिर वोही आवाज़ दी और कुछ अश्आ़र भी पढ़े । रावी का बयान है कि तीसरी बार ह़ज़रते अ़ली ने खड़े हो कर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस के मुक़ाबले के लिये निकलूंगा । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

١... (تاریخ مدینۃ دمشق، علی بن ابی طالب، ۴۲/۷۸)

फ़रमाया कि येह अ़म्र है । ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ किया : चाहे अ़म्र ही क्यूं न हो । तीसरी बार हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इजाज़त दे दी । ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चल कर उस के पास पहुंचे और चन्द अश्आ़र पढ़े जिन का मत़लब येह है :

ऐ अ़म्र ! जल्दी न कर, जो आ़जिज़ नहीं है वोह तेरे पास तेरी आवाज़ का जवाब देने वाला सच्ची निय्यत और बसीरत के साथ आ गया और हर कामयाब होने वाले को सच्चाई ही नजात देती है ।

मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं तेरे जनाज़े पर ऐसी ज़र्बे वसीअ़ से नौह़ा करने वालियों को क़ाइम करूंगा कि जिस का ज़िक्र लोगों में बाक़ी रहेगा ।

अ़म्र ने पूछा कि तू कौन है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं अ़ली हूं । उस ने कहा : अ़ब्दे मनाफ़ के बेटे हो ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं अ़ली बिन अबी त़ालिब हूं । उस ने कहा : ऐ मेरे भाई के बेटे ! तेरे चचाओं में से ऐसे भी तो हैं जो उ़म्र में तुझ से ज़ियादा हैं मैं तेरा ख़ून बहाने को बुरा समझता हूं । **ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : मगर ख़ुदा की क़सम ! मैं तेरा ख़ून बहाने को क़त़अ़न बुरा नहीं समझता ।** येह सुन कर वोह ग़ुस्से से तिल मिला उठा, घोड़े से उतर कर आग के शो'ले जैसी तल्वार सूंत ली । ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की त़रफ़ लपका और ऐसा ज़बरदस्त वार किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ढाल पर रोका तो तल्वार उसे फाड़ कर घुस गई यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर पर लगी और ज़ख़्मी कर

दिया। अब शेरे ख़ुदा ने संभल कर उस के कन्धे की रग पर ऐसी तल्वार मारी कि वोह गिर पड़ा और ग़ुबार उड़ा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ना'रए तक्बीर सुना जिस से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उसे जहन्नम पहुंचा दिया।

शेरे ख़ुदा की इस बहादुरी और शुजाअ़त को देख कर मैदाने जंग का एक एक ज़र्रा ज़बाने ह़ाल से पुकार उठा :

शाहे मर्दां, शेरे यज़्दां, क़ुव्वते परवरदगार

ला फ़ता इल्ला अ़ली ला सैफ़ इल्ला ज़ुल फ़िक़ार

या'नी ह़ज़रते अ़ली बहादुरों के बादशाह, ख़ुदा के शेर और क़ुव्वते परवरदगार हैं। इन के सिवा कोई जवान नहीं और ज़ुलफ़िक़ार के इ़लावा कोई तल्वार नहीं।[1]

इसी त़रह़ जंगे ख़ैबर के मौक़अ़ पर भी ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने शुजाअ़त और बहादुरी के वोह जौहर दिखाए हैं। जिन का ज़िक्र हमेशा बाक़ी रहेगा और लोगों के दिलों में जोश व वलवला पैदा करता रहेगा।

क़ल्अ़ए ख़ैबर की फ़त्ह़

ख़ैबर का वोह क़ल्आ़ जो मुरह़्ह़ब का पायए तख़्त था। इस का फ़त्ह़ करना आसान न था। इस क़ल्ए़ को सर करने के लिये सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़

---

۱ ...(تاریخ مدینۃ دمشق، علی بن ابی طالب، ۴۲/۷۸)(الکامل فی التاریخ، ذکر غزوۃ احد، ۲/۴۸)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को झन्डा इनायत फ़रमाया और दूसरे दिन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाया लेकिन फ़ातेहे़ ख़ैबर होना तो किसी और के लिये मुक़द्दर हो चुका था इस लिये इन ह़ज़रात से वोह फ़त्ह़ न हुवा। जब इस मुहिम में बहुत ज़ियादा देर हुई तो एक दिन सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं येह झन्डा कल एक ऐसे शख़्स को दूंगा जिस के हाथ पर ख़ुदाए तआ़ला फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाएगा वोह शख़्स **अल्लाह** व रसूल को दोस्त रखता है और **अल्लाह** व रसूल उस को दोस्त रखते हैं। (جَلَّ جَلَالُہ وصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस खुश ख़बरी को सुन कर सह़ाबए किराम ने वोह रात बड़ी बे क़रारी में काटी इस लिये कि हर सह़ाबी की येह तमन्ना थी कि ऐ काश ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कल सुब्ह़ हमें झन्डा इनायत फ़रमाएं तो इस बात की सनद हो जाए कि हम **अल्लाह** व रसूल को मह़बूब रखते हैं और **अल्लाह** व रसूल हमें चाहते हैं। और इस ने'मते उ़ज़्मा व सआ़दते कुब्रा से भी सरफ़राज़ हो जाते कि फ़ातेहे़ ख़ैबर बन जाते। **इस लिये कि वोह सह़ाबी थे वहाबी नहीं थे। उन का येह अ़क़ीदा हरगिज़ नहीं था कि कल क्या होने वाला है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस की क्या ख़बर ? बल्कि उन का अ़क़ीदा येह था कि अल्लाह के मह़बूब दानाए ख़फ़ाया व ग़ुयूब जनाबे अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा**

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने जो कुछ फ़रमाया है वोह कल हो कर रहेगा। इस में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ नहीं हो सकता।**

जब सुब्ह़ हुई तो तमाम सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن उम्मीदें लिये हुए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अदब के साथ देखने लगे कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज किस को सरफ़राज़ फ़रमाते हैं। सब की अरमान भरी निगाहें हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लबे मुबारक की जुम्बिश पर कुरबान हो रही थी कि सरकार ने फ़रमाया : "**اَیْنَ عَلِیُّ بْنُ اَبِیْ طَالِب**" या'नी अ़ली बिन अबी त़ालिब कहां हैं ? लोगों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह आशोबे चश्म में मुब्तला हैं, उन की आंखें दुखती हैं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई जा कर उन को बुला लाए। जब ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم लाए गए तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों पर लुआ़बे दहन लगाया तो वोह बिल्कुल ठीक हो गईं। ह़दीस शरीफ़ के अस्ल अल्फ़ाज़ येह हैं : "**فَبَصَقَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صلی اللّٰہ علیہ وسلم فِیْ عَیْنَیْہِ فَبَرَا**" और उन की आंखें इस त़रह़ अच्छी हो गईं गोया दुखती ही न थीं। फिर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को झन्डा इनायत फ़रमाया। ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक लड़ूं जब तक कि वोह हमारी त़रह़ मुसलमान न हो जाएं ? हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि नर्मी से काम लो, पहले उन्हें

इस्लाम की त़रफ़ बुलाओ और फिर बतलाओ कि इस्लाम क़बूल करने के बा'द उन पर क्या हुक़ूक़ हैं। ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम्हारी कोशिश से एक शख़्स को भी हिदायत मिल गई तो वोह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर होगा।[1]

जंगे ख़ैबर में शुजाअ़त

इस्लाम क़बूल करने या सुल्ह़ करने के बजाए ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मुक़ाबला करने के लिये मुरह़्ह़ब येह रज्ज़ पढ़ता हुवा क़ल्ए़ से बाहर निकला :

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّی مُرَحَّب
شَاكِی السَّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّب

या'नी बेशक ख़ैबर जानता है कि मैं मुरह़्ह़ब हूं हथियारों से लैस, बहादुर और तजरिबे कार हूं।

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم **ने उस के जवाब में रज्ज़ का येह शे'र पढ़ा :**

اَنَا الَّذِیْ سَمَّتْنِی اُمِّیْ حَيْدَرَه
كَلَيْثِ غَابَاتٍ كَرِيْهِ الْمَنْظَرَه

या'नी मैं वोह शख़्स हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम "शेर" रखा है। मेरी सूरत झाड़ियों में रहने वाले शेर की त़रह़ ख़ौफ़नाक है।

---

١ ... (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، الحدیث: ۳۷۰۱، ۲/۵۳۴) (البدایة والنہایة، ۳/۳۵۹)

मुरह़्ह़ब बड़े घमन्ड से आया था लेकिन शेरे ख़ुदा अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ज़ोर से तल्वार मारी कि उस के सर को काटती हुई दांतों तक पहुंच गई और वोह ज़मीन पर ढेर हो गया। इस के बा'द आप ने फ़त्ह़ का ए'लान फ़रमा दिया।[1]

हैदरे कर्रार की ताक़त

हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उस रोज़ आप ने ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी पीठ पर उठा लिया था और उस पर मुसलमानों ने चढ़ कर क़ल्ए़ को फ़त्ह़ कर लिया था। इस के बा'द आप ने वोह दरवाज़ा फेंक दिया। जब लोगों ने उसे घसीट कर दूसरी जगह डालना चाहा तो चालीस आदमियों से कम उसे उठा न सके।[2]

आप का हुल्या

हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم जिस्म के फ़र्बा थे। अक्सर ख़ौद इस्ति'माल करने की वज्ह से सर के बाल उड़े हुए थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत क़वी और मियाना क़द माइल ब पस्ती थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पेट दीगर आ'ज़ा के ए'तिबार से किसी क़दर भारी था।

۱... (صحیح مسلم، کتاب الجہاد والسیر، باب غزوۃ ذی قرد وغیرہا، الحدیث:۱۸۰۷، ص۱۰۰۵)

۲... (الریاض النضرۃ، علی بن ابی طالب، الفصل السادس فی خصائصہ، ۲/۱۵۱، جزء۳)

मूंढों के दरमियान का गोशत भरा हुवा था। पेट से नीचे का जिस्म भारी था। रंग गन्दुमी था। तमाम जिस्म पर लम्बे लम्बे बाल थे। आप की रीश मुबारक घनी और दराज़ थी।(1)

यहूदी को ला जवाब कर दिया

मशहूर है कि एक यहूदी की दाढ़ी बहुत मुख़्तसर थी, ठोड़ी पर सिर्फ़ चन्द गिनती के बाल थे और हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की दाढ़ी मुबारक बड़ी घनी और लम्बी थी। एक दिन वोह यहूदी हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से कहने लगा : ऐ अ़ली ! तुम्हारा येह दा'वा है कि कु़रआन में सारे उ़लूम हैं और तुम बाबे मदीनतुल इल्म हो तो बताओ कु़रआन में तुम्हारी घनी दाढ़ी और मेरी मुख़्तसर दाढ़ी का भी ज़िक्र है। हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : हां ! सूरए आ'राफ़ में है :

﴿ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِیْ خَبُثَ لَا یَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّشْكُرُوْنَ ﴾

---

1 ... (معرفة الصحابة، معرفة نسبة علی بن ابی طالب، ۱/ ۹۲)(الریاض النضرة، علی بن ابی طالب، الفصل الثالث فی صفاته، ۲/ ۱۰۲، جزء ۳)

या'नी जो अच्छी ज़मीन है उस की हरयाली अल्लाह के हुक्म से ख़ूब निकलती है और जो ख़राब है उस में से नहीं निकलती मगर थोड़ी ब मुश्किल ।[1]

तो ऐ यहूदी वोह अच्छी ज़मीन हमारी ठोड़ी है और ख़राब ज़मीन तेरी ठोड़ी ।

मा'लूम हुवा कि हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का इ़ल्म बहुत वसीअ़ था कि अपनी घनी दाढ़ी और यहूदी की मुख़्तसर दाढ़ी का ज़िक्र आप ने क़ुरआने मजीद में साबित कर दिखाया और येह भी साबित हुवा कि क़ुरआन सारे उ़लूम का ख़ज़ाना है मगर लोगों की अ़क़्लें इस के समझने से क़ासिर हैं । एक शाइ़र ने बहुत ख़ूब कहा है :

جَمِيعُ الْعِلْمِ فِی الْقُرانِ لٰكِنْ
تَقَاصَرَ عَنْهُ اَفْهَامُ الرِّجَال

......ता'रीफ़ और सआ़दत......

हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा ।"

(تفسیرالبیضاوی، پ۲۲، الاحزاب ، تحت الآیۃ: ۷۱، ج۴، ص ۳۸۸)

---

1 ...(سورۃالاعراف،الایۃ۵۸،پ۸)

मश्क़

(1) **सुवाल :** हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जंगे बद्र में शुजाअ़त का वाक़िआ़ तफ़्सीलन बयान कीजिये....?

(2) **सुवाल :** जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने क्या अफ़्वा उड़ाई थी नीज़ हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे सुन कर क्या फ़ैसला किया....?

(3) **सुवाल :** "अ़ली मुझ से है और मैं अ़ली से हूं" येह बिशारत सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कब अ़ता फ़रमाई....?

(4) **सुवाल :** जंगे ख़न्दक़ में हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद के मुक़ाबले का तफ़्सीली ज़िक्र कीजिये.....?

(5) **सुवाल :** اَنَا الَّذِیْ سَمَّتْنِیْ اُمِّیْ حَیْدَرَہ
كَلَيْثِ غَابَاتٍ كَرِيْهِ الْمَنْظَرَہ

मज़्कूरा शे'र हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कब पढ़ा था नीज़ इस का तर्जमा कीजिये.....?

(6) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्यए मुबारका तफ़्सील से बयान कीजिये नीज़ दाढ़ी के मुतअ़ल्लिक़ पूछने वाले यहूदी को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस त़रह ला जवाब कर दिया....?

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم और अहादीसे करीमा

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की फ़ज़ीलत में बहुत सी ह़दीसें वारिद हैं बल्कि इमाम अह़मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं जितनी ह़दीसें आप की फ़ज़ीलत में हैं किसी और सह़ाबी की फ़ज़ीलत में इतनी ह़दीसें नहीं हैं।

मदीने में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा

बुख़ारी और **मुस्लिम** में हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को मदीनए त़य्यिबा में रहने का हुक्म फ़रमाया और अपने साथ नहीं लिया तो इन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप मुझे यहां औ़रतों और बच्चों पर अपना ख़लीफ़ा बना कर छोड़े जाते हैं ? तो सरकारे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اَمَا تَرْضٰى اَنْ تَكُوْنَ مِنِّىْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُّوْسٰى"

या'नी क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हें इस त़रह़ छोड़े जाता हूं कि जिस त़रह़ हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते

हारून عَلَیْہِ السَّلَام को छोड़ गए अलबत्ता फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि मेरे बा'द कोई नबी नहीं होगा ।[1]

मत़लब येह है कि जिस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने कोहे तूर पर जाने के वक़्त चालीस दिन के लिये अपने भाई ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام को बनी इसराईल पर अपना ख़लीफ़ा बनाया था इसी त़रह़ जंगे तबूक की रवानगी के वक़्त मैं तुम को अपना ख़लीफ़ा और नाइब बना कर जा रहा हूं लिहाज़ा जो मर्तबा ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के नज़्दीक ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام का था वोही मर्तबा हमारी बारगाह में तुम्हारा है इस लिये ऐ अ़ली ! तुम्हें ख़ुश होना चाहिये तो ऐसा ही हुवा कि इस ख़ुश ख़बरी से ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को तसल्ली हो गई ।

ए'तिराज़ व जवाब

राफ़िज़ी इस ह़दीस शरीफ़ से ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़लीफ़ा बिला फ़स्ल होने का इस्तिद्लाल करते हैं, जो सह़ीह़ नहीं । इस लिये कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को ख़लीफ़ए मुत़लक़ नहीं बनाया था बल्कि इन की ख़िलाफ़त मह़ज़ ख़ानगी उमूर की निगरानी और अह्लो अ़याल की देख भाल के लिये थी इसी सबब से रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 . . . (صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل علی بن ابی طالب، الحدیث: ۲۴۰۴، ص ۱۳۱۰)

ने ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्लिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए त़य्यिबा का सूबेदार, ह़ज़रते सबाअ़ उ़रफ़ुत़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा का कोतवाल और ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम को अपनी मस्जिद का इमाम बनाया था।[1] (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) मज़ीद जवाबात के लिये "तोह़फ़ए असनाए अ़शरिया" का मुत़ालआ़ करें।

मोमिन बुग़्ज़ नहीं रख सकता

और ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़ली से मुनाफ़िक़ मह़ब्बत नहीं करता और मोमिन अ़ली से बुग़्ज़ो अ़दावत नहीं रखता।[2]

سُبْحَانَ الله ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की क्या ही बुलन्दो बाला शान है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत न करने को मुनाफ़िक़ होने की अ़लामत ठहराया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बुग़्ज़ो अ़दावत रखने को मोमिन न होने का मे'यार क़रार दिया। या'नी जो ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मह़ब्बत न करे वोह मुनाफ़िक़ है और जो इन से बुग़्ज़ो अ़दावत रखे वोह मोमिन नहीं है।

---

١ ... (الصواعق المحرقة، الباب الاول، الفصل الخامس، ص ٥٠)

٢ ... (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، الحدیث: ٣٧٣٨، ٥/٤٠٠)

जिस ने आप को बुरा कहा

और ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "مَنْ سَبَّ عَلِیًّا فَقَدْ سَبَّنِیْ" **या'नी जिस ने अ़ली को बुरा भला कहा तो तह़क़ीक़ उस ने मुझ को बुरा भला कहा ।**(1)

या'नी ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم को ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इतना क़ुर्ब और नज़दीकी ह़ासिल है कि जिस ने उन की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी की तो गोया कि उस ने ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी की । ख़ुलासा येह है कि उन की तौहीन करना ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन करना है । **العیاذ باللہ تعالیٰ**

अ़ली भी उस के मौला

और ह़ज़रते अबुत्तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक दिन ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم ने एक खुले हुए मैदान में बहुत से लोगों को जम्अ़ कर के फ़रमाया कि मैं **अल्लाह** की क़सम दे कर तुम लोगों से पूछता हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यौमे ग़दीर

---

١ ... (سنن الکبریٰ لنسائی، کتاب الخصائص، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم من سب علیا...، الحدیث: ٨٤٧٦، ١٣٣/٥)

में मेरे मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फ़रमाया था ? तो उस मज्मअ़ से तीस आदमी खड़े हुए और उन लोगों ने गवाही दी कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस रोज़ फ़रमाया था :

"مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ"

या'नी मैं जिस का मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं । या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो शख़्स अ़ली से महब्बत रखे तू भी उस से महब्बत रख और जो शख़्स अ़ली से अ़दावत रखे तू भी उस से अ़दावत रख ।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

शहरे इल्म का दरवाज़ा

और **तबरानी** व **बज़्ज़ार** हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से और तिरमिज़ी व हाकिम हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا" या'नी मैं इल्म का शहर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा है ।[2]

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان तह़रीर फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस ह़सन है और जिन्हों ने इस को मौज़ूअ़

---

١ ...(المسند للامام احمد، مسند علی بن ابی طالب، الحديث:٩٥٠، ١/٢٥٠)

٢ ...(المستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة، انا مدينة العلم... ، الحديث:٤٦٩٣، ٤/٩٦)

कहा है उन्हों ने ग़लती की है ।[1]

अ़ली का दुश्मन, अल्लाह का दुश्मन है

और हज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"مَنْ اَحَبَّ عَلِیًّا فَقَدْ اَحَبَّنِیْ" या'नी जिस ने अ़ली से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की । "وَمَنْ اَحَبَّنِیْ فَقَدْ اَحَبَّ اللّٰہ" और जिस ने मुझ से महब्बत की उस ने अल्लाह तआ़ला से महब्बत की

"وَمَنْ اَبْغَضَ عَلِیًّا فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَبْغَضَنِیْ فَقَدْ اَبْغَضَ اللّٰہ"

या'नी जिस ने अ़ली से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की और जिस ने मुझ से दुश्मनी की उस ने अल्लाह से दुश्मनी की ।[2]

महब्बत करने वाले भी हलाक

और **बज़्ज़ार, अबू या'ला** और **ह़ाकिम** हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलाया और फ़रमाया कि तुम्हारी ह़ालत हज़रते

---

١ ...(تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی الاحادیث الواردۃ فی فضلہ، ص ١٣٥)
٢ ...(المعجم الکبیر، ابوطفیل عن ام سلمۃ، الحدیث: ٩٠١، ٣٨٠/٢٣)

ईसा عَلَيْهِ السَّلَام जैसी है कि यहूदियों ने उन से यहां तक दुश्मनी की, कि उन की वालिदा हज़रते मरयम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पर तोहमत लगाई और नसारा ने उन से महब्बत की तो इस क़दर हद से बढ़ गए कि उन को **अल्लाह**, या **अल्लाह** का बेटा कह दिया।

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया : तो कान खोल कर सुन लो ! मेरे बारे में भी दो गुरौह हलाक होंगे। एक मेरी महब्बत में हद से तजावुज़ करेगा और मेरी ज़ात से उन बातों को मन्सूब करेगा जो मुझ में नहीं हैं और दूसरा गुरौह इस क़दर बुग़्ज़ो अ़दावत रखेगा कि मुझ पर बोहतान लगाएगा।[1]

इस ह़दीस शरीफ़ की पेशीन गोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सह़ीह़ हुई। बेशक हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم **के बारे में दो फ़िर्क़े गुमराह हो कर हलाक हुए। एक राफ़िज़ी और दूसरे ख़ारिजी।** राफ़िज़ी इस लिये हलाक हुए कि उन्हों ने हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم को हद से बढ़ाया यहां तक कि उन को ख़ुदा कह दिया (देखिये **तोह़फ़ए असना अ़शरिया बाब अव्वल**) और ख़ारिजियों ने उन से इस क़दर बुग़्ज़ो अ़दावत रखी कि उन को काफ़िर कह दिया। (**معاذاللہ رب العالمین**)

---

١ ... (المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، قال علی یھلک فی محب مطری، الحدیث: ۴۶۸۰، ۴/۹۰)

"अबू तुराब" कुन्यत कैसे हुई

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की एक कुन्यत अबू तुराब भी है जैसा कि शुरूअ़ में बताया जा चुका है। जब कोई शख़्स आप को अबू तुराब कह कर पुकारता था तो आप बहुत ख़ुश होते थे और रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लुत़्फ़ो करम के मज़े लेते थे इस लिये कि येह कुन्यत आप को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही से इनायत हुई थी। इस का वाक़िआ़ येह है कि एक रोज़ आप मस्जिद में आ कर लेटे हुए थे और आप के जिस्म पर कुछ मिट्टी लग गई थी कि इतने में रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए और अपने मुबारक हाथों से आप के बदन की मिट्टी झाड़ते हुए फ़रमाया :

"قُمْ یَا اَبَا تُرَاب" या'नी ऐ मिट्टी वाले ! उठो। उस रोज़ से आप की कुन्यत "**अबू तुराब**" हो गई।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

ख़ुलफ़ाए सलासा और हज़रते अ़ली رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने ख़ुलफ़ाए सलासा में से हर एक की ख़िलाफ़त को ब ख़ुशी मन्ज़ूर फ़रमाया है और किसी की ख़िलाफ़त से इन्कार नहीं किया है जैसा कि इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले से लिखा है कि जब हज़रते अ़ली

---

1 ...(صحیح ابن حبان، ذکر تسمیۃ المصطفی علیا اباتراب، الحدیث:۶۸۸۶، ۲/۴۰)

کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم बसरा तशरीफ़ लाए तो इब्नुल कवा और क़ैस बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने खड़े हो कर आप से पूछा कि आप हमें येह बतलाइये कि बा'ज़ लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से वा'दा फ़रमाया था कि मेरे बा'द तुम ख़लीफ़ा होगे तो येह बात कहां तक सच है ? इस लिये कि आप से ज़ियादा इस मुआ़मले में सह़ीह़ बात और कौन कह सकता है ?

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : येह ग़लत़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से कोई वा'दा फ़रमाया था, जब मैं ने सब से पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की तस्दीक़ की तो अब मैं ग़लत़ बात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब नहीं कर सकता । अगर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ का कोई वा'दा मुझ से किया होता तो मैं ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर पर न खड़ा होने देता मैं उन दोनों को इन्हीं हाथों से क़त्ल कर डालता, चाहे मेरा साथ देने वाला कोई न होता । येह तो सब लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अचानक किसी ने क़त्ल नहीं किया और न आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यकायक विसाल हुवा बल्कि कई दिन तक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़बीअ़त नासाज़ रही और जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बीमारी ने ज़ोर पकड़ा और मुअज़्ज़िन ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ के लिये बुलाया तो आप

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाया और मुशाहदा फ़रमाते रहे। मुअज़्ज़िन ने फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ के लिये बुलाया, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ पढ़ाने के लिये फ़रमाया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात में से एक ने (या'नी हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने) हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इमामत से बाज़ रखना चाहा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नाराज़गी ज़ाहिर की और फ़रमाया कि तुम लोग तो यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के ज़माने की औरतें हो। अबू बक्र सिद्दीक़ से कहो कि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया तो हम ने ख़िलाफ़त के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर करने के बा'द फिर इन्हीं को अपनी दुन्या के लिये इख़्तियार कर लिया जिस को प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारे दीन या'नी नमाज़ के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया था चूंकि नमाज़ दीन की अस्ल है और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दीनो दुन्या दोनों के क़ाइम फ़रमाने वाले थे इस लिये हम सब ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैअ़त कर ली और सच्ची बात येही है कि वोही इस के अह्ल भी थे इसी लिये किसी ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में इख़्तिलाफ़ नहीं किया और न किसी ने किसी को नुक़्सान पहुंचाने का इरादा किया और न

किसी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त से रूगर्दानी की। इसी बिना पर मैं ने भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़क़ अदा किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इत़ाअ़त की। मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर में शरीक हो कर काफ़िरों से जंग की। माले ग़नीमत या बैतुल माल से जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दिया वोह हम ने ब ख़ुशी क़बूल किया और जहां कहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे जंग के लिये भेजा मैं गया और दिल खोल कर लड़ा यहां तक कि उन के हुक्म से शरई सज़ाएं भी दीं या'नी हुदूद जारी कीं।

फिर ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم **ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने ह़ज़रते उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **को अपना ख़लीफ़ा बनाया और वोह ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ के बेहतरीन जा नशीन और सुन्नते नबवी पर अ़मल करने वाले थे तो हम ने उन के हाथ पर भी बैअ़त कर ली।** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाने पर भी किसी शख़्स ने बिल्कुल इख़्तिलाफ़ नहीं किया और न कोई किसी को नुक़्सान पहुंचाने के दरपै हुवा और एक फ़र्द भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त से बेज़ार नहीं हुवा। मैं ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक़ूक़ भी अदा किये और पूरे त़ौर पर उन की इत़ाअ़त की और उन के लश्कर में भी शरीक हो कर दुश्मनों से जंग की और उन्हों ने जो कुछ मुझे दिया मैं ने ख़ुशी से ले लिया। उन्हों ने मुझे लड़ाइयों पर भेजा मैं ने दिल खोल

कर काफ़िरों से मुक़ाबला किया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में भी अपने कोड़ों से मुजरिमों को सज़ाएं दीं।

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अपना बयान जारी रखते हुए फ़रमाया कि फिर जब हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अपनी क़राबत, इस्लाम लाने में सबक़त, और अपनी दूसरी फ़ज़ीलतों की जानिब दिल में ग़ौर किया तो मुझे येह ख़याल ज़रूर पैदा हुवा कि अब हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मेरी ख़िलाफ़त के बारे में कोई ए'तिराज़ न होगा। लेकिन ग़ालिबन हज़रते उ़मर को येह ख़ौफ़ हुवा कि वोह कहीं ऐसा ख़लीफ़ा नामज़द न कर दें कि जिस के आ'माल का ख़ुद हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ब्र में जवाब देना पड़े। इस ख़याल के पेशे नज़र उन्हों ने अपनी औलाद को भी ख़िलाफ़त के लिये नामज़द नहीं फ़रमाया बल्कि ख़लीफ़ा के मुक़र्रर करने का मस्अला छे क़ुरैशियों के सिपुर्द किया जिन में से एक मैं भी था। जब इन छे मेम्बरों ने इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा के लिये इज्लास त़लब किया तो मुझे ख़याल पैदा हुवा कि अब ख़िलाफ़त मेरे सिपुर्द कर दी जाएगी। येह कमेटी मेरे बराबर किसी दूसरे को हैसिय्यत नहीं देगी और मुझी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करेगी। जब कमेटी के सब अफ़राद जम्अ़ हो गए तो हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हम लोगों से वा'दा लिया कि **अल्लाह** तआ़ला हम में से जिस को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दे हम सब उस की इत़ाअ़त करेंगे और उस के अह़काम को ख़ुशी से बजा लाएंगे। इस के बा'द अ़ब्दुर्रह़मान बिन

औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैअ़त की। उस वक़्त मैं ने सोचा कि मेरी इत़ाअ़त मेरी बैअ़त पर ग़ालिब आ गई और मुझ से जो वा'दा लिया गया था वोह अस्ल में दूसरे की बैअ़त के लिये था। **बहर ह़ाल मैं ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर भी बैअ़त कर ली और ख़लीफ़ए अव्वल व दुवुम की त़रह़ उन की इत़ाअ़त भी क़बूल कर ली। उन के हुक़ूक़ अदा किये। उन की सरकर्दगी में जंगें लड़ीं, उन के अ़त़ियात को क़बूल किया और मुजरिमों को शरई सज़ाएं भी दीं।**

फिर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द मुझे येह ख़याल पैदा हुवा कि वोह दोनों ख़लीफ़ा कि जिन से मैं ने नमाज़ के सबब बैअ़त की थी विसाल फ़रमा चुके और जिन के लिये मुझ से वा'दा लिया गया था वोह भी रुख़्सत हो गए। लिहाज़ा येह सोच कर मैं ने बैअ़त लेना शुरूअ़ कर दी। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए त़य्यिबा के बाशिन्दों ने और कूफ़ा व बसरा के रहने वालों ने मेरी बैअ़त कर ली। अब ख़िलाफ़त के लिये मेरे मुक़ाबिल वोह शख़्स खड़ा हुवा है। (या'नी ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जो क़राबत, इ़ल्म और सबक़ते इस्लाम में मेरे बराबर नहीं। इस लिये मैं उस शख़्स के मुक़ाबले में ख़िलाफ़त का ज़ियादा मुस्तह़िक़ हूं।[1]

---

١ ...(تاریخ مدینۃ دمشق، علی بن ابی طالب، ۴۲/۴۴۲)(تاریخ الخلفاء، فصل فی نبذ من اخبار علی، ص ۱۴۰)

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के इस तफ़्सीली बयान से वाज़ेह़ तौर पर मा'लूम हुवा कि सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने बा'द उन को ख़िलाफ़त के लिये नामज़द नहीं फ़रमाया था और न उन से इस क़िस्म का कोई वा'दा फ़रमाया था इसी लिये आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ख़ुलफ़ाए सलासा की बैअ़त से इन्कार नहीं किया और न उन की मुख़ालफ़त की बल्कि हर त़रह़ से उन का तआ़वुन किया और उन के अ़तियात को क़बूल फ़रमाया।

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की तरतीब में ह़िक्मत

दर अस्ल राज़ येह है कि अगर हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द बिला फ़स्ल ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हो जाते तो ख़ुलफ़ाए सलासा मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िलाफ़त व नियाबत की ने'मत से सरफ़राज़ न हो पाते। सब हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के अ़ह्द ही में इन्तिक़ाल कर जाते ह़ालांकि इल्मे इलाही में येह मुक़द्दर हो चुका था कि वोह तीनों ह़ज़रात भी ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नियाबत से सरफ़राज़ होंगे तो ख़ुदाए तआ़ला ने सह़ाबए किराम के दिलों में येह बात डाल दी कि वोह इसी तरतीब से ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करें कि जिस तरतीब के साथ वोह दुन्या से रुख़्सत होने वाले हैं ताकि उन में से कोई ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नियाबत से मह़रूम न रहे। (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)

मश्क़

(1) **सुवाल :** ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़्वए तबूक में क्यूं शिर्कत न कर सके नीज़ उस मौक़अ़ पर सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से क्या फ़रमाया.....?

(2) **सुवाल :** ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना ख़लीफ़ा बनाया, येह ह़दीस क्या आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़लीफ़ा बिला फ़स्ल पर दलालत नहीं करती...?

(3) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुरा कहने वालों के मुतअ़ल्लिक़ क्या वईदात हैं......?

(4) **सुवाल :** ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के वुस्अ़ते इल्मी पर कौन सी ह़दीस दलालत करती है.....?

(5) **सुवाल :** सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को किन बातों में ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से तश्बीह दी....?

(6) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू तुराब" कैसे हुई.....?

(7) **सुवाल :** ख़िलाफ़त के मुतअ़ल्लिक़ किसी वा'दे के बारे में जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार किया गया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क्या जवाब इरशाद फ़रमाया नीज़ मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़लीफ़ए चहारुम होने की क्या ह़िक्मत बयान की है.....?

आप का इ़ल्म

हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم इ़ल्म के ए'तिबार से भी उ़लमाए सह़ाबा में बहुत ऊंचा मक़ाम रखते हैं । सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत सी ह़दीसें आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी हैं । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़तवे और फ़ैसले इस्लामी उ़लूम के अनमोल जवाहिर पारे हैं ।

सह़ाबए किराम के नज़दीक इ़ल्मी मक़ाम

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि हम ने जब भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से किसी मस्अले को दरयाफ़्त किया तो हमेशा दुरुस्त ही जवाब पाया ।

.......हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सामने जब हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم का ज़िक्र हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया कि अ़ली से ज़ियादा मसाइले शरइय्या का जानने वाला कोई और नहीं है ।(1)

........और हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मदीनए त़य्यिबा में इ़ल्मे फ़राइज़ और मुक़द्दमात के फ़ैसले करने में

---

۱ ... (الریاض النضرۃ، علی بن ابی طالب، ذکر اختصاصہ بانہ اعلم الناس...، ۲/۱۵۹، جزء ۳)

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से ज़ियादा इल्म रखने वाला कोई दूसरा नहीं था ।(1)

......और हज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबा में सिवाए हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के कोई येह कहने वाला नहीं था कि जो कुछ पूछना हो मुझ से पूछ लो ।(2)

.......और हज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से येह भी मरवी है कि जब हज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में कोई मुश्किल मुक़द्दमा पेश होता और हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم मौजूद न होते तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगा करते थे कि मुक़द्दमे का फ़ैसला कहीं ग़लत़ न हो जाए ।(3)

अगर अ़ली न होते तो

मशहूर है कि हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने एक ऐसी औ़रत पेश की गई जिसे ज़िना का ह़म्ल था । सुबूते शरई के बा'द आप ने उस को संगसार का हुक्म फ़रमाया । हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने याद दिलाया कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि ह़ामिला औ़रत को बच्चा पैदा

---

1 ...(الرياض النضرة، علی بن ابی طالب، ذکر اختصاصه بانه اقضی الامة...، ۲/۱٦۷، جزء۳)

2 ...(اسد الغابة، علی بن ابی طالب، علمه رضی الله عنه، ۴/۱۰۹)

3 ...(تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، ص ۱۳۵)

होने के बा'द संगसार किया जाए इस लिये कि ज़िना करने वाली औ़रत अगर्चे गुनहगार होती है मगर उस के पेट का बच्चा बे क़ुसूर होता है। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की याद दिहानी के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने फ़ैसले से रुजूअ़ कर लिया और फ़रमाया : لَوْلَا عَلِیٌّ لَهَلَكَ عُمَرُ या'नी अगर अ़ली न होते उ़मर हलाक हो जाता। अ़ली की मौजूदगी ने उ़मर को हलाकत से बचा लिया।[1] (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه)

आप के फ़ैसले

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के फ़ैसले ऐसे अ़जीबो ग़रीब और नादिरे रूज़गार हैं कि जिन्हें पढ़ कर बड़े बड़े अ़क़्लमन्दों और दानिश्वरों की अ़क़्लें ह़ैरान हैं और येह सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक और उन की दुआ़ की बरकत है।

फिर फ़ैसले में कभी दुश्वारी न हुई

खुद ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे यमन की जानिब क़ाज़ी बना कर भेजना चाहा तो मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं अभी ना तजरिबा कार जवान हूं, मुआ़मलात तै करना नहीं जानता हूं और आप

---

1 ...(الاستیعاب، باب حرف العین، ۳/۲۰۶)

मुझे यमन भेजते हैं ! येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : **"इलाहल आ़लमीन ! इस के क़ल्ब को रौशन फ़रमा दे और इस की ज़बान में तासीर अ़ता फ़रमा दे।"** क़सम है उस ज़ात की जो छोटे से बीज से बड़ा दरख़्त पैदा करता है। **इस दुआ़ के बा'द से फिर कभी मुझे किसी मुक़द्दमे के फ़ैसले में कोई तरद्दुद नहीं रहा। बिग़ैर किसी शक्को शुबा के मैं ने हर मुक़द्दमे का तसफ़िया कर दिया।**[1]

अब आप हज़रात सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द फ़ैसले मुलाहज़ा फ़रमाएं।

आक़ा और ग़ुलाम

हज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि यमन के एक शख़्स ने अपने ग़ुलाम को अपने लड़के के साथ कूफ़ा भेजा। इत्तिफ़ाक़ से रास्ते में दोनों ने आपस में झगड़ा किया। लड़के ने ग़ुलाम को मारा और ग़ुलाम ने उसे गालियां दीं। कूफ़ा पहुंच कर ग़ुलाम ने दा'वा किया कि येह लड़का मेरा ग़ुलाम है और इसे बेचना चाहा।

येह मुक़द्दमा हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की अ़दालत में पहुंचा। आप ने ख़ादिम क़ुम्बर से फ़रमाया कि इस कमरे की दीवार में दो बड़े बड़े सूराख़ बनाओ और इन दोनों से कहो कि अपने अपने सर उन सूराख़ों से बाहर निकालें। जब येह सब हो गया तो आप ने

---

۱ ...(مسند البزار، مسند علی بن ابی طالب، وما روی ابو البختری، الحدیث: ۹۱۲، ۳/۱۲۵)

फ़रमाया : ऐ क़ुम्बर ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तल्वार लाओ। जब हज़रते क़ुम्बर तल्वार ले कर आए तो आप ने फ़रमाया : फ़ौरन ग़ुलाम का सर काट लो, इतना सुनते ही ग़ुलाम ने फ़ौरन अपना सर अन्दर खींच लिया और दूसरा नौजवान अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहा। इस त़रह़ आप के इज्लास में बिग़ैर किसी गवाह व शहादत के फ़ैसला हो गया कि आक़ा कौन है और ग़ुलाम कौन है। आप ने ग़ुलाम को सज़ा दी और उसे यमन भेज दिया। (अ़शरए मुबश्शरा)

ह़क़ीक़ी मां कौन

हज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक मरतबा दो औ़रतें एक लड़के के मुतअ़ल्लिक़ झगड़ा करती हुई हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास आईं दोनों का कहना था कि येह लड़का हमारा है। आप ने पहले उन दोनों को बहुत समझाया लेकिन जब उन की हंगामा आराई जारी रही तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुक्म दिया आरा लाओ। उन्हों ने पूछा : आरा किस लिये मंगवा रहे हैं ? आप ने फ़रमाया कि इस लड़के के दो टुकड़े कर के दोनों को आधा आधा दूंगा। ह़क़ीक़त में उस लड़के की जो मां थी येह सुन कर बे क़रार हो गई और उस के चेहरे से ग़मगीनी ज़ाहिर हुई। उस ने निहायत आ़जिज़ी से अ़र्ज़ किया : अमीरुल मोमिनीन ! मैं इस लड़के को नहीं लेना चाहती। येह इसी औ़रत का है आप इसी को दे दीजिये मगर ख़ुदा के वासित़े इस को क़त्ल न कीजिये। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने वोह लड़का उसी बे क़रार औ़रत

को दे दिया जो औ़रत ख़ामोश खड़ी रही आप ने उस से फ़रमाया कि तुम को शर्म आनी चाहिये कि तुम ने मेरे इज्लास में झूटा बयान दिया। यहां तक कि उस औ़रत ने अपने जुर्म का इक़रार कर लिया। (अ़शरए मुबश्शरा)

एक शख़्स की वसिय्यत

हज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक मरतबा एक शख़्स ने मरते वक़्त अपने एक दोस्त को दस हज़ार दिरहम दिये और वसिय्यत की, कि जब तुम से मेरे लड़के की मुलाक़ात हो तो इस में से **''जो तुम चाहो वोह''** उस को दे देना इत्तिफ़ाक़ से कुछ रोज़ बा'द उस का लड़का वत़न में आ गया इस मौक़अ़ पर हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स से पूछा कि बताओ तुम मर्हूम के लड़के को कितना दोगे ? उस ने कहा : एक हज़ार दिरहम। **आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अब तुम उस को नौ हज़ार दो। इस लिये (कि) ''जो तुम ने चाहा वोह'' नौ हज़ार हैं और मर्हूम ने येह वसिय्यत की है कि ''जो तुम चाहो वोह'' उस को दे देना।** (अ़शरए मुबश्शरा)

सतरह ऊंट

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْكَرِیْم की ख़िदमत में तीन शख़्स आए उन के पास सतरह[17] ऊंट थे। उन लोगों ने आप से अ़र्ज़ किया कि इन ऊंटों को आप हमारे दरमियान तक़्सीम कर दें। हम में एक शख़्स आधे (1/2) का हिस्सेदार है दूसरा तिहाई (1/3) का और

तीसरा नौवें (1/9) हि़स्से का मगर शर्त़ येह है कि पूरे पूरे ऊंट हर शख़्स को मिलें। काट कर तक़्सीम न करें और न किसी से कुछ पैसे दिलाएं।

बड़े बड़े दानिश्वर जो आप के पास बैठे हुए थे उन्हों ने आपस में कहा : येह कैसे हो सकता है कि पूरे पूरे ऊंट हर शख़्स को मिलें और वोह काटे न जाएं न किसी से कुछ पैसे दिलाए जाएं इस लिये कि जो शख़्स आधे का हि़स्सेदार है उसे सतरह(17) में साढ़े आठ (8.5) मिलेंगे और जो शख़्स तिहाई का ह़क़दार है पोने छे (5.75) ही ऊंट पाएगा। सतरह(17) में से पूरा छे उसे भी नहीं मिलेगा और जिस का हि़स्सा नौवां है सतरह में से वोह भी दो से कम ही पाएगा तो एक दो नहीं बल्कि तीन ऊंट ज़ब्ह़ किये बिग़ैर सतरह ऊंटों की तक़्सीम इन लोगों के दरमियान हरगिज़ नहीं हो सकती।

मगर क़ुरबान जाए ! ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की अ़क़्ल व दानाई और इन की क़ुव्वते फ़ैसला पर कि आप ने बिला तअम्मुल फ़ौरन उन के ऊंटों को एक लाइन में खड़ा करवा दिया और अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि हमारा एक ऊंट इसी लाइन के आख़िर में ला कर खड़ा कर दो। जब आप के ऊंट को मिला कर कुल अठ्ठारह ऊंट हो गए तो जो शख़्स आधे (1/2) का हि़स्सेदार था आप ने उसे अठ्ठारह में से नव दिये और तिहाई (1/3) हि़स्सेदार को अठ्ठारह में से छे। फिर नौवें (1/9) के हि़स्सेदार को अठ्ठारह में से दो दिये और अपने ऊंट को फिर अपनी जगह पर भिजवा दिया। (अ़शरए मुबश्शरह)

इस त़रह़ आप ने न तो कोई ऊंट काटा और न ही किसी को कुछ नक़्द पैसा दिलवाया और सतरह (17) ऊंटों को उन की शर्त़ के मुत़ाबिक़ तक़्सीम फ़रमा दिया जिस पर किसी शख़्स को कोई ए'तिराज़ नहीं हुवा।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस फ़ैसले को देख कर सारे ह़ाज़िरीन दंग हो गए और सब बयक ज़बान पुकार उठे कि बेशक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सीना फ़ज़्लो कमाल का ख़ज़ीना, ह़िक्मत व अ़दालत का सफ़ीना और इल्मे नबुव्वत का मदीना है। (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم)

आठ रोटियां

दो आदमी सफ़र में एक साथ खाना खाने के लिये बैठे। उन में से एक की पांच रोटियां थीं दूसरे की तीन। इतने में एक शख़्स उधर से गुज़रा उस ने दोनों को सलाम किया। उन्हों ने उस को भी अपने साथ खाने पर बिठा लिया और तीनों ने मिल कर वोह सब रोटियां खाईं। खाने से फ़ारिग़ हो कर उस तीसरे शख़्स ने आठ दिरहम दिये और कहा आपस में बांट लेना। जब वोह शख़्स चला गया तो पांच रोटियों वाले ने कहा कि मैं पांच दिरहम लूंगा कि मेरी पांच रोटियां थीं और तुम तीन दिरहम लो कि तुम्हारी तीन ही थीं। तीन रोटी वाले ने कहा : नहीं बल्कि आधे दिरहम हमारे हैं और आधे तुम्हारे इस लिये कि हम दोनों ने मिल कर रोटियां खाईं हैं लिहाज़ा दोनों का ह़िस्सा बराबर चार-चार दिरहम होगा।

जब दोनों में मुआ़मला तै न हुवा तो इस झगड़े का फ़ैसला कराने के लिये दोनों हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के इज्लास में पहुंचे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सारा वाक़िआ़ सुनने के बा'द तीन रोटी वाले से फ़रमाया कि तुम्हारा साथी जो तीन दिरहम तुम को दे रहा है, ले लो। इस लिये कि तुम्हारी रोटियां कम थीं तीन रोटियों वाले ने कहा कि मैं इस ग़ैर मुन्सिफ़ाना फ़ैसले पर राज़ी नहीं हूं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : येह ग़ैर मुन्सिफ़ाना फ़ैसला नहीं है। ह़िसाब से तो तुम्हारा एक ही दिरहम होता है। उस ने कहा : आप ह़िसाब हमें समझा दीजिये तो हम एक ही दिरहम ले लेंगे।

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : कान खोल कर सुनो ! तुम्हारी तीन रोटियां थीं और इस की पांच। कुल आठ रोटियां हुईं और खाने वाले कुल तीन थे। तो इन आठ रोटियों के तीन तीन टुकड़े करो तो कुल चौबीस टुकड़े हुए। अब इन चौबीस टुकड़ों को तीन खाने वालों पर तक़्सीम करो तो आठ आठ टुकड़े सब के ह़िस्से में आए। या'नी आठ टुकड़े तुम ने खाए आठ तुम्हारे साथी ने और आठ उस तीसरे शख़्स ने। अब ग़ौर से सुनो ! तुम्हारी तीन रोटियों के तीन तीन टुकड़े करें तो नव टुकड़े बनते हैं और तुम्हारे साथी की पांच रोटियों के तीन तीन टुकड़े करें तो पन्दरह टुकड़े बनते हैं तो तुम ने अपने नव टुकड़ों में से आठ टुकड़े ख़ुद खाए और तुम्हारा सिर्फ़ एक टुकड़ा बचा जो उस

तीसरे शख़्स ने खाया लिहाज़ा तुम्हारा सिर्फ़ एक दिरहम हुवा और तुम्हारे साथी ने अपने पन्दरह टुकड़ों में से आठ ख़ुद खाए और इस के सात टुकड़े उस तीसरे शख़्स ने खाए लिहाज़ा सात दिरहम इस के हुए। येह फ़ैसला सुन कर तीन रोटी वाला हैरान हो गया। मजबूरन उसे एक ही दिरहम लेना पड़ा और दिल में कहने लगा : ऐ काश ! मैं ने तीन दिरहम ले लिये होते तो अच्छा था।(1)

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم की करामतें

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बहुत सी करामतों का ज़ुहूर हुवा है। जिन में से चन्द करामतों का ज़िक्र यहां किया जाता है।

येह तेरा शौहर नहीं, बेटा है

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान जामी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीर फ़रमाते हैं कि कूफ़ा में एक रोज़ हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم ने सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ने के बा'द एक शख़्स से फ़रमाया कि फ़ुलां मक़ाम पर जाओ वहां एक मस्जिद है जिस के पहलू में एक मकान वाक़ेअ़ है उस में एक

١ ...(الصواعق المحرقۃ،الباب التاسع، الفصل الرابع، ص ١٢٩)

मर्द और एक औ़रत आपस में लड़ते हुए मिलेंगे उन्हें हमारे पास ले आओ । वोह शख़्स वहां पहुंचा तो देखा वाक़ेई वोह दोनों आपस में झगड़ा कर रहे हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म के मुताबिक़ वोह उन दोनों को साथ ले आया । हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आज रात तुम दोनों में बहुत लड़ाई हुई । नौजवान ने कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ने इस औ़रत से निकाह़ किया लेकिन जब मैं इस के पास आया तो इस की सूरत से मुझे सख़्त नफ़रत हो गई । अगर मेरा बस चलता तो इस औ़रत को मैं इसी वक़्त अपने पास से दूर कर देता । इस ने मुझ से झगड़ना शुरूअ़ कर दिया और सुब्ह़ तक लड़ाई होती रही यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भेजा हुवा आदमी हमें बुलाने के लिये पहुंचा ।

हाज़िरीन को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जाने का इशारा फ़रमाया । वोह चले गए । इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस औ़रत से पूछा : तुम इस जवान को पहचानती हो ? उस ने कहा : नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि येह कल से मेरा शौहर है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अब तू अच्छी त़रह़ जान लेगी मगर सच सच कहना, झूट हरगिज़ नहीं बोलना । उस ने कहा : मैं वा'दा करती हूं : झूट क़त़ई नहीं बोलूंगी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम फ़ुलां की बेटी फ़ुलां हो ? उस ने कहा : हां हुज़ूर ! मैं वोही हूं । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम्हारा चचाज़ाद भाई था जो तुम पर आ़शिक़ था और तू भी उस से बहुत

महब्बत करती थी। उस ने इस बात का भी इक़रार किया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तू एक दिन किसी ज़रूरत से रात के वक़्त घर से बाहर निकली तो उस ने तुझे पकड़ कर तुझ से ज़िना किया और तू ह़ामिला हो गई। इस बात को तू ने अपने बाप से छुपा रखा। उस ने कहा। बेशक ऐसा ही हुवा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मगर तेरी मां सारा वाक़िआ़ जानती थी और जब बच्चा पैदा होने का वक़्त आया तो रात थी। तेरी मां तुझे घर से बाहर ले गई तुझे लड़का पैदा हुवा तू ने उसे एक कपड़े में लपेट कर दीवार के पीछे डाल दिया इत्तिफ़ाक़ से वहां एक कुत्ता पहुंच गया जिस ने उसे सूंघा तू ने उस कुत्ते को पथ्थर मारा जो पथ्थर बच्चे के सर पर लगा। जिस से वोह ज़ख़्मी हो गया। तेरी मां ने अपने इज़ार बन्द से कुछ कपड़ा फाड़ कर उस के सर को बांध दिया फिर तुम दोनों वापस चली आईं और फिर तुम्हें उस लड़के का कोई पता न चला। उस औ़रत ने जवाब दिया : हां हुज़ूर ! ऐसा ही हुवा था। मगर ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस वाक़िए को मेरे और मेरी मां के इ़लावा कोई तीसरा नहीं जानता था ?

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : जब सुब्ह़ हुई तो फ़ुलां क़बीला उस लड़के को उठा कर ले गया और उस की परवरिश की यहां तक कि वोह जवान हो गया, कूफ़ा शहर में आया और अब तुझ से शादी कर ली। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस नौजवान से कहा : अपना सर खोलो। उस ने अपना सर खोला तो ज़ख़्म का असर ज़ाहिर था।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह तुम्हारा लड़का है। ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ ने इसे ह़राम चीज़ से मह़फ़ूज़ रखा। फ़रमाया : ले, इसे अपने साथ ले जा। तू इस की बीवी नहीं, मां है और येह तेरा शौहर नहीं, बेटा है।(1)

इस वाक़िए़ से साफ़ ज़ाहिर है कि **अल्लाह** के मह़बूब बन्दे आ़म इन्सानों की त़रह़ नहीं होते बल्कि उन के अन्दर ऐसा कमाल होता है कि वोह लोगों के सारे ह़ालात जानते हैं।

मौलाना रूम عَلَیْہِ الرحمۃُ والرِضوان फ़रमाते हैं :

حال تو دانند یک مو بمو

زانکہ پر ہستند از اسرار ہو

या'नी **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारे हर ह़ाल से ज़र्रा ज़र्रा आगाह हैं इस लिये कि उन के अन्दर असरारे रब्बानी भरे हुए हैं।

दरिया पीछे हट गया

कूफ़ा वालों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस साल दरियाए फ़ुरात की तुग़्यानी के सबब हमारी खेतियां बरबाद हो रही हैं क्या ही अच्छा हो अगर आप **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ करें कि दरिया का पानी कम हो जाए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठ कर मकान के अन्दर तशरीफ़ ले गए। लोग घर के दरवाज़े पर आप

---

١ . . . (شواہد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھدو دلائلی . . . الخ، ص ٢١٣)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिज़ार कर रहे थे कि अचानक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जुब्बा पहने, इमामा सर पर बांधे और अ़साए मुबारक हाथ में लिये हुए बाहर तशरीफ़ लाए एक घोड़ा मंगवा कर उस पर सुवार हुए और फ़ुरात की त़रफ़ रवाना हुए। अ़वामो ख़वास में से बहुत लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे पीछे चले।

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ुरात के कनारे पहुंचे तो घोड़े से उतर कर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी। फिर उठ कर अ़साए मुबारक हाथ में लिया और फ़ुरात के पुल पर आ गए उस वक़्त ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इन के साथ थे। **आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़सा से पानी की त़रफ़ इशारा किया तो पानी की सत़ह़ एक हाथ कम हो गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : क्या इतना काफ़ी है....? लोगों ने कहा : नहीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर अ़सा से पानी की त़रफ़ इशारा किया, पानी एक हाथ और कम हो गया। इस त़रह़ जब तीन फ़ुट पानी की सत़ह़ नीचे हो गई तो लोगों ने कहा : या अमीरल मोमिनीन ! बस इतना काफ़ी है।**(1)

सच फ़रमाया मौलाना रूम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَالرِّضْوَان ने कि.....

یاد اور گر مونس جانت بود
ھر دو عالم زیر فرمانت بود

---

1 ...(شواہد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھدو دلایلی...الخ، ص ۲۱۴)

या'नी ख़ुदाए तआ़ला की याद अगर तुम्हारी जान की साथी बन जाए तो दोनों आ़लम तुम्हारे ताबेए़ फ़रमान हो जाएं।

चश्मा जारी कर दिया

जब ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم जंगे सिफ्फ़ीन में मश्ग़ूल थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथियों को पानी की सख़्त ज़रूरत पड़ी। लोगों ने बहुत दौड़ धूप की मगर पानी दस्तयाब न हुवा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : और आगे चलो। कुछ दूर चले तो एक गिरजा नज़र आया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस गिरजा में रहने वाले से पानी के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया। उस ने कहा : यहां से छे मील के फ़ासिले पर पानी मौजूद है। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथियों ने कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हमें इजाज़त दीजिये शायद हम अपनी क़ुव्वत के ख़त्म होने से पहले पानी तक पहुंच जाएं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : इस की ह़ाजत नहीं। फिर अपनी सुवारी को मग़रिब की त़रफ़ मोड़ा और एक त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : यहां से ज़मीन खोदो। अभी थोड़ी ही ज़मीन खोदी गई थी कि नीचे से एक बड़ा पथ्थर ज़ाहिर हुवा जिसे हटाने के लिये कोई हथियार भी कारगर न हो सका। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : येह पथ्थर पानी पर

वाक़ेअ़ है किसी त़रह़ इसे हटाओ । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथियों ने बहुत कोशिश की मगर उसे अपनी जगह से हिला न सके । अब शेरे ख़ुदा ने अपनी आस्तीनें चढ़ा कर उंगलियां उस पथ्थर के नीचे रख कर ज़ोर लगाया तो पथ्थर हट गया और उस के नीचे निहायत ठन्डा, मीठा और साफ़ पानी ज़ाहिर हुवा जो इतना अच्छा था कि पूरे सफ़र में इन्हों ने ऐसा पानी न पिया था । सब ने शिकम सेर हो कर पिया और जितना चाहा भर लिया । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पथ्थर को उठा कर चश्मे पर रख दिया और फ़रमाया : इस पर मिट्टी डाल दो । जब राहिब ने येह देखा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में खड़े हो कर निहायत अदब से पूछा : क्या आप **पैग़म्बर** हैं....? फ़रमाया : नहीं । पूछा : क्या आप **फ़िरिश्तए मुक़र्रब** हैं...? फ़रमाया : नहीं, पूछा : तो फिर आप कौन हैं....? फ़रमाया मैं **सय्यिदुना मुह़म्मद रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का **दामाद** और उन का **ख़लीफ़ा** हूं । राहिब ने **कहा : "हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आप के हाथ पर इस्लाम क़बूल करूं ।"** आप ने हाथ बढ़ाया तो राहिब ने कहा :

"اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने राहिब से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या वज्ह है कि तुम इतनी मुद्दत से अपने दीन पर क़ाइम थे और आज

तुम ने इस्लाम क़बूल कर लिया । उस ने कहा : हुज़ूर ! येह गिरजा उसी हाथ पर फ़त्ह़ होना था जो इस चट्टान को हटा कर चश्मा निकाले और हमारी किताबों में लिखा हुवा है कि इस चट्टान का हटाने वाला या तो पैग़म्बर होगा और या पैग़म्बर का दामाद । जब मैं ने देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस पथ्थर को हटा दिया तो मेरी मुराद पुरी हो गई और मुझे जिस चीज़ का इन्तिज़ार था वोह मिल गई । जब राहिब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह बात सुनी तो इतना रोए कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी के बाल तर हो गए । फिर फ़रमाया : सब ता'रीफ़ ख़ुदाए तआ़ला के लिये है कि मैं उस के यहां भूला बिसरा नहीं हूं बल्कि मेरा ज़िक्र उस की किताबों में मौजूद है ।(1)

अल्लाह तआ़ला के मह़बूब बन्दों को मा'लूम होता है कि ज़मीन में कहां क्या चीज़ है और येह दर ह़क़ीक़त इल्मे ग़ैब है जो सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े व तुफ़ैल में उन्हें ह़ासिल होता है ।

۱...(شواہدالنبوۃ، رکن سادس دربیان شواھدودلایلی...الخ، ص۲۱۲)

﴾ मश्क़ ﴿

(1) **सुवाल :** आक़ा और ग़ुलाम के झगड़े का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस ख़ुश उस्लूबी से फ़ैसला फ़रमाया नीज़ दो औ़रतों में ह़क़ीक़ी मां का फ़ैसला किस त़रह़ हुवा.....?

(2) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन बन्दों में सतरह ऊंट किस त़रह़ उन के ह़िस्सों के मुत़ाबिक़ तक़्सीम फ़रमा दिया.....?

(3) **सुवाल :** आठ दीनारों पर कितने आदमी लड़ रहे थे नीज़ उन का फ़ैसला किस त़रह़ मुमकिन हुवा.....?

(4) **सुवाल :** "येह तेरा शौहर नहीं, बल्कि बेटा है" इस ह़िकायत से ह़ज़रते अ़ली की किन किन करामात का ज़ुहूर हो रहा है नीज़ अहले सुन्नत के किन अ़क़ाइद की मुअय्यिद है.....?

(5) **सुवाल :** राहिब के क़बूले इस्लाम का वाक़िआ़ बयान कीजिये नीज़ दरियाए फ़ुरात किस सबब से तीन फ़ुट पीछे हट गया....?

आप की ख़िलाफ़त

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के बा'द दूसरे रोज़ हज़रते त़लह़ा और हज़रते ज़ुबैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के इ़लावा मदीनए त़य्यिबा के सब रहने वालों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ पर बैअ़त की । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अमीरुल मोमिनीन हो गए । हज़रते त़लह़ा, हज़रते ज़ुबैर और हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने बसरा पहुंच कर क़ातिलीने हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से क़िसास लेने का मुत़ालबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से शुरूअ़ किया और बहुत से लोग इस मुत़ालबे में शरीक हो गए। जब हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को इस बात की इत्तिलाअ़ मिली तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी इ़राक़ तशरीफ़ ले गए। बसरा रास्ते में ही पड़ता था। यहां जंगे जमल हुई जिस में हज़रते त़लह़ा और हज़रते ज़ुबैर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) शहीद हो गए । इन के इ़लावा और भी दोनों त़रफ़ के हज़ारों आदमी काम आए। बसरा में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पन्दरह रोज़ क़ियाम फ़रमाया और फिर कूफ़ा तशरीफ़ ले गए।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के कूफ़ा पहुंचने के बा'द हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ख़ुरूज किया उन के साथ शामी लश्कर था। कूफ़ा से हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم भी बढ़े और सिफ़्फ़ीन के मक़ाम पर कई रोज़ तक लड़ाई का सिलसिला जारी रहा। फिर येह जंग एक मुआ़हदे पर ख़त्म हुई ।

तरफ़ैन के लोग अपने अपने मक़ाम को वापस हो गए। हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कूफ़ा वापस चले आए।

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो एक जमाअ़त जिस को "ख़ारिजी" कहा जाता है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का साथ छोड़ कर अलग हो गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त से इन्कार कर के "لَا حُکْمَ اِلَّا لِلّٰہ" का ना'रा बुलन्द किया यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जंग करने के लिये लश्कर तय्यार कर लिया। हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने उन का सर कुचलने के लिये हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की सरकर्दगी में एक लश्कर रवाना फ़रमाया। **तरफ़ैन में जंग हुई ख़ारिजी शिकस्त खा कर कुछ तो अ़ली मुर्तज़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **के लश्कर में शामिल हो गए और कुछ भाग कर नहरवान चले गए और वहां पहुंच कर लूट मार शुरूअ़ कर दी। आख़िर शेरे ख़ुदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने वहां जा कर उन को तहे तैग़ कर दिया।**[1]

ख़ारिजियों की साज़िश

तीन ख़ारिजी या'नी अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जिम, बर्क बिन अ़ब्दुल्लाह और अ़म्र बिन बुकैर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में जम्अ़ हुए और

---

١ ... (تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی مبایعۃ علی، ص ١٣٨) (الطبقات الکبری، ذکر علی و وسعاویۃ وتحکیم الحکمین، ٣/٢٣)

आपस में येह फ़ैसला किया कि हम तीनों आदमी तीन अफ़राद ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब, मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान और अ़म्र बिन अल आ़स को क़त्ल कर देंगे। चुनान्चे, इब्ने मुल्जिम ने ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को, बर्क ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और अ़म्र बिन बुकैर ने ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को एक ही मुअ़य्यन तारीख़ पर क़त्ल करने का अ़ह्द किया और तीनों बद बख़्त उन शहरों को रवाना हो गए जहां जहां उन को अपने अपने नामज़द कर्दा शख़्स को क़त्ल करना था। उन में सब से पहले इब्ने मुल्जिम कूफ़ा पहुंचा वहां ख़ारिजियों से राबित़ा क़ाइम कर के उन पर अपना इरादा ज़ाहिर किया कि वोह 17 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी की रात में ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को शहीद कर देगा।

इमाम सुद्दी फ़रमाते हैं कि इब्ने मुल्जिम एक ख़ारिजिया औ़रत पर आ़शिक़ हो गया था जिस का नाम क़ित़ाम था उस ने अपना महर तीन हज़ार दिरहम, एक ग़ुलाम, एक बांदी और ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का क़त्ल रखा था।

फ़रज़दक़ शाइर ने अपने अश्आ़र में इस की त़रफ़ इशारा किया है :

فَلَمْ اَرَمَهراً سَاقَه ذُوْسَمَاحَةٍ   كَمَهرِ قِطَامٍ بَيْنَا غَيْرِ مُعْجَم

ثَلٰثَةُ اٰلافٍ وَّ عَبْدٌ وَّ قَيْنَةٌ   وَضَرْبُ عَلِيٍّ بِالْحُسَامِ الْمُصَمَّم

فَلَا مَهْرَ اَغْلٰى مِنْ عَلِيٍّ وَّاِنْ غَلَا   وَ لَا قَتْلَ اِلَّا قَتْلَ اِبْنِ مُلْجِم

या'नी मैं ने किसी सख़ावत करने वाले को ऐसा महर देते नहीं देखा जैसा महर कि क़िताम का मुक़र्रर हुवा। तीन हज़ार दिरहम एक गुलाम, एक बांदी और हज़रते अली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का क़त्ल तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के क़त्ल से बढ़ कर कोई महर नहीं हो सका। और इब्ने मुल्जिम ने जो आप को धोके से क़त्ल किया तो इस से बढ़ कर कोई क़त्ल नहीं हो सकता।[1]

आप की शहादत

हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने 17 **रमज़ानुल मुबारक** 40 **हिजरी** को अलस्सुब्ह बेदार हो कर अपने बड़े साहिबज़ादे हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : आज रात ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई तो मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप की उम्मत ने मेरे साथ कज्रवी इख़्तियार की है और सख़्त निज़ाअ़ बरपा कर दिया है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ज़ालिमों के लिये दुआ़ करो। तो मैं ने इस तरह दुआ़ की **या इलाहल आ़लमीन** ! तू मुझे इन लोगों से बेहतर लोगों में पहुंचा दे और मेरी जगह उन लोगों पर ऐसा शख़्स मुसल्लत़ कर दे जो बुरा हो। अभी आप येह बयान ही फ़रमा रहे थे कि इब्ने नबाह मुअज़्ज़िन ने

١... (المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب سبب شهادة على، الحديث: ٤٧٤٤، ١٢١/٤)

आवाज़ दी "اَلصَّلٰوۃ اَلصَّلٰوۃ" हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم नमाज़ पढ़ाने के लिये घर से चले। रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दे दे कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जगाते जाते थे कि इतने में इब्ने मुल्जिम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने आ गया और उस ने अचानक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर तल्वार का भरपूर वार किया और वार इतना सख़्त था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पेशानी कनपट्टी तक कट गई और तल्वार दिमाग़ पर जा कर ठहरी। **शमशीर लगते ही आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने फ़रमाया "فُزْتُ بِرَبِّ الْکَعْبَۃ" या'नी रब्बे का'बा की क़सम ! मैं कामयाब हो गया।** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ख़्मी होते ही चारों त़रफ़ से लोग दौड़ पड़े और क़ातिल को पकड़ लिया।(1)

आप की वसिय्यत

हज़रते अ़क़्बा बिन अबी सहबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि जब बद बख़्त इब्ने मुल्जिम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर तल्वार का वार किया या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ख़्मी हो गए तो हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते हुए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को तसल्ली दी और फ़रमाया : **बेटे ! मेरी चार बातों के साथ चार बातें याद रखना।** हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : वोह

---

1 ...(تاریخ مدینۃ دمشق، علی بن ابی طالب، ۵۵۹/۴۲)

क्या हैं ? फ़रमाइये। हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : **अव्वल** सब से बड़ी तवंगरी अ़क्ल की तवानाई है। **दूसरे** बे वुक़ूफ़ी से ज़ियादा कोई मुफ़्लिसी और तंगदस्ती नहीं। **तीसरे** ग़ुरूर घमन्ड सब से सख़्त वह़शत है। **चौथे** सब से अ़ज़ीम ख़ुल्क़ करम है।

हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि दूसरी चार बातें भी बयान फ़रमाएं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया कि **अव्वल** अह़मक़ की मह़ब्बत से बचो, इस लिये कि नफ़्अ़ पहुंचाने का इरादा करता है लेकिन नुक़्सान पहुंच जाता है। **दूसरे** झूटे से परहेज़ करो, इस लिये कि वोह दूर को नज़्दीक और नज़्दीक को दूर कर देता है। **तीसरे** बख़ील से दूर रहो, इस लिये कि वोह तुम से उन चीज़ों को छुड़ा देगा जिन की तुम को ह़ाजत है। **चौथे** फ़ाजिर से कनाराकश रहो, इस लिये कि वोह तुम्हें थोड़ी सी चीज़ के बदले में फ़रोख़्त कर डालेगा।[1]

विसाले पुर मलाल

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم सख़्त ज़ख़्मी होने के बा वुजूद जुमुआ़ व हफ़्ता तक बक़ैदे ह़यात रहे लेकिन इतवार की रात में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रूह़ बारगाहे क़ुद्स में परवाज़ कर गई।

---

۱ . . . (تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی نبذ من اخبار علی، ص ۱۴۵)

और येह भी रिवायत है कि 19 रमज़ानुल मुबारक जुमुआ की शब में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ख़्मी हुए और 21 रमज़ान शबे यक शम्बा 40 हिजरी में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात हुई ।

''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ''

......चार बरस आठ माह नौ दिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उमूरे ख़िलाफ़त को अन्जाम दिया और तिरसठ साल की उ़म्र में आप का विसाल हुवा । ह़ज़रते इमामे ह़सन, ह़ज़रते इमामे हुसैन और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ुस्ल दिया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई ।[1]

क़ातिल का अन्जाम

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दफ़्न से फ़ारिग़ होने के बा'द अमीरुल मोमिनीन के क़ातिल अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जिम को ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़त्ल कर दिया फिर उस के हाथ पैर काट कर एक टोकरे में डाल दिया और उस में आग लगा दी जिस से उस

---

١ . . . (الرياض النضرة، الفصل العاشر، ذكر مقتله، ٢/٢٣٧، جزء٣)(الاكمال فی اسماء الرجال، حرف العين فصل الصحابة، ص ٦٠٢)(اسدالغابة، علی بن ابی طالب، ٤/١٣١)

की लाश जल कर राख हो गई ।[1]

आप का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم को रात के वक़्त दफ़्न किया गया और एक मस्लहत से आप का मज़ार लोगों पर ज़ाहिर नहीं किया गया इस लिये वोह कहां है ? इस में अक़्वाल मुख़्तलिफ़ हैं ।

अबू बक्र बिन अ़याश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की क़ब्र शरीफ़ को इस लिये नहीं ज़ाहिर किया गया था कि ख़ारिजी बद बख़्त कहीं उस की भी बे हुरमती न करें ।

......शरीक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रज़न्द हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के जिस्मे मुबारक को दारुल इमारत कूफ़ा से मदीने की त़रफ़ मुन्तक़िल कर दिया था ।

.....मुबरद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुह़म्मद बिन ह़बीब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ह़वाले से लिखा है कि एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में मुन्तक़िल की जाने वाली पहली ना'श हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم की थी ।

---

١ ...(تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی مبایعت علی، ص ١٣٩)(الطبقات الکبریٰ، ذکر عبدالرحمن بن ملجم، ٣/٢٩)

......और इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि जब ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم शहीद हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे मुबारक को मदीनए मुनव्वरा ले जाने लगे ताकि वहां रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए मुबारक में दफ़्न करें । **ना'श एक ऊंट पर रखी हुई थी रात का वक़्त था वोह ऊंट रास्ते में किसी त़रफ़ को भाग गया और उस का पता नहीं चला इसी लिये अह्ले इराक़ कहते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बादलों में तशरीफ़ फ़रमा हैं ।**

बा'ज़ लोग कहते हैं कि तलाश व जुस्तजू के बा'द वोह ऊंट सर ज़मीने तय में मिल गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे मुबारक को उसी सरज़मीन में दफ़्न कर दिया गया ।[1]

आप के अक़्वाले ज़र्रीं

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم के बहुत से अक़्वाल हैं जो आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल हैं इन में से चन्द आप के सामने पेश किये जाते हैं ।

۱...(تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی مبایعة علی، ص ۱۳۹)

इल्म की अहम्मिय्यत

1......इल्म माल से बेहतर है। इल्म तेरी हिफ़ाज़त करता है और तू माल की, इल्म हाकिम है और माल महकूम। माल ख़र्च करने से घटता है और इल्म ख़र्च करने से बढ़ता है।(1)

2......आ़लिम वोही शख़्स है जो इल्म पर अ़मल करे और अपने अ़मल को इल्म के मुताबिक़ बनाए।(2)

3......हलाल की ख़्वाहिश उसी शख़्स में पैदा होती है जो हराम कमाई छोड़ने की मुकम्मल कोशिश करता है।

4......तक़्दीर बहुत गहरा समुन्दर है इस में ग़ोता न लगाओ।(3)

5......ख़ुश अख़्लाक़ी बेहतरीन दोस्त है और अदब बेहतरीन मीरास है।(4)

6......जाहिलों की दोस्ती से बचो कि बहुत से अ़क़्लमन्दों को इन्हों ने तबाह कर दिया है।

۱...(کنزالعمال، کتاب العلم، باب فی فضله وتحریض علیه، الحدیث: ۲۹۳۷۷، ۵/۱۱۲، الجزء ۱۰)
۲...(تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی اخباره وقضایا، ص ۱۴۳)
۳...(المرجع السابق)
۴...(المرجع السابق)

7......अपना राज़ किसी पर ज़ाहिर न करो कि हर ख़ैर ख़्वाह के लिये कोई ख़ैर ख़्वाह होता है।(1)

8......इन्साफ़ करने वाले को चाहिये कि जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरों के लिये भी पसन्द करे।(2)

وصلی اللّٰہ تعالٰی علی نبی الکریم وعلی الہٖ واصحابہ وخلفائہ اجمعین برحمتک یاارحم الراحمین

मन्क़बत दर शाने हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा

हम और तरफ़ जाते हैं तू और तरफ़ जा — ऐ हुब्बे वत़न साथ न यूं सूए नजफ़ जा

ऐ ना ख़लफ़ उठ जानिबे ता 'ज़ीमे ख़लफ़ — जीलां के शरफ़ ह़ज़रते मौला के ख़लफ़ हैं

जा सरकार से पाएगा शरफ़ बहरे शरफ़ जा — फंसता है वबालों में अ़बस अख़्तर त़ाबेअ़

यूं छोड़ के गौहर को न तू बहरे ख़ज़फ़ जा — तफ़्ज़ील का जोया न हो मौला की विला में

अरबाबे जमाअ़त की न तू छोड़ के सफ़ जा — मौला की इमामत से मह़ब्बत है तो ऐ ग़ाफ़िल

हां तीरे दुआ़ बहरे ख़ुदा सूए हदफ़ जा — हो जल्वा फ़ज़ा साहि़बे क़ौसैन का नाइब

कह दे कोई घेरा है बलाओं ने ह़सन को
ऐ शेरे ख़ुदा बहरे मदद तेग़ ब कफ़ जा

---

۱ ... (تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی اخبارہ وقضایا، ص۱۴۵)

۲ ... (کنزالعمال، کتاب العلم، باب فی فضلہ وتحریض علیہ، الحدیث: ۲۵۵۸۶، ۵/۷۷، حصہ ۹)

मश्क़

(1) **सुवाल :** हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़लीफ़ा मुक़र्रर होने का वाक़िआ़ मुफ़स्सल बयान कीजिये....?

(2) **सुवाल :** ख़ारिजी कौन लोग थे नीज़ उन्हों ने क्या साज़िश तय्यार की.....?

(3) **सुवाल :** इब्ने मुल्जिम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क्यूं शहीद किया नीज़ उस बद बख़्त का अन्जाम क्या हुवा....?

(4) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत किस सिन में हुई नीज़ वाक़िअ़ए शहादत मुफ़स्सल ज़िक्र कीजिये....?

(5) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वक़्ते अख़ीर हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क्या वसिय्यत फ़रमाई....?

(6) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितना अ़र्सा मस्नदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन रहे नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार कहां है.....?

(7) **सुवाल :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कोई पांच अक़्वाले ज़र्रीं बयान फ़रमाइये....?

तन्ज़ीमुल मदारिस के सालाना इम्तिहान में "ख़ुलफ़ाए राशिदीन" की सीरत के ह़वाले से आने वाले सुवालात

• • • • • • • •

सालाना इम्तिहान "**अश्शहादतुस्सानिवियतुल आ़म्मह**"

(बराए त़ालिबात)

"बाबत साल 1432 हिजरी/2011"

चौथा पर्चा....अ़क़ाइद व ख़ुलफ़ाए राशिदीन

★ **सुवाल :** दो आयाते कुरआनिया और दो अह़ादीसे नबविय्या की रौशनी में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल क़लमबन्द करें....?

★ **सुवाल :** दो आयाते कुरआनिया और दो अह़ादीसे नबविय्या की रौशनी में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल क़लमबन्द करें....?

★ **सुवाल :** ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत पर एक मज़्मून लिखें जिस में आप के इस्लाम लाने, आप की हिजरत, आप की शुजाअ़त और आप की इल्म जैसी खुसूसिय्यात को उजागर किया गया हो.....?

★ **सुवाल :** दर्जे ज़ैल सुवालात के जवाबात तह़रीर करें.....?

☆ ख़लीफ़ए दुवुम का इस्मे गिरामी, कुन्यत व लक़ब क्या था....?

☆ ख़लीफ़ए दुवुम के वालिदे गिरामी और वालिदा का नाम क्या है और आप की वालिदा किन की बेटी थीं.....?

☆ ख़लीफ़ए दुवुम वाक़िअ़ए फ़ील के कितने साल बा'द पैदा हुए और कौन सी पुश्त में आप का नसब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जा कर मिलता है....?

☆ ख़लीफ़ए दुवुम किस उ़म्र में इस्लाम लाए और उस वक़्त कितनी औ़रतें और कितने मर्द मुसलमान हो चुके थे......?

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

सालाना इम्तिह़ान "**अश्शहादतुस्सानिवियतुल आ़म्मह**"

(बराए त़ालिबात)

"बाबत साल 1431 हिजरी/2010"

चौथा पर्चा....अ़क़ाइद व ख़ुलफ़ाए राशिदीन

★ **सुवाल :** ह़ज़राते ख़ुलफ़ाए अरबआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सिलसिलए नसब कहां कहां जा कर मिलता है.....?

★ **सुवाल :** ह़ज़राते ख़ुलफ़ाए अरबआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم में से हर एक का इस्मे गिरामी, कुन्यत, लक़ब और उ़म्र तह़रीर करें....?

★ **सुवाल :** कोई से पांच अज्ज़ा का जवाब दें....?

☆ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शुजाअ़त बयान करें....?

☆ ख़लीफ़ए अव्वल का हुल्यए मुबारक ज़ीनते क़िरत़ास कीजिये....?

☆ सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ किसी गवर्नर की तक़र्रुरी किस अन्दाज़ से फ़रमाते....?

☆ ख़लीफ़ए दुवुम ने अपने क़बूले इस्लाम का इज़्हार कैसे फ़रमाया....?

★ **सुवाल :** सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में होने वाली फ़ुतूहा़त में से किसी तीन का मुख़्तसर ज़िक्र कीजिये....?

★ **सुवाल :** ख़लीफ़ए सालिस के जंगे बद्र और बैअ़ते रिज़्वान में शरीक न होने की वज्ह क्या थी....?

★ **सुवाल :** सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जंगे सिफ़्फ़ीन में ज़ाहिर होने वाली करामत क्या थी....?

★ **सुवाल :** ख़लीफ़ए चहारुम ने ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क्या वसिय्यत फ़रमाई थी....?

• • • • • • • •

सालाना इम्तिह़ान **"अश्शहादतुस्सानिवियतुल ख़ास्सह/एफ़ ए"**

(बराए त़लबा)

"बाबत साल 1430 हिजरी/2009"

छटा पर्चा.....सीरत व तारीख़

★ **सुवाल :** दर्जे ज़ैल के मुख़्तसर जवाबात तह़रीर करें....?

☆ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल होने वाली कोई दो आयातें मअ़ तर्जमा लिखें....?

☆ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत में वारिद होने वाली कोई दो अह़ादीस लिखें....?

☆ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का सबब लिखें....?

☆ सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिजरत का वाक़िआ़ तफ़्सीलन लिखें....?

★ **सुवाल :** दर्जे ज़ैल के मुख़्तसर जवाबात तह़रीर करें....?

☆ सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कोई दो करामात लिखें....?

☆ अव्वलिय्याते ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तफ़्सीलन लिखें....?

☆ सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत में कोई दो ह़दीसें और आप के कोई दो अहम फ़ैसले लिखें....?

☆ जुन्नूरैन कौन से सह़ाबी को और किस वज्ह से कहते हैं....?

★ **सुवाल :** दर्जे ज़ैल में से किसी एक पर तफ़्सीली नोट लिखें....?

☆ मुसैलमा कज़्ज़ाब से जंग

☆ जमए़ कुरआने पाक

★ **सुवाल :** मुवाफ़क़ाते ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिपुर्दे क़लम करें....?

• • • • • • • •

सालाना इम्तिह़ान "**अश्शहादतुस्सानिवियतुल ख़ास्सह/एफ़ ए**"

(बराए त़लबा)

"बाबत साल 1429 हिजरी/2008"

छटा पर्चा.....सीरत व तारीख़

★ **सुवाल :** आप दलाइल से साबित करें कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ'लमुस्सह़ाबा और अश्जउ़स्सह़ाबा थे....?

☆ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदह़ में कम अज़ कम

चार आयाते करीमा मअ़ तर्जमा नक़्ल करें....?

★ **सुवाल :** दर्जे ज़ैल सुवालात के जवाबात क़लमबन्द करें....?

☆ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कब इस्लाम लाए नीज़ उस वक़्त आप की उ़म्र क्या थी....?

☆ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब इस्लाम लाए उस वक़्त कितने मर्द और कितनी औ़रतें मुसलमान हो चुके थे....?

☆ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का कोई एक एक क़ौल नक़्ल करें....?

☆ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में फ़त्ह़ होने वाले शहरों में किसी दो ऐसे शहरों का नाम लिखें जिन में से एक बिग़ैर जंग के फ़त्ह़ हुवा हो और एक जंग से....?

☆ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कितनी अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करने वाली किसी दो अहम शख़्सिय्यतों का ज़िक्र करें....?

☆ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दस अव्वलिय्यात क़लमबन्द करें....?

★ **सुवाल :** ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कब पैदा हुए, किस की दा'वत पर इस्लाम क़बूल किया, कितनी मरतबा हिजरत फ़रमाई और किस किस त़रफ़ हिजरत फ़रमाई....?

☆ ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की छे अव्वलिय्यात क़लमबन्द करें....?

☆ हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पांच अक़्वाले ज़र्रीं और दो अहम फ़ैसले सिपुर्दे क़लम करें....?

• • • • • • • •

सालाना इम्तिहान **"अश्शहादतुस्सानिवियतुल ख़ास्सह/एफ़ ए"**
(बराए त़लबा)

"बाबत साल 1428 हिजरी/2007"

छटा पर्चा....सीरत व तारीख़

★ **सुवाल :** हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शुजाअ़त व बहादुरी और इन्फ़ाक़े माल के बारे में तफ़्सीली नोट लिखें....?

☆ बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वाक़िआ़ तफ़्सीलन तह़रीर करें....?

★ **सुवाल :** दस मुवाफ़क़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तह़रीर करें....?

☆ हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दस पोशीदा ख़स्लतें और वाक़िअ़ए शहादत तह़रीर करें....?

★ **सुवाल :** अह़ादीस की रौशनी में हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत बयान करें....?

☆ हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बारे में तह़रीर करें....?

• • • • • • • •

सालाना इम्तिहान "**अश्शहादतुस्सानिवियतुल ख़ास्सह/एफ़ ए**"

(बराए त़लबा)

"बाबत साल 1427 हिजरी/2006"

छटा पर्चा....सीरत व तारीख़

★ **सुवाल :** ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इस्मे गिरामी, कुन्यत, लक़ब और मुद्दते ख़िलाफ़त तह़रीर करें....?

☆ ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किस उ़म्र में इस्लाम क़बूल फ़रमाया नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़ल्मी मक़ाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के नज़्दीक क्या था....?

★ **सुवाल :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ तफ़्सील से लिखें नीज़ आप को "**फ़ारूक़**" का ख़िताब किस त़रह़ मिला....?

☆ ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में इस्लामी फ़ुतूह़ात कहां तक हुईं ? नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत का वाक़िआ़, तदफ़ीन और उ़म्र मुबारक तह़रीर करें....?

★ **सुवाल :** ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत किस त़रह़ हुई ? तफ़्सील से लिखें....?

☆ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ज़ीलत में वारिद अह़ादीसे मुबारका तह़रीर करें नीज़ आप की शहादत किस त़रह़ हुई ? आप का क़ातिल कौन था ? और आप की तदफ़ीन कहां हुई....?

ماخذومراجع

۱	القران الكريم	كلام الٰہی	مکتبۃ المدینہ کراچی
۲	الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی * متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱٤۰۳ھ۔
۳	التفسير النسفي	امام عبداللہ بن احمد نسفی * متوفی ۷۱۰ھ	دار المعرفة بيروت ١٤٢١ ھ۔
٤	التفسير الكبير	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی * متوفی ۶۰۶ھ	داراحياء التراث، بيروت ١٤٢٠ھ۔
۵	تفسير البغوي	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی * متوفی ۵۱۶ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٤ھ۔
٦	تفسير الخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی * متوفی ۷۴۱ھ	اکوڑہ خٹک نوشہرہ
۷	اللباب في علوم الكتاب	ابو حفص عمر بن علی حنبلی * متوفی ۸۸۰ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٩ھ۔
۸	تفسير البيضاوي	امام ناصر الدین عبداللہ بن عمر بیضاوی * متوفی ۶۸۵ھ	دار الفكر بيروت ١٤٢٠ھ۔
۹	روح البيان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی * متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
۱۰	خزائن العرفان	مفتی نعیم الدین مرادآبادی * متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
۱۱	نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی * متوفی ۱۳۹۱ھ	مرکز الاولیاء لاہور
۱۲	صحيح البخاري	امام ابو عبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری * متوفی ۲۵۶ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٩ھ۔
۱۳	صحيح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری * متوفی ۲۶۱ھ	دارالمغنى عرب شريف ١٤١٩ھ۔
۱٤	سنن أبي داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی * متوفی ۲۷۵ھ	دار احياء التراث بيروت ١٤٢١ ھ۔
۱۵	سنن الترمذي	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی * متوفی ۲۷۹ھ	دار الفكر بيروت ١٤١٤ھ۔
۱٦	سنن ابن ماجة	امام ابو عبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ * متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفة بيروت ١٤٢٠ھ۔
۱۷	مؤطا امام مالك	امام مالک بن انس اصبحی * متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفة بيروت ١٤٢٠ھ۔
۱۸	المسند للامام أحمد	امام احمد بن محمد حنبل * متوفی ۲۴۱ھ	دار الفكر بيروت ١٤١٤ھ۔
۱۹	المصنف لعبد الرزاق	امام ابو بکر عبدالرزاق بن ہمام صنعانی * متوفی ۲۱۱ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢١ھ۔
۲۰	المصنف لابن شيبة	حافظ عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ * متوفی ۲۳۵ھ	دار الفكر بيروت ١٤١٤ھ۔
۲۱	صحيح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان * متوفی ۷۳۹ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٧ھ۔
۲۲	مسند البزار	امام ابو بکر احمد عمرو بن عبدالخالق بزار * متوفی ۲۹۲ھ	مكتبة العلوم و الحكم ١٤٢٤ھ۔
۲۳	السنن الكبري	امام احمد بن حسین بن علی بیہقی * متوفی ۴۵۸ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢٤ھ۔

٢٤	السنن الكبري	امام احمد بن شعیب نسائی * متوفی ۳۰۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١١هـ
٢٥	مشكاة المصابيح	علامہ ولی الدین محمد بن عبد اللہ خطیب * متوفی ۷۴۲ھ	دار الفكر بيروت ١٤٢١هـ
٢٦	كنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین برہان پوری * متوفی ۹۷۵ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٩هـ
٢٧	جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی * متوفی ۹۱۱ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢١هـ
٢٨	جامع الاصول	امام ابو السعادات مبارک بن محمد ابن اثیر * متوفی ۶۰۶ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٨هـ
٢٩	المستدرك	امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری * متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفة بيروت ١٤١٨هـ
٣٠	المعجم الكبير	حافظ ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی * متوفی ۳۶۰ھ	دار احياء التراث بيروت ١٤٢٢هـ
٣١	المعجم الأوسط	حافظ ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی * متوفی ۳۶۰ھ	دار احياء التراث بيروت ١٤٢٢هـ
٣٢	ارشاد الساري	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی * متوفی ۹۲۳ھ	دار الفكر بيروت ١٤٢١هـ
٣٣	شرح نووي علي مسلم	محیی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی * متوفی ۶۷۶ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٠١هـ
٣٤	فيض القدير	امام محمد عبد الرؤف مناوی * متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢٢هـ
٣٥	اتحاف الخيرة	امام احمد بن ابو بکر بوصیری * متوفی ۸۴۰ھ	مكتبة الرشد
٣٦	فتح الباري	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی * متوفی ۸۵۲ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢٠هـ
٣٧	اشعة للمعات	شیخ محمد عبد الحق محدث دہلوی * متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ ۱۴۳۲ھ
٣٨	مدارج النبوة	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی * متوفی ۱۰۵۲ھ	نوریہ رضویہ لاہور ۱۹۹۷
٣٩	شواهد النبوة	مولانا عبد الرحمن جامی * متوفی ۸۹۸ھ	استنبول ترکی
٤٠	المواهب اللدنيا	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی * متوفی ۹۲۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٦هـ
٤١	حجة الله العالمين	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی * متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند
٤٢	السيرة النبوية	ابو محمد عبد الملک بن ہشام * متوفی ۲۱۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٣٩٧هـ
٤٣	السيرة الحلبية	علامہ ابو الفرج علی بن ابراہیم حلبی شافعی * متوفی ۱۰۴۴ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢٢هـ
٤٤	تاريخ طبري	امام ابو جعفر بن جریر طبری * متوفی ۳۱۰ھ	دار ابن كثير ١٤٢٨هـ
٤٥	حلية الاولياء	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی * متوفی ۴۳۰ھ	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٩هـ
٤٦	تاريخ مدينة دمشق	حافظ ابو القاسم علی بن حسن ابن عساکر * متوفی ۵۷۱ھ	دار الفكر بيروت ١٤١٥هـ
٤٧	تاريخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی * متوفی ۹۱۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
٤٨	الرياض النضرة	ابو العباس احمد بن عبد اللہ طبری شافعی * متوفی ۶۹۴ھ	دار الكتب العلمية بيروت

٤٩	سير اعلاء النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی * متوفی ۷۴۸ھ	دارالفكر بيروت ١٤١٧هـ
٥٠	طبقات الكبري	امام محمد بن سعد الھاشمی البصری * متوفی ۲۳۰ھ	دار الكتب العلمية بيروت١٩٩٧ء
٥١	البداية و النهاية	عمادالدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی * متوفی ۷۷۴	دارالفكر بيروت١٤١٨هـ
٥٢	معرفة الصحابة	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ شافعی * متوفی ۴۳۰ھ	دار الكتب العلمية بيروت
٥٣	الكامل في التاريخ	ابو الحسن علی بن محمد بن اثیر جزری * متوفی ۶۳۰ھ	عباس أحمد الباز ١٤١٨هـ
٥٤	الاصابة	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی * متوفی ۸۵۲ھ	دار الكتب العلمية بيروت١٤١٥هـ
٥٥	اسد الغابة	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی * متوفی ۸۵۲ھ	دار الكتب العلمية بيروت١٤١٧هـ
٥٦	الاستيعاب	ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد قرطبی * متوفی ۴۶۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت١٤٢٢هـ
٥٧	الاكمال مع مشكاة	علامہ ولی الدین محمد بن عبد اللہ خطیب * متوفی ۷۴۲ھ	باب المدینہ کراچی
٥٨	الصواعق المحرقة	حافظ احمد بن حجر مکی ہیتمی * متوفی ۹۷۴ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
٥٩	ازالة الخفاء	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی * متوفی ۱۱۷۶ھ	باب المدینہ کراچی
٦٠	تحفة اثنا عشرية	شاہ عبد العزیز محدث دہلوی * متوفی ۱۲۳۹ھ	دہلی
٦١	الفتاوى الخانية	علامہ عالم بن علاء دہلوی * متوفی ۷۸۶ھ	باب المدینہ کراچی
٦٢	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی * متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفة بيروت ١٤٢٠هـ
٦٣	الفتاوى الرضوية	امام الشاہ احمد رضا خان * متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
٦٤	فتاوى فيض رسول	فقیہ ملت مفتی جلال الدین امجدی * متوفی ۱۴۲۲ھ	مرکز الاولیاء لاہور
٦٥	عيون الحكايات	امام عبد الرحمن بن علی بن جوزی * متوفی ۵۹۷ھ	دار الكتب العلمية بيروت
٦٦	سوانح كربلا	مفتی نعیم الدین مراد آبادی * متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
٦٧	ذوق نعت	شہنشاہِ سخن مولانا حسن رضا خان * متوفی ۱۳۲۶ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند
٦٨	عاشق اكبر	ابو بلال مولانا الیاس عطار قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ کراچی

★ हर सहाबिये नबी .... जन्नती जन्नती
★ चार याराने नबी .... जन्नती जन्नती
★ सिद्दीक़ो उ़मर .... जन्नती जन्नती
★ उ़स्माने ग़नी .... जन्नती जन्नती
★ मौला अ़ली .... जन्नती जन्नती

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा 245 कुतुबो रसाइल

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत﴿

उर्दू कुतुब :

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : **40**)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم) (कुल सफ़ह़ात : **199**)

03....फ़ज़ाइले दुआ़ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : **326**)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : **55**)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : **125**)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार हिस्से) (कुल सफ़ह़ात : **561**)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : **57**)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : **60**)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : **41**)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : **100**)

11....हुक़ूक़ुल इबादत कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : **47**)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : **63**)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : **31**)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : **74**)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : **46**)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़ह़ात : **1185**)

17....ह़दाइके़ बख़्शिश (कुल सफ़ह़ात : **446**)

18....बयाजे़ पाक हुज्जतुल इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : **37**)

अ़रबी कुतुब :

19, **20**, **21**, **22**, **23**.....جَدُّ الْمُمْتَارِ عَلٰی رَدِّ الْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس)
(कुल सफ़ह़ात : **570**, **672**, **713**, **650**, **483**)

24....(اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی) (कुल सफ़ह़ात : **458**)

25.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : **74**)

26..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : **62**)

27..... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़ह़ात : **93**)

28.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (कुल सफ़ह़ात : **46**)

29.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़ह़ात : **77**)

30.....اَجْلَی الْاِعْلَام (कुल सफ़ह़ात : **70**)

31.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़ह़ात : **60**)

﴾शो'बए तराजिमे कुतुब﴿

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़ह़ात : **896**)

02.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) दूसरी जिल्द (कुल सफ़ह़ात : **625**)

03.....मदनी आक़ा के रौशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِی حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاه) (कुल सफ़ह़ात : **112**)

04.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....?
(تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़ह़ात : **112**)

05.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़ह़ात : 142)

06.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّة) (कुल सफ़ह़ात : 54)

07.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़ह़ात : 743)

08.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ الرَّحْمَة की वसिय्यतें (وَصَايَااِمَام اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़ह़ात : 46)

09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़ह़ात : 853)

10.....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़ह़ात : 98)

11.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़ह़ात : 144)

12.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْد وَقَصْرُ الْاَمَل) (कुल सफ़ह़ात : 85)

13.....राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़ह़ात : 102)

14.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जिम ह़िस्सा अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 412)

15.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जिम, ह़िस्सा दुवुम)(कुल सफ़ह़ात : 413)

16.....इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़ह़ात : 641)

17....ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़ह़ात : 649)

18....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़ह़ात : 122)

19....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُ لِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़ह़ात : 122)

20....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़ह़ात : 102)

21....आंसूओं का दरिया (بَحْرُ الدُّمُوْع) (कुल सफ़ह़ात : 300)

22....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن) (कुल सफ़ह़ात : 63)

शो'बए दर्सी कुतुब

12....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (कुल सफ़हात : 175)

13....نحو میر مع حاشية نحو منير (कुल सफ़हात : 203)

14....تلخيص اصول الشاشی (कुल सफ़हात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़हात : 288)

16....نصاب اصولِ حديث (कुल सफ़हात : 95)

17....نصاب التجويد (कुल सफ़हात : 79)

18....المحادثة العربية (कुल सफ़हात : 101)

19....تعريفاتِ نحوية (कुल सफ़हात : 45)

20....خاصيات ابواب (कुल सफ़हात : 141)

21....شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़हात : 343)

23....نصاب المنطق (कुल सफ़हात : 168)

24....انوار الحديث (कुल सफ़हात : 466)

25....نصاب الادب (कुल सफ़हात : 184)

26....تفسير الجلالين مع حاشية انوار الحرمين (कुल सफ़हात : 364)

27....ख़ुलफ़ाए राशिदीन (कुल सफ़हात : 341)

28....قصیدہ بردہ مع شرح خرپوتی (कुल सफ़हात : 317)

29....फ़ैज़ुल अदब (मुकम्मल हिस्से अव्वल, दुवुम) (कुल सफ़हात : 228)

30....काफ़िया मअ़ शर्हे नाजिया (कुल सफ़हात : 252)

31....अल हक़्क़ुल मुबीन (कुल सफ़हात : 128)

शो'बए तख़रीज

01....सहाबए किराम का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : अव्वल ता शशुम, कुल सफ़हात : 1247)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हि़स्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़्ह़ात : 1182)
04....उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्ह़ात : 59)
05....अ़जाइबुल कु़रआन मअ़ ग़राइबुल कु़रआन(कुल सफ़्ह़ात : 422)
06....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्ह़ात : 244)
07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हि़स्सा, कुल सफ़्ह़ात 312)
08....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्ह़ात : 142)
09....अच्छे माह़ोल की बरकतें (कुल सफ़्ह़ात : 56)
10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्ह़ात : 679)
11....इ़ल्मुल कु़रआन (कुल सफ़्ह़ात : 244)
12....सवानहे़ करबला (कुल सफ़्ह़ात : 192)
13....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़्ह़ात : 112)
14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्ह़ात : 64)
15....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़्ह़ात : 246)
16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्ह़ात : 170)
17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़्ह़ात : 108)
18 ता 24....फ़तावा अह्ले सुन्नत (सात हि़स्से)
25.... ह़क़ व बाति़ल का फ़र्क़ (कुल सफ़्ह़ात : 50)
26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़्ह़ात : 249)
27....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़्ह़ात : 207)
28....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़्ह़ात : 346)
29....अख़्लाकु़स्सालिह़ीन (कुल सफ़्ह़ात : 78)
30....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़्ह़ात : 875)
31....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़्ह़ात : 133)
32....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हि़स्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़्ह़ात : 1196)
33....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़्ह़ात : 49)
34....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़्ह़ात : 470)

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा﴿

﴾शो'बए इस्लाह़ी कुतुब﴿

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

E- mail : hindibook@dawateislamihind.net, Web : www.dawateislamihind.net

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786